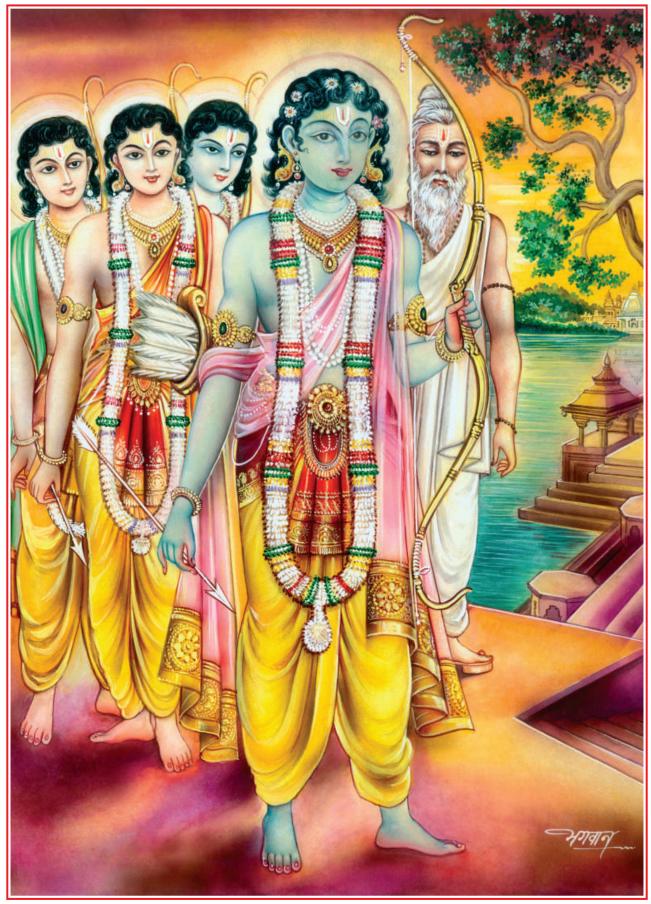
# कल्याणा



गरुड़पर सवार भगवान् विष्णु

मूल्य १० रुपये





सरयूतटपर चारों भाई

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥



गिरिबर होइ पंगु गहन। मूक बाचाल चढ़इ जासु कृपाँ कलि सो दयाल दहन॥ द्रवउ सकल मल

संख्या गोरखपुर, सौर कार्तिक, वि० सं० २०७९, श्रीकृष्ण-सं० ५२४८, अक्टूबर २०२२ ई० पूर्ण संख्या ११५१

#### सरयूतटपर चारों भाई

सरज् बर तीरहिं तीर फिरैं रघुबीर सखा अरु बीर सबै। धनुहीं कर तीर, निषंग कसें किट पीत दुकूल नवीन फबै॥ तुलसी तेहि औसर लावनिता दस चारि नौ तीन इकीस सबै। मित भारित पंगु भई जो निहारि बिचारि फिरी उपमा न पबै॥ श्रीरघुनाथजी उनके सखा और सब भाई पवित्र सरयू नदीके किनारे-किनारे घूमते फिरते हैं। उनके हाथमें छोटे-छोटे धनुष-बाण हैं, कमरमें तरकस कसा हुआ है और शरीरपर नूतन पीताम्बर सुशोभित है। तुलसीदासजी कहते हैं श्रीशारदाकी मित उस समयकी सुन्दरताकी उपमा चौदहों भुवन, नवों खण्ड, तीनों लोक और इक्कीसों ब्रह्माण्डोंमें जब विचारपूर्वक खोजनेपर भी नहीं पा सकी, तब कुण्ठित हो गयी। [कवितावली]

찬 참

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ (संस्करण १,८०,०००) कल्याण, सौर कार्तिक, वि० सं० २०७९, श्रीकृष्ण-सं० ५२४८, अक्टूबर २०२२ ई०, वर्ष ९६ — अंक १० विषय-सूची पृष्ठ-संख्या पृष्ठ-संख्या विषय विषय १- सरयूतटपर चारों भाई ...... ३ १५ - ढलता जीवन (श्रीइन्द्रमलजी राठी) .......२५ १६- सद्योमुक्तिके कुछ प्रेरणास्पद आर्ष दुष्टान्त २- सम्पादकीय ...... ५ (आचार्य श्रीगोविन्दरामजी शर्मा) ...... २७ ३- कल्याण...... ६ ४- गरुडके जन्म और विष्णु-वाहन बननेकी कथा १७- हरियाणाका पिहोवा (पृथूदक) तीर्थ [ तीर्थ-दर्शन] [ आवरणचित्र-परिचय ].....७ (डॉ० श्रीरनबीर सिंहजी, एम०टी०एम०, पी-एच०डी०) .... ३० १८- मुक्तिप्रदाता है त्याग और सेवाका बल ५- हिन्दु-संस्कृतिका स्वरूप (श्रीताराचन्द्रजी आह्जा)......३३ (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) ........... ११ १९- दक्षिणके सन्त श्रीराघवेन्द्र स्वामी [ सन्त-चरित ] ६ - उत्तेजनाके क्षणोंमें [ हमारे आन्तरिक शत्रु ] (पं० श्रीकृष्णदत्तजी भट्ट) ......१२ (श्रीराघवेन्द्रश्रीधरजी राव) ...... ३५ ७- चेतावनी २०- बन्धनमुक्त गाय स्वस्थ और दुधार होती है [ **गो-चिन्तन** ] (श्रीमुल्कराजजी विरमानी)......३६ (नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार) .... १५ ८- जलाशय-निर्माणका फल ......१६ २१ - सुभाषित-त्रिवेणी ...... ३८ २२- व्रतोत्सव-पर्व [ कार्तिकमासके व्रत-पर्व ]...... ३९ ९- गुरुसे उऋण कैसे हों? (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज) ...........१७ २३- व्रतोत्सव-पर्व [ **मार्गशीर्षमासके व्रत-पर्व** ].....४० १०- बन्धन और मक्ति [ साधकोंके प्रति ] २४- श्रीभगवन्नाम-जपकी शुभ सूचना ......४१ (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज)... १८ २५- श्रीभगवन्नाम-जपकी महिमा ......४३ ११- मौनके क्षणोंमें दिव्य 'नाद' (श्रीसुदेशजी गोगिया) ............१९ २६- श्रीभगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना ......४४ १२- दृढ् निश्चयको शक्ति (श्रीकृष्णचन्द्रजी टवाणी) ......२० २७- कृपानुभूति ......४६ २८- पढ़ो, समझो और करो...... ४७ १३- अर्पण (श्रीगौतम सिंहजी पटेल) ......२१ १४- वरदान हैं विफलताएँ (डॉ० शैलजाजी)......२३ २९- मनन करने योग्य ...... ५० चित्र-सूची १- गरुडपर सवार भगवान् विष्णु......(रंगीन) ...... आवरण-पृष्ठ ५- पिहोबा (पृथूदक) तीर्थ ...... (इकरंगा) ...... ३० २- सरयूतटपर चारों भाई...... ( ") ...... मुख-पृष्ठ ६ - श्रीराघवेन्द्र स्वामी ...... ( '' ) ...... ३५ ३ - गरुड्पर सवार भगवान् विष्णु..... (इकरंगा).....७ ७- युधिष्ठिरसे वन जानेकी आज्ञा ४- गरुड-विष्णु-संवाद ...... ( ") ) ...... १० माँगते अर्जुन...... ( '' ) ...... ५० एकवर्षीय शुल्क पंचवर्षीय शल्क जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत्-चित्-आनँद भूमा जय जय॥ ₹ 500 ₹ 2500 जय जय विश्वरूप हरि जय। जय हर अखिलात्मन जय जय॥ सभी अंक रजिस्ट्रीसे सभी अंक रजिस्ट्रीसे विराट जय जगत्पते। गौरीपति जय रमापते ॥ पंचवर्षीय शुल्क

#### एकवर्षीय शुल्क वार्षिक US\$ 50 (₹4,000) (Us Cheque Collection विदेशमें Air Mail ₹ 300

पंचवर्षीय US\$ 250 (₹20,000) Charges 6 \$ Extra ,मासिक अंक साधारण डाकसे,

₹1500

मासिक अंक साधारण डाकसे

संस्थापक - ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका

आदिसम्पादक — नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार सम्पादक-प्रेमप्रकाश लक्कड

केशोराम अग्रवालद्वारा गोबिन्दभवन-कार्यालय के लिये गीताप्रेस, गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित

website: gitapress.org e-mail: kalyan@gitapress.org £ 09235400242 / 244

सदस्यता-शुल्क —व्यवस्थापक — 'कल्याण-कार्यालय', पो० गीताप्रेस — 273005, गोरखपुर को भेजें।

Online सदस्यता हेत् gitapress.org पर Kalyan या Kalyan Subscription option पर click करें। अब 'कल्याण' के मासिक अङ्क gitapress.org अथवा book.gitapress.org पर नि:शुल्क पढें।

संख्या	<b>ξο]</b>						सम्पा	दकीय							ų
<u> </u>	555555	555555	555555	55555	6 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55	F 5F 5F 5F 5F	F 5F 5F 5F 5F	55 55 55 56 75 75 75	555555	F 5F 5F 5F 5F 5F	*****	5 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55 5	£ 55 55 55 55 55 55	F 5F 5F 5F	<u> </u>
हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।	हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण	_	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे ॥	हरे	कृष्ण	हरे	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे ॥
हरे	र राम	हरे	र राम	राम	राम	हरे	हरे।	हरे	र राम	हरे	राम	र राम	राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण		कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥	हरे	कृष्ण	हरे	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे ॥
हरे	र राम	हरे	र राम	राम	राम	हरे	हरे।	हरे	र राम	हरे	राम	र राम	राम	हरे	हरे।
_	कृष्ण	_	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥	हरे	कृष्ण	हरे	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे ॥
हरे	र राम	हरे	र राम	राम	राम	हरे	हरे।	हरे	र राम	हरे	राम	र राम	राम	हरे	हरे।
_	कृष्ण	_	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥	हरे	कृष्ण	हरे	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	<u> </u>	<u> </u>	٠ .				٠ .		<u> </u>	٠ .	राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण	हरे					॥ श्रीह	र्रि:॥					कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे		तेरे	भावैं	कछु	करौ	<i>ð.</i>	ालो	बुरो	संसार।		राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण	हरे		नारायन	तू	बैठि	के	अप	ानौ '	भवन	बुहार॥	1	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे		संत क	व वि नाराय	गण स्व	ामीकी र	यह उ	क्ति प्रत्ये	कि सद	गृहस्थवे	र्ज लिये	राम	हरे	हरे।
_	कृष्ण	हरे	, <del></del>						_	\19	(2, , , ,		कृष्ण कृष्ण	हरे	हरे ॥
हरे हरे	र राम	हरे	आत्म		कि साध			•					र राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण	हरे		प्राय: ग	गृहस्थ र	नाधकों	का अधि	धकांश	। समय	अपने	घर-गृह	रस्थी-	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	व्यापा	रके रोज	ज होनेव	ाले का	मोंमें ळ	र्यतीत ।	होता है	। उन	कार्योंको	पाय∙	राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण	हरे											कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे								-	चकी बा		राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण	हरे	है कि	अपने	कर्तव्य-	कर्मींक	ो पूरा व	हरते स	गमय हग	मारी दूरी	ष्ट कहाँ	टिकी	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	रहती	है। र्या	टे हमने	सारा :	समय द	स्रीमें	लगाया	किस	ामनेवाले	ने जो	राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण	हरे											कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	उस व	भरना च	॥हय थ	ा, किय	। या नह	ा क	या; ता	वह सम्	ग्य अपने	। लिय	राम	हरे	हरे।
	कृष्ण	हरे	नष्ट र	ही हुआ	। इसमें	अपने	अहंका	रकी त्	र् <del>ग</del> िष्टके '	सिवा द	<del>দু</del> ন্ত লা	भ नहीं	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	होनेव	ाला ।									राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण	हरे	61.14		· ·	<u> </u>	د. ے						कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	याद हम । चत्तका शान्ति आर साधनका प्रगात प्यारा हा, ता है राम हरे हरे।												
	कृष्ण	हरे	यथासम्भव अपना पूरा ध्यान भगवत्कृपासे प्राप्त अपने कर्तव्यपर रखना कृष्ण हरे हरे॥												
हरे	राम	हरे	चाहिये और अपने पूरे मनोयोगसे सम्पन्न करके उसे भगवान्को ही <sup>राम</sup> हरे हरे।												
हरे	<sub></sub> कृष्ण	हरे	ਲਾਗ ਦੀ ਦੀ॥												
हरे	राम	हरे	समर्पित कर देना चाहिये। फिर वे जानें। सफलता–असफलताका पूरा राम हरे हरे।												
हरे	कृष्ण	हरे	जिम्म	ा उनक	ज ।								कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे											राम	हरे	हरे।
	कृष्ण	हरे								_	<b>—</b> ңщ	ादक	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे ।	हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण		कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे ॥	हरे	कृष्ण	हरे	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।	हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण		कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥	हरे	कृष्ण	हरे	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।	हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण		कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥	हरे	कृष्ण	हरे	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।	हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।
हरे	कृष्ण		कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥	हरे	कृष्ण	हरे	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।	हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।
हरे	ू कृष्ण		<sub>कृष्ण</sub>	<sub>कृष्ण</sub>	<sub>कृष्ण</sub>	हरे	हरे॥	हरे	कृष्ण	हरे	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	हरे	हरे॥
हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।	हरे	राम	हरे	राम	राम	राम	हरे	हरे।
हरे हरे	<sub>कृष्ण</sub>		ू कृष्ण	ू कृष्ण	कृष्ण कृष्ण	हरे	हरे॥	हरे	कृष्ण कृष्ण	हरे	ू कृष्ण	कृष्ण कृष्ण	कृष्ण कृष्ण	हरे	हरे ॥
` `	٠. '	``	د. ،	ς. '	۶. ۱	۷,	< v II	٧,	۶. ,	۷,	۲. ۱	۶. ،	۲. ۱	۷,	6 / 11

कल्याण याद रखो-पारमार्थिक लाभ ही यथार्थ लाभ है सेवा, सुहृदता-सहानुभूति, मैत्री-करुणा, विवेक-वैराग्यसे

#### और पारमार्थिक हानि ही यथार्थ हानि है। अत: जहाँ पूर्ण है, और जो भगवत्प्राप्तिके लक्ष्यसे भगवद्भजन एवं

लौकिक लाभका मोह त्यागकर पारमार्थिक लाभकी रक्षा निरन्तर भगवत्प्रीतिकारक दैवी गुणोंके अर्जन, रक्षण और करनी चाहिये। इसी प्रकार जहाँ पारमार्थिक लाभमें आचरणमें लगा हुआ ईश्वरकी ओर बढ़ रहा है, उसका उपर्युक्त लौकिक हानि या लौकिक प्राणि-पदार्थोंके लौकिक हानि हो, वहाँ पारमार्थिक लाभके लिये लौकिक अभावसे कोई सम्बन्ध नहीं है, वह निश्चय ही परम-हानिको सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिये।

लौकिक लाभ पारमार्थिक लाभका विरोधी हो, वहाँ

याद रखो — लौकिक हानि-लाभसे आत्माके पतन-उत्थानका, अपने-आपके बन्धन-मोक्षका कोई सम्बन्ध नहीं है; परंतु पारमार्थिक हानिका तो अर्थ ही है

आत्माका पतन, जीवात्माके बन्धनकी और भी दृढ्ता। तथा पारमार्थिक लाभका अर्थ ही है आत्माका उत्थान, जीवात्माकी मुक्तिकी ओर अग्रसरता। याद रखो — एक आदमीके पास बहुत धन है, बड़ी उसकी प्रतिष्ठा है। जमीन-मकान हैं, पुत्र-पौत्र हैं, पद-

अधिकार प्राप्त है—वह सब प्रकारसे सम्पन्न है, लौकिक लाभ उसके चारों ओर व्याप्त है, परंतु इसके बदलेमें उसका मन काम-क्रोधसे, मद-अभिमानसे, तृष्णा-लोभसे, द्वेष-हिंसासे, वैर-विरोधसे, मोह-ममतासे भर गया है और वह ईश्वरको भूलकर केवल विषयभोगोंकी प्राप्ति, रक्षा और भोगके लिये सदैव चिन्तित और निषिद्ध आचरणमें रत है, तो उसका उपर्युक्त लौकिक लाभ उसके किसी

कामका नहीं होगा। मरते ही समस्त प्राणि-पदार्थींसे सम्बन्ध टूट जायगा, सबसे नाता टूट जायगा और उसे बाध्य होकर

नरकानलमें दग्ध होना, नारकीय यातना भोगना और फिर बुरी-बुरी दु:खदायिनी योनियोंमें भटकना पड़ेगा। इस प्रकार उसका जीवात्मा—वह पतनके गर्तमें गिर जायगा। याद रखो-यदि एक मनुष्य संसारकी दृष्टिमें

अभावपूर्ण जीवन बिता रहा है; धन-मान, प्रतिष्ठा-प्रशंसा, पुत्र-परिवार, मित्र-सुहृद्, जमीन-मकान, पद-अधिकार—सभीसे वंचित है, बल्कि शरीरनिर्वाहके लिये

भी जिसके पास साधन नहीं है, परंतु जिसका हृदय

बड़ी कृपासे यह साधनधाम मानव-शरीर मिला है। इसको केवल इसी महान् कार्यकी साधनामें लगाना यथार्थ मानवता है। यदि मानव-शरीरका उपयोग भोग-कामना और भोगोंके भोगमें किया जाय तो वह उसका दुरुपयोग ही है और यदि भोगोंके लिये दुर्गुण, दुर्विचारोंका आश्रय लेकर दूषित कर्म किये जायँ, तब तो मानव-जीवनका महान् दुरुपयोग है; क्योंकि मानव-जीवनमें

किये हुए कर्मींका फल ही जीवको अनन्त लोकों तथा

तबतक तो वह अपने पूर्व मानव-जन्मकृत भोगोंको भोगकर

याद रखो—जीव जबतक मनुष्ययोनिमें नहीं आता,

अनन्त योनियोंमें विविध प्रकारसे भोगना पड़ता है।

भगवत्सेवाको ही जीवनका स्वरूप मानकर नित्य-

कल्याणरूप भगवानुको प्राप्त करेगा। इस प्रकार उसको

पारमार्थिक लाभके लिये ही प्राप्त हुई है। भगवान्की

याद रखो-मनुष्ययोनि भगवत्प्राप्तिरूप महान्

मानव-जीवनकी सच्ची सफलता प्राप्त होगी।

कर्म-ऋणसे क्रमशः मुक्त होता रहता है, पर मानव-शरीर प्राप्त करके यदि भगवत्प्राप्तिके साधनमें नहीं लगता और भोग-प्राप्त्यर्थ सत्कर्म करता है, तो उसे जन्म-मरणके चक्रमें पड़े रहकर सत्कर्मोंके फलस्वरूप विविध लोकों तथा योनियोंमें लौकिक सुख मिलता है, भगवत्प्राप्ति नहीं होती। यह उसकी महान् हानि होती है। मानव-जीवनका सुदुर्लभ अवसर हाथसे चला जाता है। और यदि वह

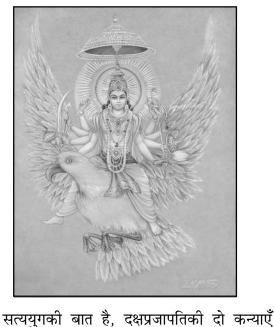
मानव-शरीरमें दुष्कर्म करता है, तब तो उसे विविध प्रकारकी भीषण नरकयन्त्रणा और विविध जघन्य योनियोंमें जन्म लेकर अपार कष्ट-भोग करना पड़ता है, इससे अच्छा था

सानोषितक्षां चार्चित्रक प्रमास के अपने के अ

गरुड़के जन्म और विष्णु-वाहन आवरणचित्र-परिचय-

गरुड़के जन्म और विष्णु-वाहन बननेकी कथा

### बननेकी कथा



संख्या १० ]

थीं - कद्रु और विनता। उनका विवाह कश्यप ऋषिसे हुआ था। एक बार कश्यप अपनी धर्मपत्नियोंसे प्रसन्न होकर बोले, 'तुम्हारी जो इच्छा हो, वर माँग लो।' कद्रूने कहा, 'एक हजार समान तेजस्वी नाग मेरे पुत्र हों।' विनता बोली, 'तेज, शरीर और बल-विक्रममें कद्रुके पुत्रोंसे श्रेष्ठ केवल दो ही पुत्र मुझे प्राप्त हों।'

कश्यपजीने 'एवमस्तु' कहा। दोनों प्रसन्न हो गयीं। सावधानीसे गर्भ-रक्षा करनेकी आज्ञा देकर कश्यपजी वनमें चले गये। समय आनेपर कद्रने एक हजार और विनताने दो अण्डे दिये। दासियोंने प्रसन्न होकर गरम बर्तनोंमें उन्हें

निकल आये, परंतु विनताके दो बच्चे नहीं निकले। विनताने अपने हाथों एक अण्डा फोड़ डाला। उस अण्डेका शिशु आधे शरीरसे तो पुष्ट हो गया था, परंतु उसका नीचेका आधा शरीर अभी कच्चा था। नवजात

शिशुने क्रोधित होकर अपनी माताको शाप दिया, 'माँ!

रख दिया। पाँच सौ वर्ष पूरे होनेपर कद्रुके तो हजार पुत्र

रहेगी, जिससे डाह करती है। यदि मेरी तरह तूने दूसरे अण्डेको भी फोड़कर उसके बालकको अंगहीन या विकृतांग न किया, तो वही तुझे इस शापसे मुक्त करेगा।

यदि तेरी ऐसी इच्छा है कि मेरा दूसरा बालक बलवान् हो, तो धैर्यके साथ पाँच सौ वर्षतक और प्रतीक्षा कर।' इस प्रकार शाप देकर वह बालक आकाशमें उड़ गया और सूर्यका सारिथ बना। प्रात:कालीन लालिमा उसीकी झलक है। उस बालकका नाम अरुण हुआ। एक बार कद्र और विनता दोनों बहनें एक साथ ही घूम रही थीं कि उन्हें पास ही उच्चै:श्रवा नामका घोड़ा दिखायी दिया। यह अश्व-रत्न अमृत-मन्थनके

लक्षणोंसे युक्त था। उसे देखकर वे दोनों आपसमें उसका वर्णन करने लगीं। कद्रूने विनतासे कहा—'बहिन! जल्दीसे बताओ तो यह घोड़ा किस रंगका है?' विनताने कहा—'बहिन! यह अश्वराज श्वेतवर्णका है। तुम इसे किस रंगका समझती हो?' कद्रूने कहा—'अवश्य ही इस घोडे़का

रंग सफेद है, परंतु पूँछ काली है। आओ, हम दोनों इस

विषयमें बाजी लगायें। यदि तुम्हारी बात ठीक हो तो मैं

समय उत्पन्न हुआ था और समस्त अश्वोंमें श्रेष्ठ, बलवान्, विजयी, सुन्दर, अजर, दिव्य एवं सब शुभ

तुम्हारी दासी रहूँ और मेरी बात ठीक हो तो तुम मेरी दासी रहना।' इस प्रकार दोनों बहनें आपसमें बाजी लगाकर और दूसरे दिन घोड़ा देखनेका निश्चय करके घर चली गयीं। कद्रुने विनताको धोखा देनेके विचारसे अपने हजार पुत्रोंको यह आज्ञा दी कि 'पुत्रो! तुमलोग शीघ्र ही काले बाल बनकर उच्चै:श्रवाकी पूँछ ढक लो,

जिससे मुझे दासी न बनना पड़े।' जिन सर्पोंने उसकी आज्ञा न मानी, उन्हें उसने शाप दिया कि 'जाओ, तुम लोगोंको अग्नि जनमेजयके सर्प-यज्ञमें जलाकर भस्म

कर देगा।' यह दैवसंयोगकी बात है कि कद्रने अपने तुने लोभवश मेरे अधूरे शरीरको ही निकाल लिया है। पुत्रोंको ही ऐसा शाप दे दिया। यह बात सुनकर ब्रह्माजी इसलिये तू अपनी उसी सौतकी पाँच सौ वर्षोंतक दासी और समस्त देवताओंने उसका अनुमोदन किया। उन

भाग ९६ दिनों पराक्रमी और विषैले सर्प बहुत प्रबल हो गये थे। अग्निने कहा, 'देवगण! यह मेरी मूर्ति नहीं है। ये विनता-वे दूसरोंको बड़ी पीड़ा पहुँचाते थे। प्रजाके हितकी नन्दन परमतेजस्वी पक्षिराज गरुड़ हैं। इन्हींको देखकर दृष्टिसे यह उचित ही हुआ। 'जो लोग दूसरे जीवोंका आपलोगोंको भ्रम हुआ है। ये नागोंके नाशक, देवताओंके अहित करते हैं, उन्हें विधाताकी ओरसे ही प्राणान्त दण्ड हितैषी और असुरोंके शत्रु हैं। आप इनसे भयभीत न हों। मिल जाता है।' ऐसा कहकर ब्रह्माजीने भी कद्रकी मेरे साथ चलकर इनसे मिल लें।' तब अग्निके साथ प्रशंसा की। जाकर देवताओं और ऋषियोंने गरुड़की स्तुति की। कद्र और विनताने आपसमें दासी बननेकी बाजी देवताओं और ऋषियोंकी स्तुति सुनकर गरुड़जीने लगाकर बड़े रोष और आवेशमें वह रात बितायी। दूसरे कहा—'मेरे भयंकर शरीरको देखकर जो लोग घबरा दिन प्रात:काल होते ही निकटसे घोड़ेको देखनेके लिये गये थे, वे अब भयभीत न हों। मैं अपने शरीरको छोटा दोनों चल पड़ीं। सर्पोंने परस्पर विचार करके यह निश्चय और तेजको कम कर लेता हूँ।' सब लोग प्रसन्नतापूर्वक किया कि 'हमें माताकी आज्ञाका पालन करना चाहिये। लौट गये। यदि उसका मनोरथ पूरा न होगा तो वह प्रेमभाव एक दिन विनीत विनता अपने पुत्रके पास बैठी हुई थी, कद्रूने उसे बुलाकर कहा—'मुझे समुद्रके भीतर छोड़कर रोषपूर्वक हमें जला देगी। यदि इच्छा पूरी हो जायगी तो प्रसन्न होकर हमें अपने शापसे मुक्त कर नागोंका एक दर्शनीय स्थान देखना है। वहाँ तू मुझे ले देगी। इसलिये चलो, हमलोग घोड़ेकी पूँछको काली कर चल।' अब विनताने कद्रुको और गरुड्जीने माताकी दें।' ऐसा निश्चय करके वे उच्चै:श्रवाकी पूँछसे बाल आज्ञासे सर्पोंको अपने कन्धोंपर बैठा लिया और उनके बनकर लिपट गये, जिससे वह काली जान पड़ने लगी। अभीष्ट स्थानको चले। गरुड्जी बहुत ऊपर सूर्यके निकटसे चल रहे थे। तीक्ष्ण गर्मीके कारण सर्प बेहोश इधर कद्र और विनता बाजी लगाकर आकाशमार्गसे समुद्रको देखते-देखते दूसरे पार जाने लगीं। दोनों ही हो गये। कद्रने इन्द्रकी प्रार्थना करके सारे आकाशको घोड़ेके पास पहुँचकर नीचे उतर पड़ीं। उन्होंने देखा कि मेघ-मण्डलसे आच्छादित करा दिया, वर्षा हुई, सब सर्प घोड़ेका सारा शरीर तो चन्द्रमाकी किरणोंके समान सुखी हो गये। उन्होंने अभीष्ट स्थानपर पहुँचकर उज्ज्वल है, परंतु पूँछ काली है। यह देखकर विनता लवणसागर, मनोहर वन आदि देखा, यथेच्छ विहार उदास हो गयी, कद्रुने उसे अपनी दासी बना लिया। किया और खूब खेल-कूदकर गरुड़से कहा—'तुमने तो आकाशमें उड़ते समय बहुत-से सुन्दर-सुन्दर द्वीप देखे समय पूरा होनेपर महातेजस्वी गरुड माताकी होंगे। अब हमें और किसी द्वीपमें ले चलो।' सहायताके बिना ही अण्डा फोड़कर उससे बाहर निकल आये। उनके तेजसे दिशाएँ प्रकाशित हो गयीं। उनकी गरुड कुछ चिन्तामें पड गये। उन्होंने सोच-विचारकर अपनी मातासे पूछा कि 'माँ! मुझे सर्पोंकी शक्ति, गति, दीप्ति और वृद्धि विलक्षण थी। नेत्र बिजलीके समान पीले और शरीर अग्निके समान तेजस्वी था। वे आज्ञाका पालन क्यों करना चाहिये?' विनताने कहा— जन्मते ही आकाशमें बहुत ऊपर उड़ गये। उस समय वे 'बेटा! इन सर्पोंके छलसे मैं बाजी हार गयी और ऐसे जान पडते थे, मानो दूसरे बडवानल ही हों। दुर्भाग्यवश अपनी सौत कद्रुकी दासी हो गयी।' अपनी देवताओंने समझा अग्निदेव ही इस रूपमें बढ़ रहे हैं। माताके दु:खसे गरुड़ भी बड़े दुखी हुए। उन्होंने सर्पोंसे कहा—'सर्पगण! ठीक-ठीक बताओ, मैं तुम्हें कौन-सी उन्होंने विश्वरूप अग्निकी शरणमें जाकर प्रणामपूर्वक कहा, 'अग्निदेव! आप अपना शरीर मत बढाइये। क्या वस्तु ला दूँ, किस बातका पता लगा दूँ अथवा

तुमलोगोंका कौन-सा उपकार कर दूँ, जिससे मैं और

मेरी माता दासत्वसे मुक्त हो जायँ?' सर्पींने कहा—

आप हमें भस्म कर डालना चाहते हैं? देखिये, देखिये,

आपकी यह तेजोमयी मुर्ति हमारी ओर बढती आ रही है।'

संख्या १०] गरुड़के जन्म और विष्ण्	गु-वाहन बननेकी कथा ९
\$	*********************************
'गरुड़! यदि तुम अपने पराक्रमसे हमारे लिये अमृत ला	चोंचोंकी चोटसे देवताओंकी चमड़ी उधड़ गयी, शरीर
दो, तो हम तुम्हें और तुम्हारी माताको दासत्वसे मुक्त कर	खूनसे लथपथ हो गया। वे घबराकर स्वयं ही तितर-
देंगे।' सर्पोंकी बात सुनकर गरुड़ने अपनी माता विनतासे	बितर हो गये। इसके बाद गरुड़ आगे बढ़े। उन्होंने देखा
कहा, 'माता! मैं अमृतके लिये जा रहा हूँ।'	कि अमृतके चारों ओर आगकी लाल-लाल लपटें उठ
ऐसा कहकर गरुड़ ऊपरकी ओर उड़े। उस समय	रही हैं। अब गरुड़ने अपने शरीरमें आठ हजार एक सौ
देवताओंने देखा कि उनके यहाँ भयंकर उत्पात हो रहे	मुँह बनाये तथा बहुत-सी नदियोंका जल पीकर उसे
हैं। देवराज इन्द्रने बृहस्पतिजीके पास जाकर पूछा—	धधकती हुई आगपर उड़ेल दिया। अग्नि शान्त होनेपर
'भगवन्! यकायक बहुत-से उत्पात क्यों होने लगे हैं?	छोटा-सा शरीर धारण करके वे और आगे बढ़े।
कोई ऐसा शत्रु तो नहीं दिखायी पड़ता, जो मुझे युद्धमें	सूर्यकी किरणोंके समान उज्ज्वल और सुनहला
जीत सके।' बृहस्पतिजीने कहा, 'इन्द्र! तुम्हारे अपराध	शरीर धारण करके गरुड़ने बड़े वेगसे अमृतके स्थानमें
और प्रमादसे तथा महात्मा वालखिल्य ऋषियोंके तपोबलसे	प्रवेश किया। उन्होंने वहाँ देखा कि अमृतके पास एक
विनतानन्दन गरुड़ अमृत लेनेके लिये यहाँ आ रहा है।	लोहेका चक्र निरन्तर घूम रहा है। उसकी धार तीखी
वह आकाशमें स्वच्छन्द विचरता तथा इच्छानुसार रूप	है, उसमें सहस्रों अस्त्र लगे हुए हैं। वह भयंकर चक्र
धारण कर लेता है। वह अपनी शक्तिसे असाध्य कार्यको	सूर्य और अग्निके समान जान पड़ता है। उसका काम
भी साध सकता है। अवश्य ही उसमें अमृत हर ले	ही था अमृतकी रक्षा। गरुड़जी चक्रके भीतर घुसनेका
जानेकी शक्ति है।' बृहस्पतिजीकी बात सुनकर इन्द्रने	मार्ग देखते रहे। एक क्षणमें ही उन्होंने अपने शरीरको
अमृतके रक्षकोंको सावधान करके कहा कि 'देखो, परम	संकुचित किया और चक्रके आरोंके बीच होकर भीतर
पराक्रमी पक्षिराज गरुड़ यहाँसे अमृत ले जानेके लिये आ	घुस गये। अब उन्होंने देखा कि अमृतकी रक्षाके लिये
रहा है। सचेत रहो। यह बलपूर्वक अमृत न ले जाने	दो भयंकर सर्प नियुक्त हैं। उनको लपलपाती जीभें,
पाये।' सभी देवता और स्वयं इन्द्र भी अमृतको घेरकर	चमकती आँखें और अग्निकी-सी शरीर-कान्ति थी।
उसकी रक्षाके लिये डट गये।	उनकी दृष्टिसे ही विषका संचार होता था। गरुड़जीने
गरुड़ने वहाँ पहुँचते ही पंखोंकी हवासे इतनी धूल	धूल झोंककर उनकी आँखें बन्द कर दीं। चोंचों और
उड़ायी कि देवता अन्धे–से हो गये। वे धूलसे ढककर	पंजोंसे मार-मारकर उन्हें कुचल दिया, चक्रको तोड़
मूढ़–से बन गये। सभी रक्षक आँखें खराब होनेसे डर	डाला और बड़े वेगसे अमृत-पात्र लेकर वहाँसे उड़
गये। वे एक क्षणतक गरुड़को देख भी नहीं सके। सारा	चले। उन्होंने स्वयं अमृत नहीं पीया। बस, आकाशमें
स्वर्ग क्षुब्ध हो गया। चोंच और डैनोंकी चोटसे	उड़कर सर्पोंके पास चल दिये।
देवताओंके शरीर जर्जरित हो गये। इन्द्रने वायुको आज्ञा	आकाशमें उन्हें विष्णुभगवान्के दर्शन हुए। गरुड़के
दी कि 'तुम यह धूलका परदा फाड़ दो। यह तुम्हारा	मनमें अमृत पीनेका लोभ नहीं है, यह जानकर अविनाशी
कर्तव्य है।' वायुने वैसा ही किया। चारों ओर उजाला	भगवान् उनपर बहुत प्रसन्न हुए और बोले, 'गरुड़! मैं
हो गया, देवता उनपर प्रहार करने लगे। गरुड़ने उड़ते-	तुम्हें वर देना चाहता हूँ। मनचाही वस्तु माँग लो।' गरुड़ने
उड़ते ही गरजकर उनके प्रहार सह लिये और आकाशमें	कहा, 'भगवन्! एक तो आप मुझे अपनी ध्वजामें रखिये,
उनसे भी ऊँचे पहुँच गये। देवताओंके शस्त्रास्त्रोंके	दूसरे मैं अमृत पीये बिना ही अजर-अमर हो जाऊँ।'
प्रहारसे गरुड़ तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने	भगवान्ने कहा 'तथास्तु!' गरुड़ने कहा, 'मैं भी आपको
उनके आक्रमणको विफल कर दिया। गरुड़के पंखों और	वर देना चाहता हूँ। मुझसे कुछ माँग लीजिये।' भगवान्ने

कहा, 'तुम मेरे वाहन बन जाओ।' गरुड़ने 'ऐसा ही पंखपर उठाकर मैं बिना परिश्रम उड़ सकता हूँ।' इन्द्रने कहा, 'आपकी बात सोलहों आने सत्य है। आप अब मेरी घनिष्ठ मित्रता स्वीकार कीजिये। यदि आपको अमृतकी आवश्यकता न हो, तो मुझे दे दीजिये। आप



इस प्रकार गरुड़ भगवान् विष्णुके वाहन बन गये। अबतक इन्द्रकी आँखें खुल चुकी थीं। उन्होंने

गरुड़को अमृत ले जाते देख क्रोधसे भरकर वज्र चलाया। गरुड़ने वज्राहत होकर भी हँसते हुए कोमल

वाणीसे कहा—'इन्द्र! जिनकी हड्डीसे यह वज्र बना है, उनके सम्मानके लिये मैं अपना एक पंख छोड़ देता हूँ। तुम उसका भी अन्त नहीं पा सकोगे। वज्राघातसे मुझे

गिरा दिया। जिसे देखकर लोगोंको बड़ा आनन्द हुआ। सबने कहा, 'जिसका यह पंख है, उस पक्षीका नाम

तिनक भी पीड़ा नहीं हुई है।' गरुड़ने अपना एक पंख

'सुपर्ण' हो।' इन्द्रने चिकत होकर मन-ही-मन कहा, 'धन्य है यह पराक्रमी पक्षी!' उन्होंने कहा 'पिक्षराज! मैं जानना चाहता हूँ कि तुममें कितना बल है। साथ ही

तुम्हारी मित्रता भी चाहता हूँ।' गरुड़ने कहा, 'देवराज! आपके इच्छानुसार हमारी मित्रता रहे। बलके सम्बन्धमें क्या बताऊँ? अपने मुँहसे अपने गुणोंका बखान, बलकी

प्रशंसा सत्पुरुषोंकी दृष्टिमें अच्छी नहीं है। आप मुझे मित्र मानकर पूछ रहे हैं, तो मैं मित्रके समान ही बतलाता

मित्र मानकर पूछ रहे हैं, तो मैं मित्रके समान ही बतलाता हूँ कि पर्वत, वन, समुद्र और जलसहित सारी पृथ्वीको माँगा—'ये बलवान् सर्प ही मेरे भोजनकी सामग्री हों।' देवराज इन्द्रने कहा, 'तथास्तु।' इन्द्रसे विदा होकर गरुड़ सर्पोंके स्थानपर आये। वहीं उनकी माता भी थीं। उन्होंने प्रसन्नता प्रकट करते

यह ले जाकर जिन्हें देंगे, वे हमें बहुत दु:ख देंगे।' गरुड़जीने कहा, 'देवराज! अमृतको ले जानेका एक कारण है। मैं इसे किसीको पिलाना नहीं चाहता हूँ। मैं इसे जहाँ रखूँ, वहाँसे आप उठा लाइये।' इन्द्रने सन्तुष्ट होकर कहा, 'गरुड़! मुझसे मुँहमाँगा वर ले लो।' गरुड़को सपींकी दुष्टता और उनके छलके कारण होनेवाले माताके दु:खका स्मरण हो आया। उन्होंने वर

िभाग ९६

हुए सर्पोंसे कहा, 'यह लो, मैं अमृत ले आया। परंतु पीनेमें जल्दी मत करो। मैं इसे कुशोंपर रख देता हूँ। स्नान करके पवित्र हो लो। फिर इसे पीना। अब तुमलोगोंके कथनानुसार मेरी माता दासीपनसे छूट गयी,

क्योंकि मैंने तुम्हारी बात पूरी कर दी है।' सर्पोंने स्वीकार

विनताको दासी बनानेके लिये जो कपट किया था.

उसीका यह फल है। फिर यह समझकर कि यहाँ अमृत

कर लिया। जब सर्पगण प्रसन्नतासे भरकर स्नान करनेके लिये गये, तब इन्द्र अमृत-कलश उठाकर स्वर्गमें ले आये। मंगल-कृत्योंसे लौटकर सर्पोंने देखा तो अमृत उस स्थानपर नहीं था। उन्होंने समझ लिया कि हमने

रखा गया था, इसिलये सम्भव है इसमें उसका कुछ अंश लगा हो, सर्पोंने कुशोंको चाटना शुरू किया। ऐसा करते ही उनकी जीभके दो-दो टुकड़े हो गये। अमृतका स्पर्श होनेसे कुश पवित्र माना जाने लगा। अब गरुड कृतकृत्य

होकर आनन्दसे अपनी माताके साथ रहने लगे। वे

हूँ कि पर्वत, वन, समुद्र और जलसहित सारी पृथ्वीको पक्षिराज हुए, उनकी कीर्ति चारों ओर फैल गयी और तथां क्रियोंड के मुन्दे के समुद्र और जलसहित सारी पृथ्वीको पक्षिराज हुए, उनकी कीर्ति चारों ओर फैल गयी और

हिन्दू-संस्कृतिका स्वरूप संख्या १० ] हिन्दू-संस्कृतिका स्वरूप (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) 🕸 हिन्दू-संस्कृतिके स्वरूपको बतलानेके लिये 📽 मृत व्यक्तिके लिये जो कुछ दिया जाता है, वह रामायण एक महान् आदर्श ग्रन्थ है। उसमें हिन्दू-सब उसे प्राप्त होता है, किंतु जो मृत व्यक्ति मुक्त हो गया संस्कृतिका स्वरूप स्थल-स्थलपर भरा है। वाल्मीकीय है, उसके प्रति दिया हुआ कर्ताके संचित कर्मरूप कोषमें और अध्यात्मरामायणके समस्त श्लोक तथा तुलसीकृत जमा होता है। ये सब संस्कार हिन्दुओंके रग-रगमें भरे रामचरितमानसके सारे दोहे, चौपाई, छन्द आदि सभी हुए हैं। इन्हींको लेकर प्राय: सभी हिन्दू सदासे श्राद्ध-इसी शाश्वत धर्मरूप हिन्दू-संस्कृतिका दिग्दर्शन करा रहे तर्पण आदि करते आ रहे हैं। यह है हिन्दू-संस्कृति। हैं। उनमें भी श्रीराम और सीताके आदर्श चरित्र एवं 🕏 हिन्दू-संस्कृतिमें ईश्वरोपासना सदासे ही प्रधान सभी भाइयोंका परस्पर भ्रातृप्रेम हिन्दू-संस्कृतिके प्रधान रूपसे चली आ रही है। यों ईश्वरको तो अपने-अपने निदर्शक हैं। दृष्टिकोणके अनुसार ईसाई और मुसलमान आदि सभी 🕯 हिमालयका 'हि' और सिन्धु (समुद्र)-का मानते हैं। कोई ईश्वरके साकाररूपकी, कोई निराकारकी 'न्धु' लेकर 'हिन्धु' शब्द बना है। उसीका अपभ्रंश और कोई दोनोंकी उपासना करते हैं। यह भेद उचित 'हिन्दू' शब्द है। हिमालयसे समुद्रतकके स्थानका नाम ही है। हिन्दुओंके हृदयमें तो ईश्वरोपासनाके भाव सदासे 'हिन्दुस्थान' है और उसमें बसनेवाली जातिका नाम अंकित हैं। थोडी-सी विपत्ति पडनेपर भी वे संकट-निवारणार्थ ईश्वरको ही पुकारते हैं और उन्हींका आश्रय हिन्दू है। इस जातिका चाल-चलन, रहन-सहन, आहार-व्यवहार आदि जो स्वाभाविक कल्याणमय आचरण है. ग्रहण करते हैं। हिन्दुओंके हृदयमें स्वाभाविक ही ईश्वरमें आस्तिक भाव—श्रद्धा-प्रेम है। यह हिन्दुओंकी उसका नाम है 'हिन्दू-संस्कृति'। 比 हिन्दू-संस्कृतिमें ईश्वरवाद एक प्रधान स्थान संस्कृति है। रखता है। यह सारा जगत् जिससे उत्पन्न हुआ है, वही 🕸 प्राचीन धर्मग्रन्थोंको देखनेपर मालूम होता है सबका अभिन्न निमित्तोपादान कारण एकमात्र परमात्मा कि माता-पिता आदि गुरुजनोंका आज्ञापालन, वन्दन है। इससे यही निर्णय हुआ कि इसका उत्पादक, और सेवा-पूजा करना—यह भी हिन्दू-संस्कृतिका एक निर्माता, संचालक, संयोजक, रक्षक—जो कोई है, वही प्रधान अंग है। 🕏 श्रीरामके राज्यमें प्रायः सभी मनुष्य परस्पर प्रेम चेतन परमात्मा है। यह हिन्दुओंकी अनुभवयुक्त मान्यता सदासे चली आ रही है-इसीको 'हिन्दू-संस्कृति' करनेवाले तथा नीति, धर्म-सदाचार और ईश्वरकी कहते हैं। भक्तिमें तत्पर रहकर अपने-अपने धर्मका पालन करनेवाले 🕸 भगवान् श्रीराम, श्रीकृष्ण साक्षात् पूर्णब्रह्म थे। प्राय: सभी उदार-चित्त और परोपकारी थे। वहाँके परमात्मा हैं, यह विश्वास हिन्दू जातियोंमें प्राय: सदासे प्राय: सभी पुरुष एकनारीव्रती और प्राय: सभी स्त्रियाँ ही चला आ रहा है। यह युक्तियुक्त और उचित ही है। पातिव्रत-धर्मका पालन करनेवाली थीं। भगवान् श्रीरामका निर्गुण-निराकाररूप सच्चिदानन्दघन परमात्मा ही सगुण-इतना प्रभाव था कि उनके राज्यमें मनुष्योंकी तो बात ही साकाररूपमें प्रकट होते हैं। गीता, भागवत आदि ग्रन्थोंमें क्या, पश्-पक्षी भी परस्पर वैर भुलाकर निर्भय विचरा भी अवतारवादका उल्लेख स्थान-स्थानपर मिलता है। करते थे। उनके चरित्र बडे ही प्रभावोत्पादक और अलौकिक थे। यह हमारे आर्यपुरुषोंका स्वाभाविक ही इसके संस्कार प्राय: हिन्दुओंके हृदयमें स्वाभाविक ही अंकित हैं। यह है हिन्दू-संस्कृति। व्यवहार था। इसी आदर्शको हिन्दू-संस्कृति कहते हैं। हमारे आन्तरिक शत्रु—

उत्तेजनाके क्षणों में

[क्रोध—कारण और निवारण]
(पं॰ श्रीकृष्णदत्तजी भट्ट)

अभी उस दिन एक एम॰ए॰ पास सज्जन बहुत ही उस पोटलीको खींच लाया।
मामूली-सी बातपर अपने अधीनस्थ एक कर्मचारीपर बाल-कौतूहल! वे रंग-बिरंगे कागजोंके टुकड़े बुरी तरह बिगड़ पड़े। तावमें आकर उन्होंने हाथ उसको बहुत भले लगे! सामने आग जल रही थी।
पकड़कर उसे बाहर कर दिया। नौजवान कर्मचारीका 'इन्हें आगमें जलानेसे कैसा मजा आयेगा'—

बुरी तरह बिगड़ पड़े। तावमें आकर उन्होंने हाथ पकड़कर उसे बाहर कर दिया। नौजवान कर्मचारीका गरम खून उबला तो जरूर, परंतु वह ऐन मौकेपर सँभल गया। पी गया वह गुस्सेको। याद आ गया उसे कि उत्तेजनाके ऐसे क्षणोंमें शान्त रह जानेमें ही तो बहादुरी है। फिर भी उसके जीमें मलाल था। मुझसे जब उसकी बात हुई तो वह सहजभावसे पूछ बैठा—'हम तो अपढ़ हैं, पर भला बताइये तो कि बी०ए०, एम०ए० पास करके भी आदमी ऐसा क्यों करता है?' मैंने कहा—भैया,

'वह चितविन कछु और है जेहि बस होत सुजान!' वह पढ़ाई ही दूसरी होती है। स्कूल-कालेजोंमें उसकी शिक्षा नहीं दी जाती! मनोविकारोंसे विचलित न होना साधारण बात नहीं है। जीवनकी पाठशालामें बड़ी साधनाके बाद, कठिन और सतत अभ्यासके बाद कहीं जाकर मनुष्य इस परीक्षामें पास हो पाता है। सबके बसकी बात नहीं है यह। इसके लिये यह जरूरी नहीं कि मनुष्य डिग्री-याफ्ता हो। गँवार-से-गँवार, अपढ़-से-अपढ़ व्यक्ति इस पढ़ाईमें पास हो सकता है और

बसकी बात नहीं है यह। इसके लिये यह जरूरी नहीं कि मनुष्य डिग्री-याफ्ता हो। गँवार-से-गँवार, अपढ़-से-अपढ़ व्यक्ति इस पढ़ाईमें पास हो सकता है और विद्वान्-से-विद्वान्, एम०ए०, डी०लिट्०, डी०फिल्०, महामहोपाध्याय भी इसमें फेल हो सकता है। तभी न कहा गया है— निहंगो अजदहा ओ-शेरे-नर मारा तो क्या मारा! बडे मुज़ीको मारा, नफ्से-अम्माराको गर मारा!!

दिया। उसका छोटा बच्चा देखता रहा और मौका पाते

न मारा आपको जो खाक हो अक़सीर बन जाता!

बालककी कल्पना जाग्रत् हुई और उसने एक-एक कागज आगमें फेंकना शुरू ही तो कर दिया। बाहरसे पिता लौटा तो देखा, बेटा उसके पसीनेकी सारी कमाई वस्तुत: स्वाहा कर रहा है।

िभाग ९६

क्रोध अपनी चरम सीमापर जा पहुँचा।
उसने बच्चेको ही उठाकर आगमें झोंक दिया!

×

४

भेजपर एक बहुमूल्य पाण्डुलिपि रखी थी। घरके
पालतू कुत्तेने उछल-कूदमें उसपर जलती हुई बत्ती गिरा

स्वाहा हो गयी!

कुत्तेका मालिक था विश्वका एक प्रख्यात महापुरुष। जानते हैं उसने कुत्तेको क्या दण्ड दिया? वह सिर्फ इतना बोला—'टॉमी! तुम नहीं जानते कि आज तुमने मेरा कितना भारी नुकसान कर दिया।' × × × एक सिक्केके दो पहलू! परंतु एक-दूसरेसे कितने भिन्न! नुकसान दोनोंको हुआ। क्षति दोनोंकी हुई, परंतु

एक क्रोधके हाथका खिलौना बन गया, दूसरेने क्रोधको

दी। आगमें और चीजोंके साथ वह पाण्डुलिपि भी

क्रोधशान्तिका एक उपाय है—गालीके बदले गाली न देना! सभी जानते हैं कि गालीसे गाली बढ़ती है।

इसलिये गालीका सबसे सटीक जवाब चुप रहना है।

संख्या १०] उत्तेजनावे	के क्षणोंमें १३
\$	************************************
आवत गाली एक है, उलटत होय अनेक।	फितरतको नापसंद है सख्ती ज़बानमें,
कह 'कबीर' नहिं उलटिये, वही एककी एक॥	पैदा हुई न इसलिये हड्डी ज़बानमें!
उत्तेजनाके क्षणोंमें बड़ी जल्दी आग लगती है।	फिर भी हम कड़ी बात कहें, कड़वी बात बोलें—
क्रोधाग्निमें गालियोंकी आहुति पड़ी नहीं कि मामला	यह ठीक नहीं।
संगीन होने लगता है। गाली ठहरी विषकी बेल। बातका	× × ×
बतंगड़ होते देर नहीं लगती। तू-तड़ाकसे गाली-गलौज,	उत्तेजनाके क्षणोंमें हम इतना-सा ही सावधान रहें,
गाली-गलौजसे मारपीट, खून-खराबा। एक ही चीजके	बस, काम बना रखा है।
ये भिन्न-भिन्न पहलू हैं।	उत्तेजनाके क्षणोंमें मौन हो जाना भी क्रोध रोकनेका
× × ×	उत्तम उपाय है।
कहते हैं कि एक बार भगवान् बुद्धने भिक्षा लेनेके	शान्त रहिये, कुछ मत बोलिये। कोई कुछ भी
लिये किसीका दरवाजा खटखटाया। धन-सम्पत्तिसे	बकता रहे, आप अपनेपर उसका कुछ भी असर मत
अत्यधिक आसक्ति रखनेवाले व्यक्ति मुफ्तमें किसीको	पड़ने दीजिये।
एक छदाम भी नहीं देना चाहते। कोई भिक्षुक उनके	स्वामी कृष्णानन्दने उसकी अच्छी तरकीब बतायी
द्वारपर आता है तो नम्रतासे उसे हाथ जोड़ना तो दूर रहा,	है—मौनके आरम्भिक पाठके तौरपर आप अपनेको आज्ञा
वे गालियोंसे ही उसका स्वागत करते हैं। भगवान्	दें, यदि आज मुझे किसीने नाराज किया, मैं क्रुद्ध भी हो
बुद्धका पाला भी ऐसे ही व्यक्तिसे पड़ गया।	गया और मुझमें बदलेकी इच्छा जाग्रत् हो गयी, तो भी मैं
उन्होंने उससे पूछा—'अच्छा, यह तो बताइये कि	शान्तिसे काम लूँगा। अपने मुखपर किसी तरहके क्रोधके
आप किसीको कोई चीज दें और वह उसे स्वीकार	चिह्न प्रकट नहीं होने दूँगा। मुसकराऊँगा और चुप रहूँगा।
न करे तो क्या होगा?'	× × ×
वह बोला 'तो मेरी चीज लौटकर मेरे ही पास आ	कहते हैं, सुकरातकी पत्नी अपने पतिपर व्यंग्यबाण
जायगी।'	कसनेकी अभ्यस्त थी। वे हँसकर, शान्त रहकर उसकी
बुद्ध बोले—'आप मुझे जो गालियोंका दान दे रहे	बातोंको सुनी-अनसुनी कर देते।
हैं, उसे मैं स्वीकार नहीं करता!'	एक दिन बाहरसे उनके लौटनेपर उसने वाग्बाणोंकी
शर्मसे फट गया बेचारा!	वर्षा आरम्भ कर दी, पर वे चुपचाप रोजकी तरह सुनते रहे।
× × ×	पत्नीके क्रोधका उफान फिर भी शान्त न हुआ।
कोई गाली देता है, मैं उसे स्वीकार ही नहीं	वह नालीसे एक घड़ा कीचड़ भर लायी और उसे उँड़ेल
करता। चलो छुट्टी! गाली कुछ चिपट तो जाती नहीं!	दिया सुकरातके सिरपर। मस्त दार्शनिक हँसकर बोला—
उसकी उपेक्षा ही वांछनीय है। बात तो तब बढ़ती है	चलो, अच्छा हुआ। गरजनेके बाद बरसना लाजिमी था!
जब मैं गालीको स्वीकारकर गाली देनेवालेको खुद भी	आपमें यदि इतनी क्षमता नहीं है, क्रोधका प्रसंग
गाली देने लगता हूँ! मैं समझ लूँ कि गाली देकर वह	उपस्थित होनेपर आप उत्तेजित हो उठते हैं, दूसरेको
अपनी ज़बान खराब कर रहा है तो मैं भी क्यों अपनी	क्रुद्ध होते देख आप शान्त नहीं रह पाते, तो सबसे
ज़बान खराब करूँ!	अच्छी तरकीब यह है कि आप मैदान छोड़कर कहीं
गुफ्तगूए ना मुलायम नेस्त रस्मे आकिला!	भाग जाइये। एकान्तमें चले जाइये। ऐसे व्यक्तिके पास
बुद्धिमानोंका यह तरीका नहीं है कि वे कड़ी बात बोलें।	चले जाइये, जिसका आप आदर करते हैं।
प्रभु तो इतने दयालु हैं कि उन्होंने ज़बानमें हड्डीतक	यों मैदानसे भागना बुरी बात है, कापुरुषोंका कार्य
नहीं रखी।	है, परंतु क्रोधके मैदानसे भागनेमें कोई बुरी बात नहीं है।

भाग ९६ यहाँ तो मैदान छोडकर भागनेसे आप मैदान जीतते हैं! लगे हैं, तो चुपकेसे उठकर जलके पास चले जाओ। आचमन क्रोधपर विजय प्राप्त करनेमें आपको सुभीता होता है। करो, हाथ-मुँह धोओ या स्नान ही कर लो, अवश्य शान्ति उत्तेजनाके क्षणोंमें युद्धस्थलसे हट जाना, अन्यत्र आ जायगी; हरि-ध्यानरूपी क्षीरसागरमें डुबकी लगाओ, चले जाना, मौका बरा देना, क्रोधको रोकनेका उत्तम उपाय क्रोधके धुएँ और भापको ज्ञान-अग्निमें बदल दो।' है। अहंकारपर ठेस लगनेसे, इच्छाके विरुद्ध कुछ होनेसे, स्वार्थमें बाधा पड़नेसे हमारा क्रोध फुफकार उठता है। क्रोध रोकनेकी यह भी एक तरकीब है कि सौसे एकतककी उलटी गिनती गिनना शुरू कर दीजिये। सौ, सामने रहनेसे क्रोधाग्निमें घी पड़ता है, गालियोंसे बारूद भडकती है, हमारी भी जबान बे-लगाम दौडनेके निन्यानबे, अट्टानबे, सत्तानबे, छानबे, पंचानबे, चौरानबेसे लिये खुजला उठती है। ऐसे मौकेपर मौकेसे टल जाना होते-होते एकतक आ जायँ। फिर उसी प्रकार सौसे श्रेयस्कर है। एकतक लौटें। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी! एक राजा क्रोध शान्त करनेके लिये एक कठिन भाषाकी वर्णमालाके अक्षर याद करने लगता था। राम-नाममें जो जादू है, वह किसीसे छिपा नहीं तात्पर्य यह कि मनकी दिशाको मोड दें। क्रोधकी है। उत्तेजनाके क्षणोंमें दस-पन्द्रह मिनटतक 'राम-बात छोडकर किसी अन्य ही काममें उसे लगा दें। प्रसंग राम'की रट लगा दीजिये, आप देखेंगे, आपका क्रोध बदल देनेसे क्रोधका उफान शान्त हो जाता है। शान्त हो गया है। आपका गुस्सा काफुर हो गया है। 'राम-राम' कहिये, 'हरे कृष्ण' कहिये, 'नम: क्रोधका विरोधी भाव है क्षमा। आपसे यदि शिवाय' कहिये, 'ॐ' कहिये, जिस किसी नाममें रुचि किसीके प्रति कोई अपराध बन पडा है, तो क्षमा माँग हो, भगवान्का जो नाम प्रिय हो, उसमें अपनेको डुबा लेना आपका कर्तव्य है। दीजिये, क्रोध जाता रहेगा। दूसरेने यदि आपके प्रति कोई अपराध किया है तो उसे भी आप क्षमा कर दें। X शान्तिका नाम ही शान्ति लाता है। प्रभु हमारे न जाने कितने अपराध क्षमा करते हैं रोते बच्चेसे कहिये-शान्त हो जाओ। वह शान्त और हम मामूली-से-मामूली अपराधोंको क्षमा नहीं करते, इससे बढ़कर कृतघ्नता और होगी ही क्या! हो जायगा। इसी प्रकार विकारग्रस्त जीव भी शान्तिका जाप पल-पलके उपकार रावरे जानि बुझि सनि नीके। करके शान्तिलाभ कर सकता है, 'ॐ शान्तिः शान्तिः भिद्यो न कुलिसहुँ ते कठोर चित कबहुँ प्रेम सिय-पीके।। शान्तिः' की जोर-जोरसे रट लगा दीजिये, क्रोध शान्त हो जायगा। 'ॐ द्यौ: शान्ति:, पृथिवी शान्ति:, आप: 'मैं सबको क्षमा करता हूँ, सब मुझे क्षमा करें।'— शान्तिः ' स्तोत्रका पाठ करने लगिये, गुस्सा जाता रहेगा। यही हमारा आदर्श होना चाहिये। मेरा कोई विरोधी नहीं। कोई मेरा शत्रु नहीं। सब क्रोधसे जल रहे हैं, स्नान कर लीजिये। क्रोध प्राणिमात्र मेरे परम आत्मीय हैं, मेरे परम मित्र हैं। सबके शान्त हो जायगा। किसीका माथा गरम है, यह सुनते हितमें ही मेरा हित है। ही हम पानी लेकर दौडते हैं। इसीलिये कि जलमें इस प्रकारकी मैत्री-भावना हमें प्रतिक्षण करते उत्तेजनाको शान्त करनेकी अद्भुत सामर्थ्य है। स्वामी रहनी चाहिये। रामतीर्थने ठीक ही कहा है-सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।  संख्या १० ] चेतावनी ( नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार ) बहा दी थी, पर उस दिन उस प्यारे महलमें दो घडीके बहुत गयी थोड़ी रही, नारायण अब चेत। काल चिरैया चुगि रही, निसिदिन आयू खेत॥ लिये भी इस देहको स्थान न मिलेगा। घरकी सारी मालिकी छनमें छिन जायगी। सारी पद-मर्यादा मटियामेट काल्हि करै सो आज कर, आज करै सो अब। हो जायगी। पलमहँ परलै होयगी, फेर करैगा कब।। इस जीवनमें किसीकी कुछ भलाई की होगी तो रामनामकी लूट है, लूटि सकै तो लूट। लोग अपने स्वार्थके लिये दो-चार दिन तुम्हें याद करके फिरि पाछे पछितायगा प्रान जाहिंगे छूट॥ रो लेंगे। सभाओंमें शोकके प्रस्ताव पास करके रस्म पूरी तेरे भावै जो करो, भलो बुरो संसार। नारायण तू बैठकर, अपनो भवन बुहार॥ कर दी जायगी। दु:ख देकर मरोगे, तो लोग तुम्हारी उम्र बीत रही है, रोज-रोज हम मौतके नजदीक लाशपर थूकेंगे। वश न चलेगा तो नामपर तो चुपचाप पहुँच रहे हैं। वह दिन दूर नहीं है, जब हमारे इस जरूर ही थूकेंगे। बस, इस शरीरका इतना-सा नाता यहाँ लोकसे कूच कर जानेकी खबर अड़ोसी-पड़ोसी और रह जायगा। सगे-सम्बन्धियोंमें फैल जायगी। उस दिन सारा गुड़ अभी कोई भगवान्का नाम लेनेको कहता है तो जवाब दिया जाता है—'मरनेकी भी फुरसत नहीं है, गोबर हो जायगा। सारी शान धूलमें मिल जायगी। सबसे कामसे वक्त ही नहीं मिलता।' पर याद रखो, उस दिन नाता टूट जायगा। जिनको 'मेरा-मेरा' कहते जीभ सूखती है, जिनके लिये आज लड़ाई उधार लेनेमें भी अपने-आप फुरसत मिल जायगी। कोई बहाना बचेगा इनकार नहीं है, उन सबसे सम्बन्ध छूट जायगा, सब ही नहीं। सारी उछल-कूद मिट जायगी, तब पछताओंगे, कुछ पराया हो जायगा। मनका सारा हवाई महल रोओगे पर **'फिर पछताये का बनै जब चिड़िया चुग** गयी खेत'। मनुष्य-जीवन, जो भगवानुको प्राप्त करनेका पलभरमें ढह जायगा। जिस शरीरको रोज धो-पोंछकर एकमात्र साधन था, उसे तो यूँ ही खो दिया, अब बस, सजाया जाता है-सर्दी-गर्मीसे बचाया जाता है, जरा-रोओ! तुम्हारी गफलतका यह नतीजा ठीक ही तो है। सी हवासे परहेज किया जाता है—सजावटमें तनिक-सी कसर मनमें संकोच पैदा कर देती है, वह सोने-सा शरीर पर अब भी चेतो ! विद्या, बुद्धि, वर्ण, धन, मान, पदका अभिमान छोड़कर सरलतासे परमात्माकी शरण लो। राखका ढेर होकर मिट्टीमें मिल जायगा। जानवर खायेंगे तो विष्ठा बन जायगा, सड़ेगा तो कीड़े पड़ जायँगे। यह भगवान्की शरणके सामने ये सभी कुछ तुच्छ हैं, नगण्य हैं! सब बातें सत्य-परम सत्य होनेपर भी हम उस दिनकी विद्या-बुद्धिके अभिमानमें रहोगे, फल क्या होगा? दयनीय दशाको भूलकर याद नहीं करते। यही बड़ा तर्क-वितर्क करोगे, हार गये तो रोओगे-पश्चात्ताप अचरज है। इसीलिये युधिष्ठिरने कहा था-होगा। जीत गये तो अभिमान बढ़ेगा। अपने सामने दूसरेको मूर्ख समझोगे। 'हम शिक्षित हैं' इसी अभिमानसे अहन्यहिन भूतानि गच्छन्तीह यमालयम्। तो आज हमारे मनने बड़े-बड़े पुरखाओंको मूर्खताकी शेषाः स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम्॥ प्रतिदिन जीव मृत्युके मुखमें जा रहे हैं, पर बचे उपाधि प्रदान कर दी है। इस बुद्धिके अभिमानने श्रद्धाका हुए लोग अमर रहना चाहते हैं; इससे बढ़कर आश्चर्य सत्यानाश कर दिया। आज परमेश्वर भी कसौटीपर कसे क्या होगा? अतएव भाई! बेखबर मत रहो। उस दिनको जाने लगे! जो बात हमारे तुच्छ तर्कसे कभी सिद्ध नहीं याद रखो, सारी शेखी चूर हो जायगी। ये राजमहल, होती, उसे हम किसीके भी कहनेपर कभी माननेको तैयार नहीं! इसी दुरिभमानने सच्छास्त्र और सन्तोंके सिंहासन, ऊँची-ऊँची इमारतें, किसी काममें न आयेंगी। अनुभवसिद्ध वचनोंमें तुच्छ भाव पैदा कर दिया। हम बडे शौकसे मकान बनाया था, सजावटमें धनकी नदी

चार दिनकी चाँदनीपर इतना इतराना! अरे, रावण-उन्हें कविकी कल्पनामात्र समझने लगे। धनके अभिमानने तो हमें गरीब भाइयोंसे—अपनेही-जैसे हाथ-पैरवाले हिरण्यकशिप्-सरीखे धरती तौलनेवालोंका पता नहीं

िभाग ९६

लगा, फिर हम तो किस बागकी मुली हैं। सावधान हो

जाओ। छोड दो इस विद्या, बुद्धि, वर्ण, धन, परिवार, पदके झुठे मदको, तोड़ दो अपने-आप बाँधी हुई इन

सारी फॉॅंसियोंको, फोड़ दो भण्डा जगत्के मायिक

रूपका, जोड दो मन उस अनादिकालसे नित्य बजनेवाली मोहनकी मोहमायाविनी किंतु मायानाशिनी मधुर मुरली-

ध्वनिमें और मोड़ दो निश्चयात्मिका बुद्धिकी गतिको

लगा! दो दिनकी परतन्त्रतामूलक हुकूमतपर इतना घमण्ड, निज-नित्य-निकेतन नित्य सत्य आनन्दके द्वारकी ओर!

### जलाशय-निर्माणका फल

भाइयोंसे सर्वथा अलग कर दिया। ऊँची जातिके

घमण्डने मनुष्योंमें परस्पर घृणा उत्पन्नकर एक-दुसरेको

वैरी बना दिया। व्यभिचार, अत्याचार, अनाचार आज हमारे चिरसंगी बन गये। बडे-से-बडे पुरुष आज हमारी

बैठे कि आँखें फिर गयीं, आसमान उलटा दिखायी पड़ने

पद-मर्यादाकी तो बात ही निराली है, जहाँ कुर्सीपर

तुली-नपी अक्लके सामने परीक्षामें फेल हो गये।

पत्थर उठाकर दूर फेंक दिया।

पूर्वकालकी बात है, किसी धनीके पुत्रने एक विख्यात जलाशयका निर्माण कराया, जिसमें उसने दस हजार

सोनेकी मुहरें व्यय की थीं। धनीने अपनी पूरी शक्ति लगाकर प्राणपणसे चेष्टा करके बड़ी श्रद्धाके साथ सम्पूर्ण प्राणियोंके उपकारके लिये वह कल्याणमय जलाशय तैयार कराया था। कुछ कालके पश्चात् वह निर्धन हो गया।

उसके बाद एक दूसरा धनी उसके बनवाये हुए जलाशयका मूल्य देनेको उद्यत हुआ और कहा—' मैं इस जलाशयके

अपना अधिकार करना चाहता हूँ। यदि तुम्हें लाभ जान पड़े तो मेरा प्रस्ताव स्वीकार करो।' धनीके ऐसा कहनेपर जलाशय-निर्माण करानेवालेने कहा—'भाई! दस हजारका पुण्यफल तो इस जलाशयसे मुझे रोज ही प्राप्त होता है।

लिये दस हजार स्वर्णमुद्राएँ दूँगा। इसे खुदवानेका पुण्य तो तुम्हें मिल ही चुका है। मैं केवल मूल्य देकर इसके ऊपर

पुण्यवेत्ताओंने जलाशय-निर्माणका ऐसा ही पुण्य माना है। विश्वास न हो तो धर्मानुसार इसकी परीक्षा कर लो।' धनीने ईर्ष्यापूर्वक कहा—'बाबू! मेरी बात सुनो। मैं पहले तुम्हें दस हजार स्वर्णमुद्राएँ देता हूँ। इसके बाद मैं पत्थर लाकर तुम्हारे जलाशयमें डालुँगा। पत्थर स्वाभाविक ही पानीमें डूब जायगा। फिर यदि वह समयानुसार पानीके

अपर आकर तैरने लगेगा तो मेरा रुपया मारा जायगा। नहीं तो इस जलाशयपर धर्मत: मेरा अधिकार हो जायगा।'

जलाशय बनवानेवालेने 'बहुत अच्छा' कहकर उससे दस हजार मुद्राएँ ले लीं और अपने घरको चल दिया। धनीने कई गवाह बुलाकर उनके सामने उस महान् जलाशयमें पत्थर गिराया। उसके इस कार्यको मनुष्यों, देवताओं और असुरोंने भी देखा। तब धर्मके साक्षीने धर्मतुलापर दस हजार स्वर्णमुद्राएँ और जलाशयके जलको तोला; किंतु

हृदयको बड़ा दु:ख हुआ। दूसरे दिन वह पत्थर भी द्वीपकी भाँति जलके ऊपर तैरने लगा। यह देख लोगोंमें बड़ा कोलाहल मचा। इस अद्भुत घटनाकी बात सुनकर धनी और जलाशयका स्वामी दोनों ही प्रसन्नतापूर्वक वहाँ आये। पत्थरको उस अवस्थामें देख धनीने अपनी दस हजार मुद्राएँ उसीकी मान लीं। तत्पश्चात् जलाशयके स्वामीने ही वह

वे मुद्राएँ जलाशयसे होनेवाले एक दिनके जलदानकी भी तुलना न कर सर्की । अपने धनको व्यर्थ जाते देख धनीके

जो स्वयं जलाशय बनवाता है, उसका पुण्य अक्षय होता है; अतः सब प्रकारसे प्रयत्न करके कुआँ, बावली अथवा पोखरेका निर्माण या जीर्णोद्धार कराना चाहिये।\* [पद्मपुराण]

\* किसी भी प्रकार जल-संरक्षण करना भी जलाशय-निर्माणका ही लघु संस्करण होता है।—सम्पादक

गुरुसे उऋण कैसे हों ? संख्या १० ] गुरुसे उऋण कैसे हों ? साधकोंके प्रति-(ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज) जिससे हमें अपने कर्तव्यका ज्ञान प्राप्त हो अर्थात् रखकर आपसमें विचार-विनिमयद्वारा उनपर विचार जो हमारे साधनका निर्माण कर दे, वही गुरु है एवं करके साधनका निर्माण करनेका नाम ही सत्संग है। इस गुरुद्वारा उपदिष्ट साधनको जीवनमें ढाल लेना, उसके प्रकार साधनका निर्माण करके उसके अनुसार साधक अनुसार अपना जीवन बना लेना ही गुरुसे उऋण अपना जीवन बना सकता है। होना है। अत: यह सिद्ध हुआ कि साधनतत्त्व ही गुरुतत्त्व हाड-मांसका शरीर गुरु नहीं है। गुरुमें जो दिव्य है और साध्यतत्त्व ही भगवान् है। साध्यसे भी साधनका ज्ञान है, वही गुरुतत्त्व है। उसका आदर करके उनकी महत्त्व अधिक है: जैसे धनसे भी धन-प्राप्तिके साधनका आज्ञाके अनुसार अपना जीवन बना लेना ही शिष्यका महत्त्व अधिक है। इसी भावको लेकर गुरुको भगवान्से शिष्यत्व है। भी बड़ा कहा जाता है। गुरुके शरीरका सेवन करना भी शिष्यका काम है; परंतु गुरुकी असली सेवा तो उनकी मनुष्यको गुरुतत्त्वकी प्राप्ति चार प्रकारसे होती आज्ञाके अनुसार जीवन बना लेना ही है। श्रद्धा गुरुमें १-पहला गुरु तो भगवानुकी कृपासे मिला हुआ करनी चाहिये और प्रेम भगवान्में करना चाहिये। गुरु विवेक है। उससे हरेक मनुष्य अपने साधनका निर्माण भी यही सिखलाता है। कर सकता है। जो प्राप्त विवेकका आदर करता है, उस आजकल न तो पहले-जैसे गुरु देखनेमें आते हैं साधकको बाह्य सद्गुरुकी आवश्यकता नहीं पड़ती। जो और न वैसे शिष्य ही देखे जाते हैं। सबसे श्रेष्ठ गुरु इसका आदर नहीं करता, वह दूसरे गुरुको पाकर भी तो वे होते हैं, जो शिष्यमें अपनी शक्तिका संचार करते साधनका निर्माण नहीं कर पाता। हैं। जैसे परमहंसजीने विवेकानन्दमें किया। एक घटना २-दूसरा गुरु व्यक्तिके रूपमें मिलता है। जब है कि एक साधक मुक्तिकी तीव्र इच्छासे गुरुकी खोजमें पहाडोंपर और जंगलोंमें फिर रहा था। एक जगह उसे मनुष्य अपने प्राप्त विवेकका आदर नहीं करता और एक महात्माके दर्शन हुए। वह वहाँ जाकर बैठ गया। सद्गुरुकी आवश्यकता समझकर उनको पानेकी चेष्टा करता है, तब उसे व्यक्तिके रूपमें गुरुकी प्राप्ति होती महात्माने पूछा—'तुमको क्या चाहिये?' उसने कहा— है। उनकी कृपासे भी साधक उनके उपदेशानुसार अपने 'मुक्ति।' महात्माने पूछा—'तुम्हें बन्धन ही क्या?' इस साधनका निर्माण कर सकता है। बातको सुनकर वह चौबीस घण्टे बैठा रहा। उसे सन्तोष ३-तीसरा गुरु ग्रन्थके रूपमें मिलता है। जब हो गया। मनुष्यकी किसी व्यक्तिपर श्रद्धा नहीं होती, किसीके गुरुका काम यही है कि साधक जो साधन करता बताये हुए साधनके अनुसार वह अपना जीवन नहीं बना है, उसीको सजीव बना दे अर्थात् उस साधनमें जो त्रुटि सकता, तब वह सत्-शास्त्रोंको अर्थात् गीता एवं हो, उसे दूर करके उसे उज्ज्वल बना दे। उसमें कोई रामायण आदि सत्पुरुषोंद्वारा रचे हुए ग्रन्थोंको गुरुरूपमें सन्देह हो तो उसे मिटा दे। जीनेकी आशा, पानेकी वरण कर सकता है और उनके उपदेशानुसार अपने आशा, करनेकी आशा और भोगनेकी आशा—इन साधनका निर्माण करके उसके अनुकूल अपना जीवन आशाओंने मनुष्यको ईश्वरसे दूर कर दिया, वर्तमानमें अपने प्रभुसे मिलनेकी लालसा उत्पन्न नहीं होने दी और बना सकता है। ४-चौथा गुरु सत्संग है, अपने दोषोंको सामने संसारसे सच्चा वैराग्य नहीं होने दिया।

बन्धन और मुक्ति ( ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज ) 🕯 शरीरादि सांसारिक पदार्थोंको अपना मानना ही 🕸 भगवानुकी बनायी हुई सृष्टि कभी बाँधती नहीं, बन्धन है और अपना न मानना ही मुक्ति है। अपना मानने दु:ख नहीं देती। जीवकी बनायी हुई सृष्टि (अहंता-अथवा न माननेमें सब-के-सब स्वतन्त्र हैं। ममता) ही बाँधती और दु:ख देती है। 🕯 संसारके सब सम्बन्ध मुक्त करनेवाले भी हैं और 🕸 जिसको नहीं करना चाहिये, उसको करना और बाँधनेवाले भी। केवल परमार्थ (सेवा) करनेके लिये माना जिसको नहीं कर सकते, उसका चिन्तन करना-ये दो हुआ सम्बन्ध मुक्त करनेवाला और स्वार्थके लिये माना खास बन्धन हैं। हुआ सम्बन्ध बाँधनेवाला होता है। 🕯 वस्तुका मिलना अथवा न मिलना बन्धनकारक 🕏 मानवशरीरका दुरुपयोग करनेसे जीव बँध जाता नहीं है, प्रत्युत वस्तुसे माना हुआ सम्बन्ध ही बन्धन-है और सदुपयोग करनेसे मुक्त हो जाता है। अपने स्वार्थके कारक है। लिये दूसरोंका अहित करना मानव-शरीरका दुरुपयोग है 🕯 संसारको अपनी सेवाके लिये मानना बन्धनका और अपने स्वार्थका त्याग करके दूसरोंका हित करना हेतु है और अपनेको संसारकी सेवाके लिये मानना

उसका सदुपयोग है। मुक्तिका हेत् है। 🕯 नाशवानुको महत्त्व देना ही बन्धन है। 🕸 मिले हुएको अपना मत मानो तो मुक्ति है। स्वत:सिद्ध है।

🕸 अनुकूलता-प्रतिकूलता ही संसार है। अनुकूलता-

प्रतिकूलतामें राजी-नाराज होनेसे मनुष्य बँध जाता है और राजी-नाराज न होनेसे मुक्त हो जाता है। 🕸 शरीर संसारका अंश है और हम (स्वयं)

परमात्माके अंश हैं। अतः शरीरको संसारके अर्पित कर दे अर्थात् संसारकी सेवामें लगा दे और स्वयंको

परमात्माके अर्पित कर दे। फिर आज ही मुक्ति है। 🕯 मुक्तिकी इच्छा रहनेसे शरीरके रहनेकी इच्छा नहीं होती, अगर होती है तो मुक्तिकी इच्छा है ही नहीं।

🕯 निष्कामभावपूर्वक (दूसरोंके लिये) कर्म करनेसे मुक्ति होती है और सकामभावपूर्वक (अपने लिये) कर्म करनेसे बन्धन होता है। अत: मनुष्यको निष्कामभावपूर्वक

🔅 संसार-बन्धनसे मुक्त होना हो तो प्राप्त वस्तुओंमें

अपने कर्तव्यका पालन करना चाहिये।

🔹 मनुष्य कर्मोंसे नहीं बँधता, प्रत्युत कर्मोंमें वह जो आसक्ति और स्वार्थभाव रखता है, उनसे ही बँधता 🕏 यह सिद्धान्त है कि जबतक मनुष्य अपने लिये कर्म करता है, तबतक उसके कर्मकी समाप्ति नहीं होती

ममताका और अपाप्त वस्तु ओंको का मनाका लिएड लेखिड के प्राप्त कर दुरी harma- मंगारिके विश्वासी है VE BY Avinash/Sha

मुक्तिकी इच्छा करना बाधक है।

ही बन्धन है, परतन्त्रता है।

और वह कर्मोंसे बँधता ही जाता है। 🕸 जबतक प्रकृतिके साथ सम्बन्ध है, तबतक कर्म करना अथवा न करना—दोनों ही बन्धनकारक 'कर्म' हैं। 🕯 मुक्ति स्वयंकी होती है, शरीरकी नहीं। अत: मुक्त होनेपर शरीर संसारसे अलग नहीं होता, प्रत्युत स्वयं

🕏 बन्धन क्रियासे नहीं होता, प्रत्युत कामनासे होता

🕯 अप्राप्त वस्तुकी इच्छा और प्राप्त वस्तुकी ममता

🕸 भोगोंकी इच्छाका त्याग करनेके लिये मुक्तिकी

इच्छा करना आवश्यक है, परंतु मुक्ति पानेके लिये

मौनके क्षणोंमें दिव्य 'नाद' संख्या १० ] मौनके क्षणोंमें दिव्य 'नाद' ( श्रीसुदेशजी गोगिया ) जिन्दगीमें किसीके गुरु बननेका प्रयास मत करिये, जिन्दगीकी रेल छूट गयी। न ही शिष्य बनानेका। यह विचित्र दुनिया है, थोड़ेसे जिन्दगीमें प्राय: लोगोंका अनुभव रहता है कि पोथे क्या पढ़ लिये, संस्कृतके कुछ श्लोक कण्ठस्थ कर **'नेकी कर, जूते खा।**'इस संदर्भमें मुझे केवल इतना लिये, चन्द शिक्षाप्रद बातें क्या पढ़-सुन लीं, उधारके गुरु कहना है कि इतिहासमें आखिरकार जीत हमेशा सच्चाई बन बैठे। लोगोंने प्रशंसाके दो लफ्ज क्या बोले, पाँव और नेकीकी ही होती रही है। 'भलेका अंत भला।' छुआने लगे। 'गुरुजी' कहलाने लगे। मौलिक चिन्तन, श्रीरामचरितमानसमें स्पष्ट रूपसे लिखा है-साधना, स्वाध्याय एवं मनन कहीं छूट गया। करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।। हाँ, 'समभाव'-'स्थितप्रज्ञता' जब जीवनमें उतर जो व्यक्ति जिस तरहका कर्म करता है, उसे फल आये, तब मित्र बनाइये। जीवनकी सार्थकता एवं सौन्दर्य, भी उसीके अनुरूप मिलता है। जिस चीजका मूल ही जीवनके रहस्य अनुभवकी कलमसे निकलें—ऐसा प्रयास ठीक नहीं, क्या उसपर फल-फूल आ सकते हैं? हाँ, जीवनकी दिनचर्याके दौरान गलत अश्लील कीजिये। शेरो-शायरी और पुराने गीत, सुबुद्ध गीतकारोंके गीत गुह्य सांकेतिक सूत्रोंसे जिन्दगीसे रूबरू कराते हैं। शब्दोंका चुनाव कभी न करें। कर्णप्रिय मीठे शब्दोंका सादगी, सहजता एवं सरलतासे आप न केवल अपने घर-चयन करें। सत्यको भी मीठा बनाकर बोलें। दूसरोंका वालोंके बल्कि समाजके हर प्राणीके नजदीक आ जाते दिल क्यों कर दुखे ? वर्तमान समयके मैनेजमेण्ट एवं हैं। हृदयसे उपजे प्रेमभावसे परिपूर्ण मुसकान किसको मार्केटिंगके ये सूत्र हैं। मोहित नहीं करती ? यह तो सदा सहज प्रसन्नताका द्योतक है। अपनी सुप्त चेतना जगाकर न केवल अपने परिवार, समाज या देश; बल्कि विश्वमें सौहार्द एवं हाँ, अहंकार एवं क्रोधसे सदा सावधान रहिये। ये दोनों सुक्ष्म रूपसे कब मस्तिष्कमें उतर जायँ, पता ही सद्भावनाके जागरणका शंखनाद कर सकते हैं। इसके नहीं चलता। सदा जागरूक रहिये। आपकी श्रेष्ठता लिये परम आवश्यक है कि दूसरोंको बदलनेकी बजाय आपकी सहज मुसकान और व्यवहारसे स्वयमेव छलकती हम स्वयंको बदलें। सन्त तिरुवल्लुवर कर्णप्रिय शब्दावलियोंके विषयमें कहते हैं—'नम्रता, मीठे बोल ही है, जो आपके आन्तरिक भाव एवं गरिमाको स्पष्ट करती है। जीवनमें पुस्तकोंसे कभी नाता मत तोड़िये। सही मायनोंमें आभूषण होते हैं। शेष सब कृत्रिम भूषण पठन-पाठन, चिन्तन-मनन जिन्दगीके अन्ततक दिलो-हैं।' दूसरोंका हक मारकर जो अधिक हर्षित होते हैं, कालान्तरमें उनके पतन और अधिक दु:खकी बारी आती दिमागको रोशन करते रहते हैं। है। याद रखिये, रिश्तेदारी या समाजमें शायद ही कोई समय-समयपर 'मौन' धारण करिये। आपकी ऊर्जा और विकसित होगी। यह मौन आपको अपने-आपसे ऐसा व्यक्ति होगा, जिसके विरोधी न हों। आवश्यक है परिचित करायेगा। परम तत्त्वकी स्मृति सदा बनी रहेगी। कि हम कितने प्रेम, आपसी सौहार्द एवं सकारात्मक निरन्तर अभ्याससे जीवनमें समग्रता आयेगी। रिश्तेदारोंकी सुमधुर व्यवहारोंसे जीवनको कैसे समुन्नत बनाते हैं। च्वाइस आपको नहीं मिली। हाँ शुभका संग, मित्रोंका जीवनमें कई बार हम धर्म-संकटमें फँस जाते हैं। साथ आपके अपने हाथमें है। अच्छी शेरो-शायरी दिलो-'सच्चाई' और 'नैतिकता' के बीच 'उलझन' और दिमागको रोशन करती है। हँसीके फव्वारोंसे भरी सकारात्मक 'कश्मकश' चलती है। ऐसे लम्होंमें अपने विवेक, संयम एवं अन्दरूनी शक्ति आपके मार्गदर्शक हैं। गीतामें बातें जीवनमें आनन्दकी वृद्धि करती हैं। विश्वास कीजिये, जीवन गम्भीर यात्रा नहीं है। गम्भीर गमगीन क्या हुए, भगवान् श्रीकृष्णका गुह्यतम ज्ञान आध्यात्मिकताका

द्योतक है। मेरे लिये गीताका सतत पठन-पाठन एवं युवा पीढीसे केवल इतना कहँगा कि इन दुकानोंसे बचें।

अभ्यास ऐसे गम्भीर क्षणोंको आसान बना देता है। इनसे न उलझें, केवल इन्हें माफ कर दें। उच्चकोटिकी

है। इसे विवेकपूर्ण तरीकेसे संयमित करना आवश्यक है। करेंगे। आप केवल विशेष कार्यके लिये धरापर आये हैं। हाँ, इसका दमन अप्राकृतिक है, जो कई विकृत प्रवृत्तियों आप जीवित हैं, यह उनकी 'कृपा', 'अनुग्रह', 'अनुकम्पा'

एवं विकारोंको जन्म देता है। आज समाजमें इन

विकृतियोंका बोल-बाला बढ गया है।

ही पल उसे अपने मनमें निवास दिया, वरना जगत् ठप्प हो जाता। ताबीज, नगीने इत्यादिका विक्रय करनेवाले, जो

मशरूमकी तरह फैल रहे हैं—उनके सम्बन्धमें आजकी

में व्यर्थमें अपनी ताकत और समय इसमें गवाऊँ ?'

भगवान् शंकर ने 'काम' को खत्म किया, पर दूसरे

ब्रह्मचर्यके विषयमें मैं इतना ही कहुँगा जो सदा

हृदयसे निकले भाव सत्यताके मार्ग हैं।

'ब्रह्म' में रमण करे, उस अनुपम प्राकृतिक ऊर्जा यानी कामकी ऊर्जाका ऊर्ध्वगमन उसके रूपान्तरणका द्योतक

एवं दैवीय-वाणीसे इसका कोई लेना-देना नहीं है।

आप प्रभुकी अनुपम कृति हैं। आप-जैसा ईश्वरने पहले कभी किसीको नहीं बनाया। न ही पुनरावृत्ति

का प्रसाद है। तुच्छ क्षुद्र बातोंमें मत उलझिये। इस अमूल्य जीवनका एक-एक क्षण अद्वितीय है। इसे मत

गवाँइये। कुछ लम्हे अपने लिये भी निकालिये। समय

नहीं गुजर रहा, शनै:-शनै: आप गुजर रहे हैं। मौनके

क्षणोंमें उस नादको सुनिये, जो लगातार अपनी दिव्य

ध्वनिसे आपको आनन्दसे आलोकित कर रहा है।

अमृल्य भारतीय संस्कृति, वैदिक ज्ञान, दार्शनिक मृल्यों

## दुढ़ निश्चयकी शक्ति

एकही प्रहारमें चट्टान टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गयी। वह चौंककर जाग उठा, उसे मार्ग मिल गया था, वह

एक सेवक कुछ समयसे एक आश्रममें प्रबन्धनका कार्य कर रहा था। लेकिन उसकी सेवा और मेहनतका

प्रभाव उसके आश्रमके लोगों और कार्योंपर दिखायी नहीं दे रहा था। बहुत कोशिशोंके बाद भी जब कोई सुधार न हुआ तो वह निराश होने लगा। एक रात उसे एक स्वप्न दिखायी दिया, जिसमें वह एक हथौडेद्वारा एक भारी

चट्टानको तोड़नेका प्रयत्न कर रहा था। घण्टों लगातार पूरे सामर्थ्यसे किये गये प्रहारोंके बावजूद उसकी कोशिश बेकार जाती दिखायी दे रही थी। उससे सोचा, इसमें मेहनत करनेका कोई फायदा नहीं है, मैं इस कामको

छोड़ रहा हूँ और उसने हथौड़ा नीचे रख दिया। तभी एक व्यक्ति उसके पास आया और उससे पूछा—'क्या तुम्हें

भाग ९६

इसी कार्यके लिये नियुक्त नहीं किया गया था? तुम अपनी जिम्मेदारीसे मुँह क्यों मोड रहे हो?' सेवकने उत्तर दिया—'श्रीमान्! यह कार्य व्यर्थ है, इतनी मेहनतके बाद भी इस चट्टानपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। अब क्यों व्यक्तिने उत्तर दिया—'यह सब सोचना तुम्हारा काम नहीं है। जिसने तुम्हें यह जिम्मेदारी दी है, वह

इस सबके बारेमें जानता है, उसे तुम्हारी योग्यता और सामर्थ्यका भी पता है तथा इस चट्टानकी मजबूतीका भी। बस, सौंपा गया कार्य दुढ़ निश्चयके साथ भली-भाँति करो, परिणामकी चिन्ता मत करो। चलो, निराशा

छोड़ो और पुनः अपने कार्यमें लग जाओ।' वस्तुतः हमारा हर प्रयास कार्यको परिणतिकी ओर पहुँचा रहा होता है, परंतु हमें उसकी अनुभूति तभी होती है, जब अन्तिम परिणाम आ जाता है। उस व्यक्तिके कहनेपर सेवकने हथौड़ा फिरसे उठाकर उस चट्टानपर भरपूर प्रहार किया, अबकी बार

अपने कार्यके लिये एक महत्त्वपूर्ण सबक सीख चुका था। वह जान चुका था कि उसे अपना कार्य करते रहना है, बिना परिणामकी चिन्ता किये। पता नहीं कौन-सा प्रहार अन्तिम सिद्ध हो।

( श्रीकृष्णचन्द्रजी टवाणी )

संख्या १० ] अर्पण ( श्रीगौतम सिंहजी पटेल ) की जानेवाले कृपा और दयाके लिये कृतज्ञता प्रकट पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। करता हूँ। कृपया मुझे उपकृत करें। आपने हमारे जन्मसे भक्त्युपहृतमश्नामि तदहं प्रयतात्मनः॥ पूर्व ही हमारे पास घर-द्वार, कुटुम्ब-परिवार, इष्ट-मित्र, (गीता ९। २६) जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेमसे पत्र, पुष्प, फल, जल सगे-सम्बन्धी, साज-सज्जा, भौतिक सुख-सुविधा, साधन-आदि अर्पण करता है। उस शुद्ध बुद्धिवाले निष्काम प्रेमी सम्पन्नता आदि-आदि लगभग सभी कुछ भेज दिया भक्तका प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र, पुष्प, फल, था। माता-पिताकी सम्पत्तिके हम जन्मजात अधिकारी जल आदि मैं सगुण रूपसे प्रकट होकर प्रीतिसहित खाता बन गये। इन सबके लिये भी मैं आपके प्रति कृतज्ञता हूँ। दूसरे शब्दोंमें जो पुरुष प्रेमपूर्वक भक्ति-भावसे पान-प्रकट करता हूँ। कृपया आप मुझे अनुगृहीत करें।' पत्ता, फल-फूल, जल-तुलसीदल आदि भी यदि मुझे सूर और तुलसीसदृश भक्त कवियोंने दोहा, सोरठा, समर्पित करता है, तो मैं उस शुद्ध चित्त भक्तका वह छन्द एवं चौपाईरूपी फूल अर्पणकर प्रभुको पाया है या प्रभुने उन्हें अपनाया है। प्रभुके समक्ष कोई गीत गाकर प्रेमोपहार केवल स्वीकार ही नहीं कर लेता, अपितु तुरन्त भोग भी लगा लेता हूँ। इसे हम यों भी कह सकते हैं तो देखे, कोई संगीत सुनाकर तो देखे। ओंठोंसे फूल कि यदि कोई प्रेमीभक्त पत्र, पुष्प, फल या जलमात्र झड़ते हैं। फूल न सही, फूल-सी मुसकान तो दे सकते अर्पण करता है, तो भी भगवान् उसे स्वीकारते हैं। हैं परमात्माको। फूल-सा प्रफुल्लित मुखड़ा तो दे सकते उपहार चाहे कितना ही मुल्यहीन क्यों न हो, यदि हैं परमपिताको। आनन्द अभिमुख चाहता है परमानन्द। और कुछ नहीं तो कम-से-कम प्रसन्नचित्त मुद्रा, वह प्रेम एवं सेवा-भाव-भक्तिके साथ दिया जाता है, तो वह सर्वेशको स्वीकार होता है। सर्वेश्वरतक पहुँचनेके आनन्दमय मनोवृत्ति अथवा उल्लसित भाव-भंगिमा तो अर्पण कर सकते हैं प्रभु-चरणोंमें। वही सही। इतने लिये केवल अत्यन्त सूक्ष्म ब्रह्मविद्या अथवा अत्यधिक जटिल कर्मकाण्ड ही आवश्यक नहीं है, अपितु इसके मात्रसे ही परब्रह्म ब्रह्मलीन कर लेते हैं। आनन्ददाता लिये अति सरलतापूर्वक उपलब्ध पानके पत्ते एवं आनन्दधाममें आश्रय दे देते हैं। परमात्मा इस आत्माको पुष्पहार स्वरूप उपहार भी पर्याप्त है। केवल और केवल अंगीकार कर लेते हैं। भावके भृखे हैं प्रभु; प्रेम, भक्ति एवं सेवा-भावके भृखे पत्र न सही, पुष्प न सही, फल न सही, कर्मफल हैं परमात्मा; उन पूर्णकामके लिये सब वस्तुएँ न मिलें ही सही। ध्यान रहे कर्तव्य कर्मफल, वह भी केवल और तो भी कोई बात नहीं, इनमेंसे कोई एक भी उनके लिये केवल मानसिक रूपसे। आजतकका कुल कर्तव्य कर्मफल, पर्याप्त है। यदि इनमेंसे एक भी नहीं तो भी प्रभु अप्रसन्न नहीं तो पिछले वर्षका कर्तव्य कर्मफल, नहीं तो पिछले नहीं होते। वे तो केवल-और-केवल मानसिक समर्पणसे कोई माहविशेषका या फिर पिछले कुछ दिनों अथवा भी प्रसन्न हो जाते हैं। किसी दिनविशेषका कर्तव्य कर्मफल अर्पण करें। यह भी पत्रका शब्दार्थ केवल पत्ता नहीं, समाचार-पत्र नहीं तो प्रभुको उधारी भी स्वीकार्य है। दृढ़ इच्छाशक्ति तथा चिट्ठी-पत्री भी होता है। हम एकेश्वरको मानसिक और सत्य-संकल्पित स्वरमें बोले कि विश्वात्मा! आजतक मैं अपने किसी भी क्रिया-कलापसे कर्तव्य-कर्मका पत्र भी लिख सकते हैं। इसे हम कृतज्ञता प्रकट करना भी कह सकते हैं। कहें कि 'प्रभु! हुई और हो जानेवाली क्रियान्वयन नहीं कर पाया हूँ। मैं आपको पूर्णत: भूलके लिये क्षमा-याचना करता हूँ। आज और अभीसे सत्यनिष्ठाके साथ वचन देता हूँ कि आज और अभीसे पुनः वही भूल न करनेकी शपथ लेता हूँ। की गयी और जो भी कर्तव्य-कर्मका अनुपालन करूँगा, उसके फलको

अर्पण करता हूँ। निश्चित रूपसे विश्वास कर लेंगे करता हैं। जैसे— द्रौपदीसे पत्ता लेकर योगेश्वरने खा लिया और विश्वेश्वर। निर्विवाद रूपसे स्वीकार कर लेंगे विश्वातीत। पत्र, पुष्प, फल, जल कुछ भी न सही। जल त्रिभुवनको तृप्त कर दिया। गजेन्द्रने सरोवरका एक पुष्प अर्थात् पंचतत्त्व—अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश। अर्पण किया तो मालिकने उसका उद्धार कर दिया। सर्वविदित है कि सभी तत्त्वोंमें सब तत्त्व समाहित होते शबरीके दिये हुए फल पाकर भगवान् अति प्रसन्न हुए। हैं। पंचतत्त्वोंसे यह हमारा शरीर बना है और अन्तमें बड़े ही प्रतापी, दयालु और सर्वस्व दानी महाराज हम इन्हीं पंचतत्त्वोंमें विलीन भी हो जाते हैं। इतना रन्तिदेवने प्यासे चाण्डालरूपसे आये भगवानुको जल ही नहीं, ये पंचतत्त्व हमें आजीवन मुफ्तमें ही उपलब्ध पिलाया तो उनको भगवान्के साक्षात् दर्शन हो गये। होते रहते हैं। या यों कहें कि इन पंच तत्त्वोंकी प्रेमाधिकतामें भक्तको इतना स्मरण नहीं रह जाता कि मैं क्या दे रहा हूँ, तो भगवान्को भी यह ख्याल नहीं उपलब्धताके एवजमें हमें कोई अदायगी नहीं करनी पड़ती। जल, थल, अनल, नभमण्डल और प्राणवायु— रह जाता कि मैं क्या खा रहा हूँ। जैसे—विदुरानी ये सभी परमात्माकी ओरसे मुफ्त प्राप्त हैं। जलतत्त्वके प्रेमानन्दमें भाव-विभोर हो भगवान्को केलोंकी गिरी न प्रतीकके रूपमें यहाँ जलको उद्धृत किया गया है। देकर छिलके देती है, तो भगवान उन छिलकोंको ही इसका सांकेतिक अभिप्राय है जल अर्थात् पंच-तत्त्व। गिरीकी भाँति खा लेते हैं। यदि हम वैश्वानरसे केवल इतनी ही प्रार्थना करें कि पदार्थों तथा खाद्यान्नोंको व्यक्ति जब वनस्पतियोंको ब्रह्माण्डनायक! इन पंचतत्त्वोंको मुफ्त घर पहुँचानेकी देता है, तब वह खाद हो जाता है। जब उसे पशुओंको सेवाके लिये हम आपके एहसानमन्द हैं। इसके लिये देता है, तब वह बलि हो जाता है। जैसे काकबलि, हम आपके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। तब इस श्वानबलि, गोबलि आदि। जब उसे भिखारियोंको देता स्थितिमें भी योगेश्वर वचनबद्ध हैं कि हमें स्वीकार है, तब वह भिक्षा हो जाती है। जब उसे खिलाड़ियोंको देता है, तब वह पारितोषिक हो जाता है। जब उसे करेंगे। यहाँ पत्र, पुष्प, फल और जल-इन्हीं चार सम्बन्धियोंको देता है, तब वह नेग हो जाता है। जब शब्दोंका उल्लेख हुआ है। इसका अभिप्राय यह उसे समकक्षोंको देता है, तब वह भेंट हो जाती है। जब उसे अग्निके माध्यमसे देवताओंको देता है, तब वह कदापि नहीं कि केवल इतने ही पदार्थ अर्पणयोग्य होते हैं। यह एक दृष्टान्तमात्र है। इन पदार्थींक आहुति अथवा यज्ञ हो जाता है। जब उसे पुरोहितको अतिरिक्त कोई अन्य खाद्यान्न, धन-धान्य और वस्त्र-देता है, तब वह दक्षिणा हो जाती है। जब उसे सत्पात्रों आभूषण भी परमात्माको स्वीकार्य है। साथ ही किसी अथवा जरूरतमन्दोंको देता है, तब वह दान हो जाता भी लिंग, जाति, वर्ण और आश्रमका कोई भी व्यक्ति है। जब उसे संयमपूर्वक अन्यके लिये रख छोडता है एकनाथको अर्पण कर सकता है। उन्होंने कहा है कि अथवा निग्रहपूर्वक स्वयं उपभोग नहीं करता, तब वह तप हो जाता है। जब उसे जलके माध्यमसे पितरोंको बल, बुद्धि, विद्या, गुण, धर्म, आयु, दशा एवं दिशा आदिके कारण किसीमें मेरी भेदबुद्धि नहीं है। मेरे देता है, तब वह तर्पण हो जाता है। जब उसे शुद्धता, लिये केवल एक ही कसौटी है शुद्ध मनसे भक्तिभाव। पवित्रता, पावनता एवं श्रद्धाके साथ अनुनय-विनय, प्रयतात्मन् अर्थात् जितेन्द्रिय, संयमी अथवा शुद्ध आत्मा। पूजा-पाठ एवं भक्तिभावके माध्यमसे प्रभुको अर्पित श्लोकमें भक्त्य और भक्त्या कहा गया है, अर्थात् करता है, तब वह 'अर्पण' हो जाता है। अतएव निष्कर्ष

খ্যান্নালেখনিঃশালন্তা।sখিনিয়েষ্ঠিত্বাসক্রবাদ্যান্ত্র/ভিত্তিন্তান্ত্রিকানির্মান্ত্রা ক্রামিস্টার্র্যালিকানি LOVE BY Avinash/Sha

यह है कि प्रभुकी सेवामें सादर अर्पित करें, समर्पित करें,

भक्तिभावसे और भक्तिपूर्वक। निष्कर्ष यह कि व्यक्तिद्वारा

िभाग ९६

वरदान हैं विफलताएँ संख्या १० ] वरदान हैं विफलताएँ (डॉ० शैलजाजी) जीवनमें मिलनेवाली असफलताओंसे व्यक्ति बहुत मन्द अथवा कुन्द नहीं करना चाहिये। बल्कि आगेके दुखी हो जाता है। बल्कि यह कहें कि वह निराश हो लिये योजना बनाकर पूरी तरह तैयारीके साथ जुट जाना चाहिये। मिलनेवाली असफलताएँ देखनेमें भले ही जाता है और एक तरहसे टूट-सा जाता है। ऐसे समयमें यदि उसे उचित मदद और सम्बल न मिल सके, तो कितनी बड़ी क्यों न लगें, लेकिन वे हमारे जीवनसे बड़ी उसका भ्रमित हो जाना भी स्वाभाविक है। असफलताएँ नहीं हो सकतीं और कभी भी असफलताओंको इतना मिलनेपर एक क्षणके लिये लगता है कि जैसे सब कुछ बड़ा नहीं मान लेना चाहिये कि हम उनके कारण अपने खत्म हो गया। जितना भी परिश्रम किया गया सब व्यर्थ जीवनको ही बोझ मानने लगें और हर परिस्थितिको गया: और इसी तरहके न जाने कितने नकारात्मक विचार नकारात्मकतासे स्वीकार करने लगें। जब हम अपनी मनमें उत्पन्न हो जाते हैं। जिनसे मन और दुखी तथा असफलताको खुले दिलसे स्वीकार करते हैं, तो हम उद्वेलित हो जाता है। ऐसी परिस्थितियोंके सन्दर्भमें एक तरहसे अपने लिये नयी सम्भावनाओंके द्वार खोल ऐरिजोना स्टेट युनिवर्सिटीमें सोशल साइकोलॉजीके प्रोफेसर देते हैं, लेकिन यदि हम इसे स्वीकार नहीं करते, तो केनरिक कहते हैं कि व्यक्तिको अपनी असफलताको अपने लिये आगे बढ़नेका, सफलता प्राप्त करनेका मार्ग खुले दिलसे स्वीकार कर लेना चाहिये; क्योंकि वहींसे ही अवरुद्ध कर देते हैं। ही उसकी सफलताका मार्ग प्रशस्त होता है। प्रसिद्ध दार्शनिक एवं चिन्तक कार्ल रोजर्सका किसी भी कार्यमें सफलता अथवा असफलताके कथन है कि सफलताकी कहानी एक पंक्तिमें अभिव्यक्त मिलनेका सिलसिला जीवनपर्यन्त चलता रहता है और नहीं की जा सकती। यह विफलताओं के इतिहाससे दुनियामें शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जिसे कभी-निकला सत्य है। सर आइजक न्यूटन इसका एक न-कभी अपने कार्यमें असफलताका मुख देखनेको न अनुपम उदाहरण थे, जिन्होंने बचपनके दिन गरीबीमें मिला हो। हम जब कुछ चाहते हैं, तो उसकी तैयारी गुजारे और वे पढ़ाईमें कई बार असफल भी हुए। करते हैं। खूब परिश्रम करते हैं, लेकिन इन किये गये कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयने उन्हें निकाल भी दिया था, कार्योंके जो भी परिणाम प्राप्त होंगे, वे हमारे इच्छानुसार फिर भी वे भौतिक विज्ञानके महान् विद्वान् बने। महान् हो भी सकते हैं और नहीं भी, इन परिणामोंपर हमारा गणितज्ञ रामानुजनका बचपन बहुत निर्धनता और तंगहालीमें कोई अधिकार नहीं होता। इसलिये जो भी परिणाम व्यतीत हुआ। दस वर्षकी आयुतक उन्होंने कोई औपचारिक मिलें, उन्हें खुले दिलसे स्वीकार करनेमें ही हमारी शिक्षा भी नहीं प्राप्त की थी, लेकिन बादमें वे ही भलाई है। गीता कहती है कि कर्ममें हमारा अधिकार रामानुजन गणित विषयमें अपनी अद्भुत क्षमताके लिये है, उसके फलमें नहीं—'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु सम्पूर्ण विश्वमें जाने गये। अब्राहम लिंकन एक निर्धन कदाचन' (२।४७)। कर्मका फल तो अवश्य मिलेगा, परिवारमें पैदा हुए, पले-बढ़े और राष्ट्रपति पदतक पर वह कब मिलेगा और उसका स्वरूप क्या होगा, यह पहुँचे। कहते हैं कि उनके घरमें बिजलीतककी सुविधा तय करना हमारे अधिकारक्षेत्रमें नहीं है। न थी और वे स्ट्रीट लाइटमें बैठकर अपनी पढ़ाई किया करते थे। वे अपने वार्डके पंचतकका चुनाव नहीं जीत जब हमें असफलता मिलती है तो हमें मनसे बहत बुरा लगता है, अपने ऊपर क्रोध भी आता है, लेकिन सके थे, लेकिन अपने सतत प्रयासोंके बलपर वे उससे कुछ भी उपलब्ध नहीं होता। इसलिये हमें इन राष्ट्रपतिका चुनाव जीतनेमें सफल हुए। थॉमस अल्वा एडिसन अपनी पढ़ाईमें इतने कमजोर मिलनेवाली असफलताओंसे कभी अपने प्रयासोंकी गतिको

िभाग ९६ थे कि उनको विद्यालयसे निष्कासित कर दिया गया था। है। इसी कारण फुटबालके जादूगरके नामसे विख्यात लेकिन अपने प्रयासोंके जुनूनसे वे विश्वके महानतम और ब्राजीलके फुटबॉलर पेले कहा करते थे कि हम गलतियाँ सफलतम वैज्ञानिक बन गये, जिनके नामपर २५०० तो भरपूर करते हैं, पर हर मैचके बाद स्वयंका मूल्यांकन पेटेण्ट अंकित हुए हैं। इसलिये हमें स्वयंको कभी भी करते हैं कि कहाँ हम विरोधी टीमसे पिछड गये थे। असफल समझनेकी भूल नहीं करनी चाहिये। जिन्दगी वे कहते थे कि यदि आपने सामनेवालेको दोष दिया, हमें अनेक अवसर प्रदान करती है और ये अवसर हमारे तो आपकी अगली पराजय अवश्यम्भावी है। अच्छा लिये एक कसौटीकी तरह होते हैं, जिनपर हमें खरा होगा कि यदि आप अगली बार मैदानमें उतरें तो पहलेसे उतरना होता है। महापुरुषोंका कथन है कि असफल बेहतर तैयारी करके उतरें। होनेपर हमें घबराना नहीं चाहिये। अपितु अन्य अवसरोंकी कहते हैं कि कमजोर तब रुकते हैं, जब वे थक प्रतीक्षा करनी चाहिये और अपने प्रयास सतत जारी रखने जाते हैं और विजेता तब रुकते हैं, जब वे जीत जाते चाहिये। दूरसंचार-क्रान्तिके अग्रदूत इंग्लैण्डके प्रोफेसर हैं। इसका व्यावहारिक उदाहरण विश्वकी जानी-मानी ग्राहम बेलके जीवनकी कहानी भी कुछ इसी प्रकारकी हस्तियोंके रूपमें हमें देखनेको मिलता है, जिन्होंने है। शिष्या बनी पत्नीके बहरेपनके उपचारमें जुटे ग्राहम सफलता हासिल करनेके लिये विफलताके हर कदमको बेलको अथक प्रयास करनेके बाद भी सफलताकी कोई सफलताकी सीढ़ी बनाया और पूरी दुनियाको प्ररेणा दी। किरण नजर नहीं आ रही थी। परंतु उन्होंने हार नहीं उन्होंने विफलताको व्यक्तिगत रूपसे न लेते हुए एक मानी और वे अपने अनुसन्धानमें पागलपनकी हदतक सकारात्मक प्रतिक्रियाके रूपमें देखा और अपनी रणनीतिका जुटे रहे। परिणाम यह हुआ कि वे टेलीफोनका मूल्यांकनकर इच्छित परिणामको हासिल किया। उनका पहला कदम था, विफलताको फिरसे परिभाषित करना आविष्कार करनेमें सफल हुए। हमारी असफलताओंका मुख्य कारण यह होता है और उच्च स्तरपर पहुँचनेके लिये उसे एक अवसरके कि हमसे कहीं-न-कहीं ऐसी भूल होती है, जिसके रूपमें देखना। हमें भी उन महान् हस्तियोंके समान कारण हमें असफलताका दंश झेलना पड़ता है। यदि विफलताओंका जश्न मनाना चाहिये और इनसे सफलताओंके हम अपने द्वारा होनेवाली भूलोंको समयपर पहचान लें लिये नये अवसरोंकी तलाश करनी चाहिये। जीवनमें और उन्हें दोहरानेसे बचते हुए अपने कार्यको अधिक मिलनेवाली हर विफलताके साथ हम सफलताके एक कुशलताके साथ सम्पन्न करें, तो हम सफलताके अधिक कदम और करीब आ जाते हैं। निकट पहुँच सकते हैं। इसी कारण अमेरिकी लेखक महापुरुषोंका कथन है कि जीवनमें मिलनेवाली और दार्शनिक अल्बर्ट हुब्बार्डका कहना है कि असफल असफलताएँ केवल यही प्रमाणित करती हैं कि सफलताके व्यक्ति वह है, जिसने बड़ी गलतियाँ की तो हैं, परंतु जो लिये पूरे मनोयोगसे प्रयास नहीं किया गया। कहीं-न-अपनी गलतियों और अनुभवसे कुछ सीख नहीं पाया। कहीं हमारे ही प्रयास-पुरुषार्थमें चूक हुई है। इसलिये जो व्यक्ति अपनी गलतियोंसे सीख लेता है, वह भविष्यमें हमें यदि सफलता प्राप्त करनी है, तो धैर्यके साथ अपनी अपने लिये सफलताओंके अनेक द्वार भी खोल लेता है। प्रत्येक विफलतासे कुछ-न-कुछ अवश्य सीखना चाहिये यदि गहराईसे ध्यान दिया जाय तो पता चलेगा कि और इस प्रकार मिलनेवाली सीख एवं अनुभवसे जो राह बनती है, वह हमें सफलताके शिखरपर पहुँचाती है। इस असफलताका सही मानक भी यही है कि हमने अपनी गलितयोंसे कुछ सीखा नहीं। हम या तो आत्ममुग्ध रहे तरह यह कहना युक्तियुक्त होगा कि विफलताएँ मनुष्यके अथवा सुधारके प्रति हमारी कोई इच्छा-शक्ति ही नहीं लिये अभिशाप नहीं, बल्कि वरदान बन सकती हैं।

संख्या १० ] ढलता जीवन ढलता जीवन ( श्रीइन्द्रमलजी राठी ) मृत्यु ध्रुव सत्य है। जीवनके ढलनेकी ओर, मृत्युके अवश्य लगायें। सन्निकट बढ्नेकी क्रियाको वृद्धावस्थाकी संज्ञा दी गयी तदुपरान्त उष:पान—ताँबेके लोटेमें ५-७ तुलसीके है। वस्तृत: यह प्राणीके जीवन जीनेका परिणाम है। सात्त्विक पत्तोंके साथ ३-४ गिलास पानी रात्रिमें रखें। लोटा लगभग जीवन जीनेवाले, परिवारसहित जीवनसंगिनीके साथ पूर्ण एक चौथाई खाली रखें। उष:पानमें तुलसीके पत्ते खाकर सामंजस्य रखनेवाले प्राणियोंको वृद्धावस्था किसी भी पैरोंके बल बैठकर पानी पियें। इसके पश्चात् बड़ी आँतको परिस्थितिमें दुखद नहीं हो सकती। यह स्थिति तनकी सिक्रय करनेहेत् तत्सम्बन्धी साधारण व्यायाम २ से ५ अपेक्षा मनसे अधिक सम्बन्धित है। मन स्वस्थ है, युवा है मिनटतक करें। इसके पश्चात् शौच, दन्त-मंजन, तेल-तो मानव जीवनपर्यन्त युवा बने रहनेकी अनुभूति ही करता मालिश एवं स्नान करें। ध्यान रहे, शरीरके साथ किसी है। मैंने ९८ वर्षकी आयुवाले दैनिक नवज्योतिक संस्थापक, प्रकारकी ज्यादती न करें। उष:पान एवं स्नान करते हुए सम्पादक कप्तान श्रीदुर्गाप्रसादजी चौधरीको पूर्ण युवाकी ऋतुके अनुसार गर्म पानीका प्रयोग करें। भाँति तेजीसे चलते-फिरते, प्रसन्नताके साथ सक्रिय सामर्थ्यानुसार प्रात:कालीन भ्रमण, देवदर्शन (मन्दिर), जीवन जीते देखा है। वे इस पीढ़ीके लिये बड़े प्रेरणादायी प्राणायाम, योगासन, व्यायाम, रक्त-संचरणको गति देनेहेतु स्रोत हैं। २० से ३० बारतक जोर-जोरसे ताली बजाना अपेक्षित है। स्वस्थ मनके साथ वृद्धावस्थामें भी किसी प्रकारकी अब स्वाध्यायकी बारी है। उत्तम साहित्य—रामायण, कोई समस्या नहीं आती, जिसका सुगमतासे समाधान न महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता आदि पुस्तकोंका अध्ययन। हो सके। अन्यथा ढलती आयुके साथ स्मरण-शक्ति, श्रवण-जिनका भी अध्ययन करें, उन्हें भलीप्रकार आत्मसात्कर शक्ति, पाचन-शक्ति एवं दृष्टिका कमजोर होना, दाँत गिरना, तदनुसार अपना जीवन ढालनेका प्रयास करें, इससे आपको पेशाब-सम्बन्धी बीमारी, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग आदि शान्ति एवं सन्तोष मिलेगा। नियमित व्यायाम, प्राणायाम, बीमारियोंसे ग्रसित होना, स्वयंका चिडचिडा होना, भ्रमण करनेसे आप स्वस्थ रहेंगे। सेवाका अवसर उपलब्ध क्रोधाधिक्य, सहनशीलतामें कमी, परिवारद्वारा उपेक्षित, होनेपर ईश्वरप्रदत्त तन, धन एवं अन्य पदार्थींसे फलासिक्तसे कामनाओं एवं तृष्णाओंका आधिक्य, स्वयंद्वारा अनावश्यक दूर रहते हुए बिना किसी भेदभावके पूर्ण लगनके साथ रूपसे टोका-टोकी, टीका-टिप्पणी एवं हस्तक्षेप करना, सेवा करके असीम आनन्दकी अनुभूति करें। इसे अपने जीवनका प्रमुख कर्तव्य मानें। आवश्यक होनेपर ऐसे कार्यमें निजताका प्राधान्य, पारिवारिक सामंजस्यका अभाव आदि दूसरोंका सहयोग भी लिया जा सकता है। विभिन्न कारणोंसे स्वयंको ही अधिकाधिक दुखी होना होगा। ऐसी स्थितिसे बचनेके लिये स्व-नियन्त्रण, मौन-नाश्तेमें दूध, फल, अंकुरित अन्न, रस, रोटी ली जा मनन, सत्संग, स्वाध्याय, स्वस्थ (स्वयंमें स्थित) आध्यात्मिक सकती है। शारीरिक शक्ति बनाये रखनेहेतु च्यवनप्राश, जीवनकी ओर बढ़ना, मानव-पशु-पक्षी आदिकी सेवा, अंजीर, बादाम, मुनक्के आदि मेवोंका सेवन उचित होगा। मृदुता एवं दृढ़ताके साथ स्वयंद्वारा पारिवारिक सामंजस्य यथासम्भव चाय-कॉफीसे बचें, भोजन सदैव सात्त्विक, बैठाना हितकारी होगा। संतुलित एवं सीमित ही हो। रोटी मिश्रित अन्न—जौ, गेहूँ, वृद्धावस्थाको सानन्द जीनेके लिये नियमित जीवन-ज्वार, बाजरा, चना, ओटके आटेकी हो तो उत्तम। मिष्टान्न एवं गरिष्ठ भोजनसे बचें। नाश्ते एवं भोजनका समय शैली अपनानी होगी। प्रात: ब्रह्ममुहूर्तमें निद्रा त्यागकर कुछ समय भगवान्को याद करने, नाम-जप, ध्यान आदिमें परिवारको ही निश्चित करने दें। इस हेतु गृहणीपर अतिरिक्त

[भाग ९६ \* भार न डालें। इनमें जब मिले, जैसा मिले, जितना मिले, कम-से-कम डालें। आधुनिकता एवं पाश्चात्य संस्कृतिके प्रभुके द्वारा प्रेरित एवं प्रेषित प्रसाद मानकर किसी प्रकारका प्रभाव तथा उच्च एवं तकनीकी शिक्षा एवं महिलाओंद्वारा दोष निकाले बिना, प्रसन्नताके साथ सेवन करें। दोष निकालकर धनोपार्जनकी सिक्रयताके कारण पारिवारिक वातावरण, वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पानमें बड़ा अन्तर आ गया खानेसे अमृत भी विष बन जाता है। ध्यान रहे अस्वस्थताका है, उनकी व्यस्तता एवं आवश्यकताको ध्यानमें रखकर मार्ग पेटसे होकर ही गुजरता है। भोजन-प्रसादकी प्राप्तिपर आपको स्वयं ही उनके साथ सामंजस्य बैठाना होगा। इस सर्वप्रथम पूर्ण मनोयोगके साथ भगवान्को साक्षात् उपस्थित मानकर उन्हें अर्पणकर भोग लगायें। तत्पश्चात् शास्त्रानुसार ओर आपका सहयोग उन्हें भी आपकी अधिकाधिक सेवाहेत् प्रेरित करेगा। अकारण ही आप अपने आपको उपेक्षित ५ ग्रास गौ, कुत्ता आदि के लिये निकालकर प्रसन्नचित्तके मान, दुखी हो, क्रोधवश वृद्धाश्रमकी ओर उन्मुख न होकर साथ प्रत्येक ग्रास ३२ बारतक चबाते हुए भोजन करें। भोजनके मध्य एक गिलास पानी पीनेसे आप अधिक खानेसे स्वयं एवं परिवारको लांछित होनेसे बचायें। जब भी बोलें, मीठा बोलें। टीका-टिप्पणी, टोका-बच सकेंगे। दोपहरके भोजनके उपरान्त छाछका भी सेवन करें। जूठा छोड़कर भोजनका अनादर न करें। अतिरिक्त टोकी एवं हस्तक्षेपसे बचें। आपका सहयोग एवं सदैव मुसकुराते रहना, बालकोंके मध्य बालक बन व्यवहार करना, वस्तु पहले ही निकाल दें। सायंकालीन भोजन सोनेसे ३-अधिकाधिक समय मौन-मनन, लेखन एवं स्वाध्यायमें ४ घण्टे पहले कर लें, जिससे उसके पाचनके लिये उचित बिताना, सदैव प्रसन्न एवं सक्रिय रहना, परिवारके साथ मात्रामें समय मिल सके। बढ़ती हुई अवस्थाके साथ धीरे-धीरे भोजनकी मात्रा कमकर मलाईरहित दूध, फल, रस, कुछ समय गपशप लगाना, खेलना एवं सकारात्मक सोच छाछपर रहनेका प्रयास करें। आठ-दस गिलास पानीका स्वयं आपके लिये एवं परिवारके लिये हितकर होगा। न चाहनेपर अपने विचार किसीपर भी न थोपें। परामर्शपर सेवन करें, जिससे मूत्र-संस्थान विधिवत् कार्यशील रहे। अपनी सलाह अवश्य दें, किंतु मानने-न-माननेपर सदैव शनै:-शनै: सायंकालीन भोजन छोड़ दें, रात्रिमें खाली पेट सम रहें। गीताके अध्याय १२ के १३-१९वें श्लोकमें रहनेसे आराम मिलेगा। सप्ताहमें एक दिन, न हो तो १५ दिनमें एक दिन वर्णित सद्गुणोंको अपनानेसे गृहस्थमें रहते हुए भी वानप्रस्थ उपवास अवश्य रखें। केवल दूध-पानीपर रहें। असमर्थता एवं संन्यासका जीवनानन्द प्राप्त किया जा सकता है। होनेपर दूध, फल एवं रस लें। इसपर भी तृप्ति न हो तो शारीरिक अवस्थाके अनुसार वर्षमें १-२ बार तीर्थाटनपर सीमित मात्रामें फलाहारी भोजन करें। गरिष्ठतासे अवश्य जाना भी उत्तम होगा, किंतु बढ़ती आयुके साथ किसीका साथ होना अपरिहार्य है। बचें, अन्यथा उपवासका उद्देश्य ही समाप्त हो जायगा। प्रात:कालीन भोजनके बाद विश्राम एवं सायंकालीन भोजनके शरीरकी अस्वस्थताके कारण अत्यन्त आवश्यक होनेपर ही औषधिका सेवन करें। मनसे स्वस्थ रहने, पश्चात् सामर्थ्यानुसार भ्रमण अवश्य करें। नियमित प्राणायाम, व्यायाम, साधारण योगासन एवं प्राय: सभी घरोंमें पूजा-स्थल या मन्दिर होते हैं, भ्रमणकर स्वयंको पूर्णतः निरोग मानते हुए उत्तम स्वास्थ्य पारिवारिक सामंजस्य बनाये रखनेके लिये प्रात:काल आरतीके एवं आनन्दमय जीवनका उपभोग करें। रात्रिमें सोनेसे पूर्व उपरान्त परिवारके अधिकाधिक सदस्योंके साथ कीर्तन, सत्संग अवश्य करें। सप्ताहमें कम-से-कम एक बार एवं दिनभरके क्रियाकलापोंपर एक विहंगम दृष्टि डालकर अवांछित कार्योंके लिये हृदयसे पश्चात्तापकर परमात्मासे त्योहारोंके अवसरपर सम्पूर्ण परिवारके साथ मिल-बैठकर क्षमा माँगते हुए उनकी पुनरावृत्तिसे बचानेके लिये निवेदन सामूहिक भोजनका आनन्द लें। परिणामत: राग-द्वेष आदि करें। तदुपरान्त उस परम पिताका ध्यान करते हुए गहरी दोषोंसे मुक्त रह सकेंगे एवं छोटे बालक भी संस्कारित होंमे॥त्रुश्<del>राह्मभव्यञ्चरकेत्वर्श्वहारांकरें।।श्वरहारांकश्रेशकार्यहार्युग्रिश</del>ावित्रह्में व्योजसा<u>र्वे</u> WITH LOVE BY Avinash/Sha

अनजानमें भगवान्के नामोंका संकीर्तन करनेसे मनुष्यके

सारे पाप भस्म हो जाते हैं।' भगवान्के पार्षदोंने यमदूतोंको भागवत-धर्मका पूरा-पूरा निर्णय सुना दिया

और अजामिलको यमदुतोंके पाशसे छुडाकर मृत्युके

मुखसे बचा लिया। भगवान्के पार्षद वहीं अन्तर्धान हो गये। अजामिलने भगवान्के पार्षदोंके दर्शनजनित

आनन्दमें मग्न होकर उन्हें सिर झुकाकर प्रणाम किया।

सर्वपापहारी भगवान्की महिमा सुननेसे अजामिलके

हृदयमें शीघ्र ही भक्तिका उदय हो गया और वह

अपने पापोंको याद करके पश्चात्ताप करने लगा। अजामिलके चित्तमें संसारके प्रति तीव्र वैराग्य हो

गया। वह सबके सम्बन्ध और मोहको छोड़कर हरद्वार

चला गया। वहाँ उसने योगमार्गका आश्रय लेकर

परमात्माका साक्षात् कर लिया। तब उसने देखा कि

उसके सामने वे ही चारों पार्षद, जिन्हें उसने पहले

देखा था, खडे हैं। अजामिलने सिर झुकाकर उन्हें

प्रणाम किया और उस तीर्थस्थानमें गंगाके तटपर

अपना शरीर त्याग दिया और तत्काल भगवानुके

पार्षदोंका स्वरूप प्राप्तकर उन पार्षदोंके साथ स्वर्णमय

विमानपर आरूढ़ होकर आकाशमार्गसे भगवान्

लक्ष्मीपतिके निवास-स्थान वैकुण्ठको चला गया।

शुकदेवमुनि राजा परीक्षितको यह वृत्तान्त सुनाकर

कहते हैं—'देखो! अजामिल-जैसे पापीने मृत्युके समय

पुत्रके बहाने भगवान्के नामका उच्चारण किया। उसे

भी वैकुण्ठकी प्राप्ति हो गयी। फिर जो लोग श्रद्धाके साथ भगवन्नामका उच्चारण करते हैं, उनकी तो बात

ही क्या है?'

वेश्याके साथ विहार करते देखा और उसका मन बिगड

गया। वह धैर्य और ज्ञान खोकर उसकी ओर आकर्षित

हो गया। उसने अपने पिताकी सारी सम्पत्ति उस वेश्यापर

लुटा दी तथा अपनी कुलीन नवयुवती और विवाहिता पत्नीतकका त्याग कर दिया। वह उस वेश्यारूपी दासीके

साथ ही रहने लगा और बटोहियोंको लूटकर, जुएमें छल करके, धोखाधड़ीसे धन चुराकर दासीका पेट भरता था।

उस दासीसे अजामिलके दस पुत्र हुए। सन्तोंके कहनेसे

उसने सबसे छोटे बेटेका नाम 'नारायण' रखा। अट्ठासी

वर्षकी उम्रमें जब वह मरने लगा, तो मरते समय मोह

तथा यमदूतोंके भयके कारण व्याकुल होकर उसने ऊँचे स्वरसे कुछ दूरीपर खेल रहे अपने पुत्र नारायणको

पुकारा। भगवान्के पार्षदोंने देखा कि वह मरते समय

हमारे स्वामी 'नारायण'का नाम ले रहा है, उनके

नामका कीर्तन कर रहा है, अतः वे बड़े वेगसे झटपट

वहाँ आ पहुँचे और यमराजके दृत, जो अजामिलके

शरीरमेंसे उसके सुक्ष्म शरीरको खींच रहे थे, उन्हें

बलपूर्वक रोक दिया। यमदूतोंने भगवान् विष्णुके पार्षदोंके

समक्ष अजामिलके पापमय जीवनका वर्णन किया तथा

कहा कि इसने अबतक अपने पापोंका कोई प्रायश्चित

भी नहीं किया है। इसलिये अब हम इस पापीको

दण्डपाणि यमराजके पास ले जायँगे। वहाँ यह अपने

पापोंका दण्ड भोगकर शुद्ध हो जायगा। भगवानुके

पार्षदोंने कहा—'यमदूतो! इसने कोटि-कोटि जन्मोंकी

पापराशिका पूरा-पूरा प्रायश्चित्त कर लिया है, क्योंकि

इसने विवश होकर ही सही, भगवान्के परम कल्याणमय

(मोक्षप्रद) 'नारायण' नामका उच्चारण तो किया है।

महाराज सगरके वंशमें विश्वसहके पुत्र हुए हैं-भाँति मनुष्यको प्रत्येक समय मृत्युको सिरपर खड़ी महाराज खट्वांग। जन्मसे ही वे धार्मिक और भगवद्भक्त देखकर भोगोंसे चित्त हटाकर उसे तुरन्त भगवानुके थे। स्वर्गादि लोक देनेवाले सकाम कर्मींमें उनका अनुराग चरणोंमें ही लगा देना चाहिये। नहीं था तथा वे लक्ष्मी, राज्य, ऐश्वर्य, स्त्री-पुत्र तथा (३) राजा बलि परिवारमें भी आसक्त नहीं थे। कर्तव्य-बुद्धिसे भगवत्सेवा कहा जाता है कि राजा बलि पूर्वजन्ममें जुआरी

मानकर ही वे प्रजापालन करते थे। उन्होंने शरणागतकी रक्षाका व्रत ले रखा था। उनका इतना महान् पराक्रम तथा प्रभाव था कि जब भी देवता असुरोंसे पराजित हो जाते, तब वे इनकी शरण लेते। उन दिनों असुर प्रबल हो रहे थे। महाराजको बार-बार देवताओंकी सहायता करने जाना पड़ता था। एक बार असुरोंको पराजितकर महाराज स्वर्गसे पृथ्वीपर लौट रहे थे, तब देवताओंने उनसे इच्छानुसार वरदान माँगनेको कहा। उन्होंने सोचा—'यदि जीवनके अधिक दिन शेष हों तब तो यह कर्तव्यपालन, राज्यशासन आदि ठीक ही हैं, किंतु यदि आयु थोड़ी ही

(२) राजर्षि खट्वांग

मनुष्य-शरीरका पाना कठिन है। इसी शरीरसे भवसागर पार न किया तो फिर पता नहीं किस योनिमें जाना पड़े। ये देवता भी भोगोंमें लिप्त रहते हैं तथा स्वयं आत्मज्ञानरहित हैं, ये मुझे कैसे मुक्त कर सकते हैं ?' यह सोचकर उन्होंने देवताओंसे पूछा, 'आपलोग कृपाकर पहले यह बताइये कि मेरी आयु कितनी शेष है ?' देवताओंने बतलाया कि महाराज! आपकी आयु दो घड़ी ही बाकी है। देवता दीर्घायु दे सकते थे, किंतु महाराजको शरीरका मोह नहीं था और न ही भोगोंमें आसक्ति थी। वे शीघ्रातिशीघ्र परम

हो तो इस प्रकार भोगोंमें लगे रहना मूर्खता होगी। इस

दानवीर राजा बलि हुआ।

पवित्र भारतवर्षमें पहुँचे और भगवान्के ध्यानमें मग्न हो गये। महाराज खट्वांगका मन एकाग्र भावसे भगवान्में लगा था। शरीर कब गिर गया, इसका उन्हें पतातक नहीं लगा। इससे यह शिक्षा मिलती है कि महाराजकी आयु तो उस समय दो घड़ी बची थी, किंतु हम सबको यह भी पता नहीं कि दो पल भी आयु शेष है या नहीं। भगवानुको पानेमें कुछ दस, बीस या सौ-दो सौ वर्ष नहीं

लगते। सच्चे हृदयसे एक बार पुकारनेपर वे आ जाते हैं।

चित्तको एकाग्र भावसे उनके चरणारविन्दोंमें लगाकर

थे। एक दिन जुआरीको जूएमें कहीं कुछ पैसे मिले। उसे एक वेश्यासे अतिशय प्रेम था। उन पैसोंसे उसने एक माला अपनी प्रियतमाके लिये खरीदी। माला हाथमें लिये वह अपनी प्रियतमाका चिन्तन करते हुए जा रहा था कि

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

एक क्षणमें प्राणी उन्हें पा लेता है। महाराज खट्वांगकी

भाग ९६

एक पत्थरसे ठोकर खाकर वह गिर पड़ा और मरणासन्न हो गया। उसने सोचा यह माला मैं अपनी प्रियतमातक तो नहीं पहुँचा पाऊँगा, किंतु किसी महात्मासे ऐसा सुना है कि अगर कोई वस्तु शिवार्पण कर दी जाय तो हमारा कल्याण होता है। इस सद्भावसे उसने माला भगवान्

शंकरको अर्पण कर दी। मरनेपर यमराजके दूत उसे

यमराजके पास ले गये। यमराजने चित्रगुप्तसे जुआरीके

पाप-पुण्यका हिसाब पूछा तो चित्रगुप्तने कहा—'प्रभो! यह तो जन्म-जन्मान्तरका पापी है। बस! थोड़ी देर पहले इसने एक वेश्याके लिये खरीदी हुई माला भगवान् शंकरको अर्पित की है, यही इसका पुण्य है।' यमराजने जुआरीको कहा कि तुम पहले पुण्य भोगना चाहोगे या

पाप? जुआरीने सोचा मेरे पापोंका तो अन्त नहीं है, थोड़ा-सा मेरा पुण्य है, उसे ही पहले भोग लूँ। यमराजने उसे दो घड़ीके लिये इन्द्रलोकका राज्य दे दिया। जुआरीने इन्द्रासनपर तुलसी रखी और ब्राह्मणोंको बुलाकर स्वर्गकी चिन्तामणि, नन्दनवन, ऐरावत हाथी, अमृत-

कुण्ड आदि सारी सम्पत्ति दान कर दी। दो घड़ीके पश्चात् इन्द्र अपना लोक माँगने आये तो देखा कि जुआरीने सारा साम्राज्य और अमुल्य सम्पत्तियाँ तो दान कर डाली हैं। इन्द्रद्वारा यमराजसे जुआरीकी शिकायत

करनेपर यमराजने विचार करके कहा कि अब तो यह नरकोंमें नहीं जायगा, इन्द्र ही बनकर रहेगा, क्योंकि इसने प्रचुर पुण्य कमा लिया है। यही जुआरी बादमें

सद्योमुक्तिके कुछ प्रेरणास्पद आर्ष दृष्टान्त संख्या १० ] इस प्रसंगसे हमें यह शिक्षा मिलती है कि यद्यपि दी। राजाने ऋषिद्वारा अपना अपमान समझकर अपने जुआरीने अपनी प्रियतमा वेश्याको सौंपी जानेवाली माला धनुषकी नोकसे एक मरा साँप उठाकर ऋषिके गलेमें डाल दिया और राजधानी लौट आये। शमीक ऋषिके मृत्युके समय भगवान् शिवको अर्पण कर दी थी, किंतु भगवान्ने श्रीमद्भगवद्गीताके नवें अध्यायके छब्बीसवें तेजस्वी पुत्र शृंगी ऋषिने जब यह सब जाना तो राजा श्लोकके भावके अनुसार 'जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेमसे परीक्षितको शाप दे दिया कि आजके सातवें दिन तक्षक पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध नाग राजाको डस लेगा और उसकी मृत्यु हो जायगी। बुद्धि निष्काम प्रेमी भक्तका प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ राजमहलमें आकर राजाको अपनी भूलका स्मरण हुआ वह पत्र-पुष्प आदि मैं सगुण रूपसे प्रकट होकर और वे अपने द्वारा किये गये अपराधका पश्चात्ताप प्रीतिसहित खाता हूँ।' उस जुआरीके 'शिवार्पण'को करने लगे। इसी समय उन्हें शापका पता लगा। उन्हें सहर्ष ग्रहण किया और पुण्यस्वरूप उसे दो घडीहेत् तनिक भी दु:ख नहीं हुआ। अपने पुत्र जनमेजयको इन्द्रलोक मिला। इस दो घडीका भी उसने पुरा सदुपयोग राज्यका भार सौंपकर वे गंगातटपर जा बैठे और सात किया और अपने जीवनको सार्थक कर लिया। ऐसे ही दिनोंतक निर्जल व्रतका निश्चय किया। वहाँ अनेक व्यक्ति चाहे तो थोड़े समयमें भी स्वयंको भगवान्के ऋषि-मुनि आये। राजा परीक्षितने उनसे अपने कल्याणका अर्पण करके अपना उद्धार कर सकता है। उपाय पूछा। उसी समय घूमते हुए व्यासनन्दन शुकदेवमुनि (४) राजा परीक्षित भी वहाँ आ गये। परीक्षितने उनका पूजन किया और कुरुवंशके एकमात्र वंशज सुभद्राकुमार अभिमन्युकी कहा कि आप योगियोंके भी परम गुरु हैं, इसलिये मैं पत्नी उत्तराके गर्भमें आये परीक्षितको कौन नहीं जानता, आपसे परम सिद्धिके स्वरूप और साधनके सम्बन्धमें जिसकी रक्षाके लिये भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं उत्तराकी प्रश्न कर रहा हूँ। राजा परीक्षितने कहा—भगवन्! जो पुकारपर उसके गर्भमें प्रवेश कर गये और गर्भस्थ पुरुष सर्वथा मरणासन्न हैं, उनको क्या करना चाहिये शिशुको चतुर्भुजरूपमें शंख, चक्र, गदा, पद्मके साथ और साथ ही यह भी बतलाइये कि मनुष्यमात्रको क्या दर्शन देते हुए अपनी गदाको गर्भके चारों ओर तेजीसे करना चाहिये? वे किसका श्रवण, किसका जप, घुमाते हुए अश्वत्थामाके ब्रह्मास्त्रको नष्ट करते रहे। बड़े किसका स्मरण और किसका भजन करें तथा किसका होनेपर पाण्डवोंने राजा परीक्षितको राज्य सौंपकर हिमालयकी त्याग करें? इन्हीं प्रश्नोंका उत्तर शुकदेवमुनिने सात दिनोंमें श्रीमद्भागवतके रूपमें राजा परीक्षितको दिया। ओर प्रस्थान किया। राजा परीक्षितने एक दिन दिग्विजय करते समय शूद्र कलिको गौरूपी पृथ्वीदेवी और धर्मस्वरूप अन्तमें राजा परीक्षितने अपना चित्त भगवान्में लगा वृषभको प्रताङ्ना देते देखा। उन्होंने तलवार खींचकर दिया। सातवें दिन तक्षक नाग ब्राह्मणके रूपमें राजा उसे मारना चाहा, किंतु याचना करनेपर उसे रहनेके लिये परीक्षितके पास गया और उन्हें डँस लिया। राजर्षि परीक्षित तक्षकके डँसनेसे पहले ही ब्रह्ममें स्थित हो जुआ, शराब, स्त्री, हिंसा और स्वर्ण—ये पाँच स्थान दे दिये। इन पाँचोंसे प्रत्येक कल्याणकामी पुरुषको सावधान चुके थे। अब तक्षकके विषकी आगसे उनका शरीर

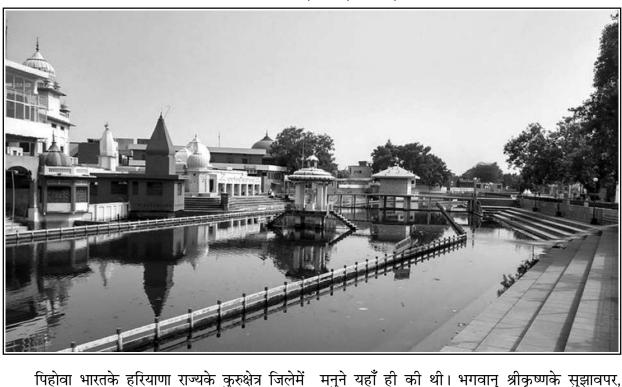
रहना चाहिये, अन्यथा उसका पतन हो सकता है। एक दिन राजा परीक्षित आखेट करते हुए भूख-

सबके सामने ही जलकर भस्म हो गया। इस दृष्टान्तसे हमें शिक्षा मिलती है कि राजा परीक्षितने मात्र सात दिनोंमें अपना कल्याण कर लिया।

प्याससे व्याकुल शमीक ऋषिके आश्रम पहुँचे और हमारी मृत्यु भी इन्हीं सात दिनोंमेंसे एक दिन होनी है, उनसे जल माँगा। ध्यानस्थ होनेके कारण ऋषिने कोई उत्तर नहीं दिया। परीक्षित स्वर्णका मुकुट पहने हुए थे, जिसका हमें ज्ञान नहीं है। अत: मनुष्यमात्रको अपना जिसमें कलिने प्रवेश किया और राजाकी बृद्धि पलट कल्याण करनेमें सदैव सचेष्ट रहना चाहिये।

तीर्थ-दर्शन

#### हरियाणाका पिहोवा (पृथूदक) तीर्थ ( डॉ० श्रीरनबीर सिंहजी, एम०टी०एम०, पी-एच०डी० )



भी पहले अस्तित्वमें था। सरस्वती नदीके तटपर पृथुदक तीर्थके पास हिन्दू वंशावली रजिस्टर संरक्षित है। अपने मन्दिरों और अन्य धार्मिक स्थलोंके लिये यह

सरस्वती नदीके तटपर स्थित एक पवित्र शहर है, जिसके बारेमें माना जाता है कि यह महाभारतकालसे

पर्यटकोंके बीच प्रसिद्ध है और इसके परिणामस्वरूप यह एक तीर्थस्थलके रूपमें विकसित हुआ है।

पिहोवा, जिसे पुराणोंमें 'पृथूदक' के नामसे भी

जाना जाता है, कुरुक्षेत्रसे लगभग २५ किलोमीटर पश्चिममें स्थित है। 'पृथूदक' शब्दका अर्थ है—

'पृथ्वीका सरोवर।' यह 'कुरुक्षेत्र-तीर्थयात्रा'के सबसे महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थलोंमेंसे एक है। इस स्थानपर,

वेनके पुत्र राजा पृथुने अपने पिताका अन्तिम संस्कार किया था। किंवदन्तीके अनुसार, प्रजापति (ब्रह्मा)-ने पृथुदकमें ही सृष्टिकी रचना की थी। ऋषि विश्वामित्र, युधिष्ठिरने अपने पूर्वजों और प्रियजनोंके सम्मानमें यहाँ पिण्डदान किये, जिन्होंने महाभारत-युद्धमें अपने प्राणोंकी आहुति दी। वास्तवमें यह तीर्थ दिवंगतोंको

पिण्डदान देने और उनकी शान्ति एवं मोक्षके लिये प्रार्थना करनेके लिये सबसे पवित्र स्थानके रूपमें प्रतिष्ठित है। गुर्जर-प्रतिहारकालके दौरान, यह एक

तीर्थस्थानके रूपमें विशेषरूपसे उभरा। पुरालेख साक्ष्यके

अनुसार, गुर्जर-प्रतिहारकालसे भी पहले पृथ्दक एक पवित्र स्थान था। वैष्णव-सम्प्रदायके दो विशाल मन्दिर यहाँ बनाये गये थे। गरीबनाथ मन्दिरमें लगा भोजदेवका

पिहोवा शिलालेख हर्ष-संवत् २७६ (ए॰डी॰ ८८२) विभिन्न स्थानोंपर कई मन्दिरोंके निर्माणका वर्णन करता

है। ९वीं शताब्दीके दौरान, घोडोंके व्यापारियोंने एक घोषणा की कि उनमेंसे प्रत्येक इस मन्दिर, इसके

पुजारी और पिहोवाके अन्य स्थानोंके लिये एक विशेष राशिका योगदान देगा। पिहोवा शहरमें वर्तमानमें दो

वसिष्ठ, शुक्र और अगस्त्य ध्यान एवं तपस्याके लिये इसींपविशंडिस्यानिपर अति देश पर्न समित्रक्ष // dec go (dharma teal के हिए की तालाब ब्रह्माकी और reach (देवा

संख्या १०] हरियाणाका पिहोव	त्रा ( पृथूदक ) तीर्थ ३१
\$	**************************************
सरस्वतीको समर्पित है। हर साल चैत्र अमावस्या	हजारों साल पहलेका है। माना जाता है कि महाभारतका
(मार्च-अप्रैल)-के अवसरपर यहाँ एक बड़ा मेला	युद्ध कई सदियों पहले सरस्वती नदीके तटपर हुआ
लगता है, जिसमें लगभग २ से २.५ लाख भक्त आते	था, जो अब सूख चुकी है। भले ही महाभारत-
हैं, विशेष रूपसे चावल और आटेके गोले बनाकर	युद्धके समयतक नदी सूख चुकी थी, फिर भी यह
पिण्डदान करनेके लिये। हिन्दू अपने पूर्वजों और	एक पवित्र स्थल था, जहाँ लोग अपने पूर्वजोंको
माताओंके अन्तिम संस्कारके लिये पिहोवाकी यात्रा	'पिण्डदान' देते थे। स्थानीय लोककथाओंके अनुसार,
करनेको एक पवित्र जिम्मेदारीके रूपमें मानते हैं,	यह अभी भी 'पितृतीर्थ' के रूपमें जाना जाता है
खासकर उन लोगोंके लिये जो दुर्घटना-जैसी दुर्भाग्यपूर्ण	और प्रयाग या गयासे बहुत पहले पिण्डदानके लिये
परिस्थितियोंमें मारे गये थे। यह भी दावा किया जाता	सबसे पवित्र स्थल माना जाता था। कहा जाता है
है कि सिख गुरुओंने कई मौकोंपर इस मन्दिरका दौरा	कि युद्ध शुरू होनेसे पहले, भगवान् श्रीकृष्ण पाण्डवोंको
किया है, जिसका अर्थ है कि यह स्थल हिन्दू और	सरस्वती माता और उनके पूर्वजोंका आशीर्वाद दिलानेके
सिख धर्मोंकी एकताके बीच एक कड़ीके रूपमें कार्य	लिये इस स्थानपर लाये थे। सरस्वती मन्दिरके
करता है।	प्रवेश-द्वारपर लगे स्तम्भ कई सदियों पुराने हैं।
पिहोवाको एक पवित्र स्थल माना जाता है	वंशावली रजिस्टर—पिहोवा में हिन्दू तीर्थयात्रियोंके
और हरियाणा–राज्य–सरकारने इसकी पवित्रताको बनाये	वंशावली रजिस्टर हैं, जो एक प्रकारसे रिकार्ड हैं।
रखनेके लिये नगरपालिका सीमाओंके भीतर मांसाहारी	<b>पशुपतिनाथ-महादेव-मन्दिर—</b> दक्षिण भारतीय
भोजनकी बिक्रीको अवैध कर दिया है। अदालतके	शैलीका यह राजसी मन्दिर पिहोवा शहरके दक्षिणमें
आदेशके अनुसार कस्बेमें पशु-वधपर भी प्रतिबन्ध	बाबा श्रवणनाथ मठके प्रांगणमें स्थित है। इसके
है। महाभारतके दौरान पिहोवामें अहीरों, विशेषरूपसे	ऊपर और नीचेके खम्भे बहुत आकर्षक हैं। यह
कुरुक्षेत्रकी लड़ाईमें मारे गये भगवान् कृष्णकी सेनाके	मराठाकालके दौरान बनाया गया पिहोवाका सबसे
अहीर सैनिकोंका अन्तिम संस्कार किया गया था।	बड़ा मन्दिर है। गर्भगृहमें एक चारमुखी कसौटी पत्थरका
पिहोवाको अहीरोंके साथ-साथ सभी हिन्दुओं और	लिंग (काठमाण्डू, नेपालमें पशुपतिनाथ-मन्दिरके समान)
सिखोंके लिये एक पवित्र तीर्थस्थल माना जाता है।	है। मन्दिरके सामने एक ऊँचे चबूतरेपर बने गुम्बददार
महाभारत युगके इस शहर पिहोवाको कई	मण्डलकी छतपर शानदार भित्तिचित्र हैं।
लोगोंद्वारा 'मोक्षस्थान'के रूपमें जाना जाता है। यह	<b>प्राचीन शिव-मन्दिर—</b> यहाँ एक प्राचीन शिव-
यात्रियोंके बीच पृथूदक तीर्थ और सरस्वती मन्दिरके	मन्दिर है, जो लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ई० का
लिये प्रसिद्ध है, जिसे हिन्दू पृथ्वीपर सबसे पवित्र	बना है। इस प्राचीन शिव-मन्दिरके प्राचीन स्थलसे
स्थलोंमेंसे एक मानते हैं। ऐसा कहा जाता है कि	हिन्दू देवी-देवताओंकी कई मूर्तियाँ मिली हैं। इन
सरस्वती मन्दिरके स्वच्छ जलमें डुबकी लगानेसे	निष्कर्षींके अनुसार, यह पिहोवा शिलालेखोंमें वर्णित
व्यक्तिके सभी पाप दूर हो जाते हैं। सरस्वती-	विष्णु मन्दिरोंमेंसे एकका स्थान था। विश्वामित्रका
मन्दिर-परिसर और पृथूदक तीर्थ भी कुरुक्षेत्रकी ४८	टीला इस शहरका एक और विष्णु-मन्दिर है। राज्य
कोस परिक्रमाका हिस्सा है, जो तीर्थस्थलोंका एक	पुरातत्व एजेन्सीने इस स्थानसे कुछ मूर्तियाँ ली हैं।
क्षेत्र है। कुरुक्षेत्रकी ४८ कोस परिक्रमामें पृथूदक	हालाँकि, उनमेंसे कईको आधुनिक मन्दिरों और प्राचीन
सबसे प्रमुख तीर्थींमेंसे एक ऐतिहासिक शहर है, जो	मन्दिरोंकी दीवारोंपर स्थायी रूपसे चिपका दिया

\* \* गया है। नवनिर्मित प्राचीन शिव-मन्दिरके कई अवसरपर यहाँ एक बड़ा मेला लगता है। इस प्रवेशद्वारोंपर वर्तमानमें कम-से-कम तीन पत्थरके अवसरपर मन्दिर-न्यास तीर्थयात्रियोंके लिये नि:शुल्क भोजन और ठहरनेकी व्यवस्था करता है। द्वार मौजूद हैं। इनमेंसे दो विशेषरूपसे महत्त्वपूर्ण कार्तिकेय मन्दिर—पिहोवामें और उसके हैं; क्योंकि वे नवग्रह, सप्तमातृका और देवीके आँकड़े चित्रित करते हैं, गंगा और यमुना, साथ-आसपास कई तीर्थ, घाट और मन्दिर पाये जाते हैं, ही-साथ ललितबिम्बाके ऊपर एक विष्णु छवि, जो कुरुक्षेत्रसे २७ किलोमीटर पश्चिममें स्थित हैं। यह दर्शाता है कि यहाँ एक विष्णु-मन्दिर था। यहींपर भगवान् कार्तिकेयका मन्दिर स्थित है। पौराणिक कथाओंके अनुसार भगवान् कृष्णने महाभारत-युद्धमें संगमेश्वर-महादेव-मन्दिर (अरुणै)—यह मारे गये १८ अक्षौहिणी सेनाके लाखों योद्धाओंके मन्दिर पिहोवासे लगभग ४ किलोमीटरकी दुरीपर अरुणाई

शहरके पास अरुणाई और सरस्वती निदयोंके संगमपर स्थित है। महाभारतके अनुसार, चारों देवताओंको यहाँ एक साथ लाया गया था, और यहाँ स्नान करनेसे भक्तोंको सभी पापोंसे मुक्ति मिल सकती है और उन्हें चार हजार अश्वमेध यज्ञोंमें भाग लेनेके बराबर पुण्य प्राप्त होता है। पौराणिक कथाके अनुसार, विश्वामित्र और वसिष्ठ—इन दो उत्कृष्ट ऋषियोंमें भयंकर प्रतिद्वनिद्वता थी। विश्वामित्रने एक बार वसिष्ठकी

हत्याके लक्ष्यसे सरस्वतीको अपने आश्रममें बुलाया। सरस्वती वसिष्ठको अपने आश्रममें ले आयीं, लेकिन बादमें उन्होंने 'ब्रह्महत्या'के पापसे बचनेके लिये उन्हें विश्वामित्रके आश्रमसे वापस ले लिया। विश्वामित्र उससे क्रोधित हो गये और उन्हें यह कहते हुए

शाप दिया कि उनका पानी खुनी हो जायगा। बादमें पवित्र ऋषियोंने अरुणाई (जो ब्रे कार्योंको मिटानेमें सक्षम था)-का पवित्र जल लाकर उसे सरस्वतीमें डाल दिया और सरस्वती एक बार फिर विश्वामित्रके

शापके कारण एक वर्षतक पीडित होनेके बाद शुद्ध हो गयी। कहा जाता है कि जो कोई भी अरुणाई और सरस्वतीके संगमपर यहाँ स्नान करता है, वह तीन दिनोंके उपवासके बाद सभी पापोंसे मुक्त हो

नामपर रखा गया है; क्योंकि आदिमहदारके वेशमें

जाता है। इस स्थलका नाम भगवान् संगमेश्वर महादेवके

पूरे साल आते रहते हैं, जो पुराने स्थानोंकी भव्यताका दर्शन करनेका आनन्द लेते हैं। जलवायु परिस्थितियोंके कारण पिहोवाकी यात्राका सबसे अच्छा मौसम सितम्बरसे मार्चके अन्ततकका होता है। हवाई-मार्गसे—पिहोवाका निकटतम हवाई अड्डा

चण्डीगढ़ है, जो लगभग ११० किलोमीटर दूर है। हवाई

अड्डेपर पहुँचनेके बाद आप या तो कैब किरायेपर लेकर

आ सकते हैं या पिहोवाके लिये बससे आ सकते हैं।

सम्मानमें युधिष्ठिरसे दो दीपक जलवाये थे। ये दीपक,

जिनके बारेमें कहा जाता है कि तबसे आजतक

कुरुक्षेत्र-परिक्रमा-क्षेत्रमें स्थित पिहोवामें अत्यधिक गर्मी

पडती है, जिससे यह ग्रीष्म ऋतुमें, आम यात्रियोंके लिये अनुपयुक्त हो जाता है। परंतु हिन्दू भक्त यहाँ

पिहोवा आनेका सबसे अच्छा समय—

लगातार प्रज्वलित हैं।

भाग ९६

चण्डीगढ्से आपको अपनी मंजिलतक पहुँचनेमें करीब २ घण्टेका समय लगेगा। रेलद्वारा—पिहोवा कुरुक्षेत्र जिलेमें स्थित है और कुरुक्षेत्र जंक्शनके लिये ट्रेन और फिर वहाँसे बस या कैबसे पिहोवातक पहुँचा जा सकता है। कुरुक्षेत्र जंक्शन

पिहोवासे लगभग ३० किलोमीटर दूर है।

कारद्वारा पिहोवा जानेके लिये सडक-मार्गसे यात्रा करना सबसे अच्छा और सुविधाजनक तरीका है। कारसे

पिहोवा आसानीसे पहुँचा जा सकता है। शिव संगमके पास विराजमान हैं। हर साल शिवरात्रिके

मुक्तिप्रदाता है त्याग और सेवाका बल संख्या १० ] मुक्तिप्रदाता है त्याग और सेवाका बल (श्रीताराचन्दजी आहूजा) प्रत्येक मानवकी मौलिक माँग अखण्ड और अनन्त नहीं, असम्भव भी है। जिसको ईश्वरकी कृपासे त्यागका सुखकी है। विषय-वस्तुकी प्राप्ति और अनुकूलतामें तो बल मिल गया, वह व्यक्ति दु:खके बन्धनसे सदाके लिये मानव सुखका अनुभव करता है, पर कुछ छूट जानेपर मुक्त हो गया; क्योंकि त्यागसे ही वैराग्य मिलता है और अथवा प्रतिकूलताकी परिस्थितिमें वह घोर दु:खमें डूब त्यागसे ही अनासक्तिका भाव उत्पन्न होता है। जाता है। बाह्य जगत् परिवर्तनशील है अर्थात् सदैव एक सुखी व्यक्ति यदि सुखसे फूला नहीं समा रहा है, समान रहनेवाला नहीं है, अत: सुख और दु:ख दोनों तो यह उसका बड़ा भारी भ्रम है; क्योंकि आज वह जिस ही अवस्थाओंका आना-जाना लगा रहता है। इस सुखसे प्रसन्नताका अनुभव कर रहा है, वह सुख सदैव संसारमें सुख-दु:ख, मान-अपमान, संयोग-वियोगकी रहनेवाला नहीं है। प्रकृतिके नियमानुसार वह सुख एक स्थितियाँ निरन्तर बनी रहनेवाली हैं। दु:ख आया है, तो निश्चित अवधिके पश्चात् जीवात्माका साथ छोड़ देगा। जायगा भी अवश्य और यदि मान-सम्मान मिला है, तो ऐसे व्यक्तिके जीवनसे जब सुख विदा होता है, तो कभी-न-कभी अपमान और तिरस्कारका दंश भी निश्चय ही वह दु:खके सागरमें डूब जाता है। इसलिये अवश्य झेलना पडेगा। सुखमें विवेक बना रहे और सुखका बन्धन भी मिट महापुरुषोंका कथन है कि वास्तविक सुख संसारके जाय, इसके लिये हमारे धर्मशास्त्रोंमें एक ही उपाय भौतिक पदार्थींमें नहीं है। शाश्वत और वास्तविक सुख बताया गया है और वह रामबाण उपाय है—सेवा। तो वह है, जहाँ सुख और दु:खके बन्धनसे हमारी चेतना सेवासे मनुष्यके जीवनमें अहंकारका भाव तिरोहित हो मुक्त हो सके; मान और अपमान दोनोंका बन्धन टूट जाय जाता है और उसके स्थानपर विनम्रताका भाव प्रस्फुटित और संयोग-वियोगमें समता प्राप्त हो जाय। परम संत होने लगता है, जिसका प्रभाव यह होता है कि सुखकी स्वामी शरणानन्दजी महाराज भगवान्से विनती करते हुए स्थिति छिन जानेपर भी वह दुखी नहीं होता। विनम्रताके कहते हैं—'हे मेरे नाथ! आप अपनी सुधामयी, सर्वसमर्थ, कारण उसका मानसिक सन्तुलन बना रहता है। पतितपावनी अहैतुकी कृपासे दुखी प्राणियोंके हृदयमें सेवाका अर्थ है दूसरेको सुख पहुँचाना और वह त्यागका बल एवं सुखी प्राणियोंके हृदयमें सेवाका बल भी बिना किसी प्रतिफल और आशाके। सेवा कहीं भी, प्रदान करें, जिससे वे सुख-दु:खके बन्धनसे मुक्त हो, किसी भी समय की जा सकती है। भूखेको भोजन कराकर, नंगेको वस्त्र प्रदानकर और रोगीको औषधि आपके पवित्र प्रेमका आस्वादनकर कृतकृत्य हो जायँ।' उपर्युक्त प्रार्थनामें इस स्थितिकी अनुभूतिहेतु एक सुलभ कराकर सेवाका पुण्य कमाया जा सकता है। सेवा बिना धन खर्च किये भी की जा सकती है। किसी वृद्ध सुन्दर मार्ग दिया गया है। जो दुखी है उसके लिये त्यागका बल तथा जो सुखी है उसके लिये सेवाका बल और लाचार व्यक्तिको सहायता देकर भी हम सेवा कर ही एकमात्र वह मार्ग है, जिससे दुखी व्यक्ति दु:खके सकते हैं, दुखी व्यक्तिको सान्त्वनाके दो शब्द सुनाकर तथा सुखी व्यक्ति सुखके बन्धनसे मुक्त हो सकता है। हम उसके मनको हलका कर सकते हैं।

दुखी व्यक्ति दुखी इसिलये होता है; क्योंकि वह देना यिद लक्ष्मी भगवान् विष्णुके चरणोंमें सेवारत है, नहीं चाहता। इसिलये उसके लिये 'त्यागका बल' कहा तो वह प्रभुसे मिलाप करानेवाली है। अर्थात् यिद धन गया है। 'त्यागाच्छान्ति:' अर्थात् त्यागसे शान्ति मिलती भगवान्की सेवामें लगता है, तो वह सुख प्रदान करता है। बिना त्यागके शान्तिका प्राप्त हो पाना कठिन ही हुआ जीवको देहके बन्धनसे भी मुक्त कर देता है। इसके

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* विपरीत यदि धन प्रभुकी सेवामें नहीं लगा, तो वह धन जिस फूलके आप पहले बीस रुपये देनेको तैयार नहीं निरर्थक ही नहीं, घोर नरकोंमें भी डालनेका सबब बन थे, उसके लिये आपने दस हजार रुपये क्यों दिये?' जायगा। ईश्वरकी सेवामें लगाया गया धन मुक्तिका द्वार जिदमें आकर एक फूलके दस हजार रुपये देना तो कोई खोलता है और हमारे अन्दर उदारता एवं प्रसन्नताका समझदारी नहीं है। सेठने कहा—'इस सौदेसे मुझे जो भाव भी पैदा करता है। वह हमें कितना उदार बना सबक मिला है, उसकी कीमत दस हजार रुपयेसे भी सकता है, इस बातको एक बोधकथाद्वारा सरलतासे कहीं अधिक है। मैंने आज यह जाना कि एक दिनकी समझा जा सकता है। खुशीके लिये नवाब यदि पाँच हजार रुपये खर्च कर एक बार एक धनवान् व्यक्ति ईश्वरदर्शनहेत् अपने सकता है तो क्या मैं अपने दातारको प्रसन्न करनेके लिये घरसे देवालयकी ओर चला। रास्तेमें उसने सोचा कि उसकी सेवामें दस हजार भी नहीं खर्च कर सकता। आज वह भगवान्को कमलका पुष्प अर्पितकर प्रसन्न जिसने मुझे करोडों रुपये देकर मालामाल कर रखा है।' आज सेठ महँगा फूल लेकर भी इतना अधिक प्रसन्नचित्त करेगा। दैवयोगसे उसे एक फूलवाला मिल भी गया। उसने फूलवालेसे पूछा—'क्या लोगे एक फूलका?' था, जितना वह पहले कभी नहीं था; क्योंकि आज उसने फूलवालेने कहा—'बीस रुपये।'सेठने कहा—'दस रुपये भगवान्की कृपाका अहसास अपने अन्त:करणसे कर ले लो।' फूलवाला दस रुपये लेनेको तैयार हो गया। लिया था। कहनेका तात्पर्य यह है कि सेवाका भाव इधर उसी समय एक नवाब अपनी प्रेयसीके साथ उधरसे मनुष्यको इतना उदार और प्रसन्नचित्त कर देता है कि गुजरा। प्रेयसीने वही फूल लेनेकी इच्छा जतायी। वह कुछ भी करनेके लिये तत्पर हो जाता है। फुलवालेने फिर बीस रुपयेमें फुल देनेकी बात कही। धर्मशास्त्रोंके कथनानुसार दीन-हीन और दुखी नवाब पचास रुपये देनेके लिये उद्यत हो गया। तब सेठने जीवोंकी सेवा करना मनुष्यका परमधर्म है। वह तन-मन-धनसे जितनी सेवा करता है, उसे उतनी ही अधिक फूलवालेसे कहा—'भाई! यह फूल तुमने मुझे दस रुपयेमें बेच दिया है, अब तुम यह फूल इन्हें कैसे दे सकते हो?' प्रसन्नता और भगवानुकी कृपा प्राप्त हो जाती है; क्योंकि फूलवालेने कहा—'मैंने अभीतक यह फूल आपको दिया भगवान् दीनोंमें अधिक रहता है। इसीलिये उसे दीनानाथ नहीं है। मुझे तो जो अधिक दाम देगा, मैं उसीको ही भी कहा जाता है। सेवा जहाँ व्यक्तिके मनको निर्मल यह फूल दुँगा।' तब सेठने कहा—' अच्छा! मैं इस फूलके और पवित्र करती है, वहीं उसको सुख और दु:खके आपको सौ रुपये देता हूँ।' नवाबने कहा—'मैं आपको बन्धनसे भी मुक्त कर देती है। जब कोई दुखी व्यक्ति पाँच सौ रुपये देता हूँ, फूल मुझे मिलना चाहिये।' सेठने दु:खके तथा सुखी व्यक्ति सुखके बन्धनसे मुक्त हो जाता है तो वह भगवान्के पवित्र प्रेमका आस्वादन करनेके उससे भी ऊँची कीमत अदा करनेकी बात कहते हुए एक हजार रुपयेमें फूल लेनेका प्रस्ताव रखा। लेकिन नवाब योग्य बन जाता है। महापुरुषोंका कथन है कि जहाँ कहाँ पीछे हटनेवाला था। उसने फूलकी बोली पाँच हजार बन्धन नहीं है, वहीं ईश्वर है, वहीं प्रभु-प्रेमकी दिव्य रुपये लगा दी। तब सेठने भी जोशमें आकर दस हजार गंगा प्रवाहित होती है, जिसमें अवगाहनकर साधक रुपये देनेकी बात कही। यह सुनते ही नवाब अपनी कृतकृत्य हो जाता है। इसलिये सन्त और शास्त्र कहते प्रेयसीको लेकर वहाँसे चल दिया और सेठने दस हजार हैं कि त्याग और सेवा मुक्तिके अमोघ साधन हैं। इनका रुपयेमें वह फूल खरीद लिया। आश्रय लेना चाहिये ताकि मनुष्य जीवनकी सार्थकताको Hinविधाइम केहेट एक ड्रांकिट मेस्केड: अविडट . वेर्गुर्ख्म ब्रामुख िस्स्रियोप्त । LOVE BY Avinash/Sha

िभाग ९६

दक्षिणके सन्त श्रीराघवेन्द्र स्वामी सन्त-चरित-

दक्षिणके सन्त श्रीराघवेन्द्र स्वामी

संख्या १० ]

### ( श्रीराघवेन्द्रश्रीधरजी राव )



में हुआ। इनकी माताका नाम गोपीकाम्बा और पिताका नाम थिमण्णाभट्ट था। यह पुत्र जो कि भगवान् वेंकटेशकी कृपासे पैदा हुआ था, उसका नाम पिताने

वेंकटनाथ रखा। वेंकटनाथ कुशाग्र बुद्धिके थे। उन्होंने छोटी उम्रमें ही वेद-वेदान्त, कविता और अमरकोषमें महारत हासिल

कर ली। अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करनेके बाद वेंकटनाथ कुम्भकोणम् मठ आये, जहाँ इन्होंने उच्च

शिक्षा अपने कुलगुरु श्रीसुधीन्द्रतीर्थसे प्राप्त की। अपने गुरुके पास रहकर वेंकटनाथने विज्ञान, वेदान्तशास्त्र, व्याकरण इत्यादिमें महारत हासिल कर

ली। वे तैराकी और वीणावादनमें भी अग्रणी थे। इतना सब जाननेके बाद भी वे बहुत विनम्र और मृदुभाषी थे। गुरुने वेंकटनाथको 'परिमलाचार्य' की उपाधि दी।

ऐसे ही समय बीतता गया। वेंकटनाथने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली। इनके बड़े भाई गुरुराजाचार्यकी मददसे इनकी शादी सरस्वती नामकी लड़कीसे सम्पन्न

हुई। गृहस्थी श्रीहरिके नाम-जप और पूजा-पाठमें

गुजरी। श्रीहरिकी कृपासे वेंकटभट्ट और सरस्वतीदेवीको एक लड़का हुआ, जिसका नाम नवदम्पतीने लक्ष्मीनारायण

शीघ्र ही श्रीसुरेन्द्रतीर्थकी उम्र हो गयी। उनके

तत्पश्चात् तंजौरके महलमें विद्वानों और अनेक

सन् १६२१ ई० को श्रीसुरेन्द्रतीर्थने वेंकटभट्टको संन्यास-

मनमें आया कि अपना कार्यभार किसीको सौंप दें। एक रातको सपनेमें उनको उनके आराध्य देवता श्रीमूलरामचन्द्रजीके दर्शन हुए और उन्होंने आज्ञा दी कि श्रीसुरेन्द्रतीर्थ वेंकटभट्टाचार्यको संन्यासकी दीक्षा दें और सारा कार्यभार उनको सौंपकर वेंकटभट्टको पीठाधिपति बनायें। जब यह सपनेका पूरा वृत्तान्त वेंकटभट्टको सुनाया गया तो इतनी बड़ी जिम्मेदारी लेनेके लिये पहले तो वे राजी नहीं हुए, पर बादमें इसे श्रीहरिकी इच्छा जानकर उन्होंने स्वीकृति दे दी। श्रीराघवेन्द्रस्वामीका जन्म मृगशिरा नक्षत्र, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी शुक्रवार मन्मथ संवत् सन् १५९५ ई० भक्तोंके समक्ष फाल्गुन शुक्ल द्वादशी दुर्मतीनाम संवत्सर

रखा।

आश्रममें दाखिल किया और उनका नाम श्रीराघवेन्द्रतीर्थ रखा। अपने कार्यकालमें श्रीराघवेन्द्र स्वामीने अनगिनत

चमत्कार किये। उनमेंसे दोका उल्लेख किया जाता है। श्रीस्वामीजी अनेक स्थानोंकी यात्रा करते रहते थे। जब वे आदोनी गये तो उनकी सेवा एक अनाथ लड़के

वेंकण्णाने की। श्रीस्वामीने उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि विपत्तिके समय मुझे याद करना। एक बार

आदोनीका नवाब सिद्दी मसूदखान उसी ओर जा रहा था, जिधर वेंकण्णाका गाँव पड़ता था। उसी समय एक पत्रवाहकसे कुछ संदेश मिला। उसे नवाब और उसके

सैनिक कोई भी पढ़ नहीं सकते थे; क्योंकि वे अनपढ़ थे। नवाबने पास ही खड़े वेंकण्णाको बुलाया और कहा इस संदेशको पढ़ो। वेंकण्णा अनपढ़ गँवार था। उसे

कन्नडुका एक अक्षर भी नहीं आता था। वह घबरा गया। उसने श्रीराघवेन्द्र स्वामीको याद किया। अचानक सारी भाषाएँ उसके लिये ज्ञेय हो गयीं। उसने फरमान

वेंकण्णा जो अब दीवान बन गये थे, नवाबसे स्वामीको मंचाली नामक गाँव दानमें दे दिया। श्रीराघवेन्द्र स्वामीकी बहुत बड़ाई करते थे। नवाबने सोचा श्रीस्वामीजीकी इच्छा हुई कि वे अपने अन्तिम कि क्यों न श्रीस्वामीजीकी परीक्षा ली जाय। नवाब तो दिन मन्त्रालयमें गुजारें। उन्होंने मंचालीमें श्रीवेंकटेश्वरका कृटिल था। उसने एक टोकरीमें माँस, मछली और शराब मन्दिर बनवाया। उन्होंने वेंकण्णाको वह जगह बतायी, रख दिया और उसे कपडेसे ढककर श्रीस्वामीके सामने जहाँ वृन्दावनका निर्माण करना है, जहाँ वे समाधि लेंगे। पेश किया। श्रीराघवेन्द्र स्वामी समझ गये। उन्होंने शंखमें आखिर वह नियत तारीख आ ही गयी। ठीक

केवल फल और फूल हैं। नवाब बहुत शर्मिन्दा हुआ। गो-चिन्तन—

### बन्धनमुक्त गाय स्वस्थ और दुधार होती है ( श्रीमुल्कराजजी विरमानी )

दिल्लीके कई गाँवोंमें लोग एक या दो गायें पालते हैं, परंतु स्थानके अभावमें वे गायोंको सदैव बाँधकर

नवाबको पढ़कर सुनाया। नवाबने खुश होकर वेंकण्णाको

जल भरकर उस टोकरेपर छिड्क दिया। नवाबने जब

टोकरेपरसे कपड़ा हटाया तो क्या देखते हैं कि टोकरेमें

'दीवान' बना दिया।

रखते हैं। दिल्लीके कोटला और डिफेन्स कॉलोनीके बीचके डिवाइडरपर आस-पासकी सभी गायें आकर

बैठती हैं। दस गायोंमेंसे लगभग दो-तीन गायें जुगाली कर रही होती हैं। इसका मतलब है कि शेष सात गायें खाली पेट होती हैं और वहाँपर आने-जानेवाले कुछ

लोग एक-आध रोटीका टुकडा उनको डाल देते हैं, तो इसीसे उनका जीवन-यापन होता है। अगर इनमें कोई गाय कोटलाके बाजारमें बैठ जाय तो वहाँका दुकानदार उसे डण्डेसे मारकर भगा देता है।

मैंने पी॰डब्लू॰डी॰ वालोंसे कहा कि यहाँ डिवाइडरमें और पेड लगा दीजिये, ताकि गायको धूपकी यातना न सहनी पड़े। उन्होंने लगाये भी, लेकिन पानी न मिलनेके

गाय दुखी है-दिल्लीमें गायोंकी स्थिति देखनेके लिये मैं अक्सर गाँवोंमें भ्रमण करता रहता हूँ। गौतम नगर एक बहुत बड़ा गाँव है, जहाँ गुरुकुल नामक विशाल विद्यालयमें थोडा-सा स्थान उन्होंने गायोंके पालनके लिये

जब सूर्यदेव अपने चरमपर होते हैं तो गायोंको अन्दर

कारण सभी पेड़ जल गये।

बाँधनेकी एक प्रकारकी व्यवस्था है। चौदह फुटकी लम्बाईमें छ: या सात गायें बाँध देते हैं, उनके पेट आपसमें टकराते हैं और ऐसी स्थितिमें बैठनेका तो सवाल ही पैदा नहीं होता। बेचारी गाय धूपके समाप्त होनेपर बाहर लाकर

जीवित समाधि ली।

उसने श्रीराघवेन्द्र स्वामीको दण्डवत् नमस्कार किया और

माफी माँगी। उस नवाबने प्रसन्न होकर श्रीराघवेन्द्र

शुक्रवार, श्रावणमास, विरोधीकृत संवत्सर सन् १६७१ ई० को श्रीराघवेन्द्र स्वामीने वृन्दावनमें प्रवेश किया और

बाँध दी जाती है। अन्दर बाँधी गाय न तो कुछ खा

सकती है और न पी ही सकती है। विश्रामका तो सवाल

छाया देते हैं, न ही खानेको ठीक व्यवस्था करते हैं। मैंने

भाग ९६

ही पैदा नहीं होता। अन्दर भी बँधी है और बाहर भी बँधी ही रहती है। हम तो कह देते हैं—इनका करम ही ऐसा है। परंतु यह सत्य नहीं है। वास्तवमें हम ही इतने क्रूर हो गये हैं कि न तो दो-चार पेड़ लगाकर गायको

व्यवस्थापकसे विनय की कि आपके पास गायको घुमानेके लिये इतना बडा स्थान है, आप दो-दो या तीन-तीन गायको ले जाकर घुमाइये, घुमाते क्यों नहीं हैं ? उन्होंने उत्तर तो नहीं दिया और मेरी तरफ देखकर कह दिया—

प्रयत्न करेंगे। पर कोई प्रयत्न नहीं हुआ।

दिल्लीमें ही आर० के० पुरम्में 'विश्व हिन्दू परिषद्' का बहुत बड़ा कार्यालय है। उन्होंने सूझ-बूझके साथ गायोंको इस ढंगसे रखा है कि यदि फल या रोटी खिलानेवाले रखा हुआ है। वहाँ लगभग पन्द्रह गायें हैं। गर्मियोंमें गोभक्त आयें और काफी दूरसे गायको खानेके लिये बुलायें

तो वे भागकर वहाँ चली जायँगी। वहाँ गाय बाँधते नहीं,

संख्या १० ] बन्धनमुक्त गाय स्वस्थ और दुधार होती है ३७				
\$				
इसलिये बाकी गौशालाओंकी तुलनामें गाय कमजोर भी	हुए, तो उन्हें चरानेकी जो एक सुन्दर प्रथा थी, वह भी			
नहीं हैं। वहाँ भी बहुत लोग आते हैं और रोटी, सब्जी,	कम होते-होते समाप्त-सी हो गयी।			
केला इत्यादि गायोंको खिलाते हैं।	दिल्लीसे फरीदाबाद जानेके लिये मथुरा रोडके			
एक प्रकारसे अच्छा ही हुआ कि दिल्लीकी	अतिरिक्त एक ब्रिज भी है, जहाँ एक बड़ी गोशालाकी			
कार्पोरेशन्सने घूमती हुई गायोंको पकड़कर दूर गौ–	गायोंका दूध निकालकर उन्हें छोड़ दिया जाता है। वे			
शालाओंमें देनेका प्रबन्ध कर दिया है। इसीलिये	सड़कपर आ जाती हैं और कारों, स्कूटरों आदिसे आने-			
कोटलाको छोड़कर बाकी विभिन्न कॉलोनियोंमें गायोंका	जानेवाले लोगोंसे कुछ रोटी आदि खिलानेकी आशामें			
घूमना अब सम्भव नहीं है। मैंने नोएडा और गौतम	खड़ी रहती हैं। इस गोशालाका संचालन फरीदाबाद			
नगरकी गौशालाको भली-भाँति देखा और समझा।	और अन्य स्थानोंके धनी-मनी लोग करते हैं, लेकिन			
वहाँपर गायोंके सुन्दर और खुले स्थान बन सकते हैं	किसीको समय नहीं कि आपसमें मिलकर गोशालाके			
जिसमें गायें स्वतन्त्रतासे घूमें और लोग भी आकर	सुधारपर चर्चा करें। मेरा अनुभव है कि गायोंको			
उन्हें खिलाना चाहें तो वे एक स्थानसे दूसरे स्थानपर	गोशालामें थोड़ी मात्रामें खली, चनेका आटा और हरा			
पहुँच सकती हैं। इससे गायोंका स्वास्थ्य भी अच्छा	चारा दिया जाय तो उनके दूधमें वृद्धि हो सकती है,			
होगा और दूधमें भी बढ़ोतरी होगी।	इससे गायोंकी दूध देनेकी क्षमता बढ़ेगी और उनके			
गायोंको स्वस्थ साँड़से क्रॉस कराना चाहिये—	बछिया-बछड़ोंको थोड़ा-सा अधिक दूध भी मिलेगा,			
एक गाँवमें तो देशी गउओंकी लगभग कोई किस्म ही	जिससे वे भी आगे चलकर गायोंकी नस्लोंमें सुधार			
नहीं है। जैसे देशकी जानी-मानी किस्में—गीर, राठी,	करेंगे। इन गोशालाओंमें मैंने देखा कि गौमूत्रको फिल्टर			
साहीवाल, थारपारकर, कपिला, स्वर्ण कपिला इत्यादि।	करनेका बहुत सुन्दर प्लाण्ट भी रखा है, परंतु दु:खकी			
लगभग सारे गोपालक इसका महत्त्व भी बहुत कम	बात है कि प्लाण्टके पाइप इधर-उधर बिखरे पड़े हैं			
जानते हैं। हरियाणाकी एक महिला गोपालकके पास	और उनपर गीले कपड़ोंको सुखानेका काम लिया जा			
सौके लगभग विभिन्न नस्लोंकी गायें हैं। वे गायोंको	रहा है। फिल्टर किया हुआ गो–मूत्र बहुत–सी बीमारियोंका			
नस्लके अनुसार क्रास कराती हैं, फलत: प्रजाति तो	उपचार कर सकता है। परंतु इसके लिये लोगोंको			
सुरक्षित रहती ही है, दुग्ध-उत्पादन भी पर्याप्त होता है।	अवगत करानेकी आवश्यकता है। अवगत तो कराया			
गौतम नगरके एक महात्मा गोपालक तो बड़ी धीमी	नहीं और उसके पार्ट्स बिखेरकर रख दिये।			
आवाजमें कहते हैं—हमारी गायें तो मिली-जुली हैं, हमें	मेरा गोशालाओंसे अनुरोध है कि गायोंकी नस्लोंका			
नस्ल-सुधारका समय नहीं है। बरसोंसे जबसे जंगल	सुधार तो करें ही, साथमें गायोंको बन्धनसे मुक्तकर			
खेतोंमें परिवर्तित होने लगे, गायोंके चरनेके चरागाह कम	खुला रहने और चरनेकी व्यवस्था भी करें।			
<del></del>	<b></b>			
गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वशः।तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानिप सुदुर्लभान्॥				
द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्यं सुखप्रदः। अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्॥				
दान्तः प्रीतमना नित्यं गवां व्युष्टिं तथाश्नुते।				
'जो पुरुष गौओंकी सेवा करता है और सब प्रकारसे उनका अनुगमन करता है, उसपर सन्तुष्ट होकर गौएँ				
उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। गौओंके साथ मनसे भी कभी द्वेष न करे, उन्हें सदा सुख पहुँचाये,				
उनका यथोचित सत्कार करे और नमस्कार आदिके द्वारा उनका पूजन करता रहे। जो मनुष्य जितेन्द्रिय और				
प्रसन्नचित्त होकर नित्य गौओंकी सेवा करता है, वह समृद्धिका भागी होता है।'				

सुभाषित-त्रिवेणी | मृढकी पहचान

[How to identify an Idiot]

अर्थांश्चाकर्मणा प्रेप्सुर्मृढ इत्युच्यते बुधैः॥ while trying to befriend his enemies. He harms his बिना पढे ही गर्व करनेवाले, दरिद्र होकर भी

बड़े-बड़े मनसूबे बाँधनेवाले और बिना काम किये ही

धन पानेकी इच्छा रखनेवाले मनुष्यको पण्डितलोग

अश्रुतश्च समुन्नद्धो दरिद्रश्च महामनाः।

मुर्ख कहते हैं।

"The Panditas call a man a fool who although illiterate thinks too much of himself and

who though a pauper dreams rich. Such a fool desires to grow rich without effort.

स्वमर्थं यः परित्यज्य परार्थमन्तिष्ठति।

मिथ्या चरति मित्रार्थे यश्च मृदः स उच्यते॥ जो अपना कर्तव्य छोडकर दुसरेके कर्तव्यका

पालन करता है तथा मित्रके साथ असत् आचरण करता

है, वह मूर्ख कहलाता है। "The fool deserts his duty and looks after

the interest of others. His conduct towards his

friends is deceitful. अकामान् कामयति यः कामयानान् परित्यजेत्।

बलवन्तं च यो द्वेष्टि तमाहुर्मृढचेतसम्॥ जो न चाहनेवालोंको चाहता है और चाहने-वालोंको त्याग देता है तथा जो अपनेसे बलवानुके

साथ बैर बाँधता है, उसे 'मूढ़ विचारका मनुष्य' कहते हैं। "He is called an idiot who befriends undesir-

able persons and who shuns those whose com-

pany he ought to seek. For no rhyme or reason he

courts enmity of the powerful.

अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च।

कर्म चारभते दुष्टं तमाहुर्मृढचेतसम्॥ जो शत्रुको मित्र बनाता और मित्रसे द्वेष करते हुए उसे कष्ट पहुँचाता है तथा सदा बुरे कर्मींका आरम्भ

"Unjustifiably, he makes enemies of friends

friends for no reason. He is such a fool that he

invariably sets out on the wrong path. संसारयति कृत्यानि सर्वत्र विचिकित्सते।

चिरं करोति क्षिप्रार्थे स मृढो भरतर्षभ॥ भरतश्रेष्ठ! जो अपने कामोंको व्यर्थ ही फैलाता है, सर्वत्र सन्देह करता है तथा शीघ्र होनेवाले काममें

भी देर लगाता है, वह मूढ़ है। "O descendent of Bharata! He is stupid

who unnecessarily expands the scope of his activity, who doubts everyone's intentions and who delays what can be completed in a short while.

श्राद्धं पितृभ्यो न ददाति दैवतानि न चार्चति। सृहन्मित्रं न जो पितरोंका श्राद्ध और देवताओंका पूजन नहीं करता तथा जिसे सुहृद् मित्र नहीं मिलता, उसे 'मूढ्

चित्तवाला' कहते हैं। "He is deficient in intellect who does not perform Sraddha for his ancestors and who does

not worship the Devatas. He is unable to make

sincere friends.

अनाहतः प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते। अविश्वस्ते विश्वसिति मृढचेता नराधमः॥

लभते तमाहर्मुढचेतसम्॥

मूढ चित्तवाला अधम मनुष्य बिना बुलाये ही भीतर चला आता है, बिना पूछे ही बहुत

बोलता है तथा अविश्वसनीय मनुष्योंपर भी विश्वास करता है।

"He enters a house or Court uninvited and speaks much when not even asked to do so. Such a lowly fool trusts the most untrustworthy persons.

किया करता है, उसे 'मृद्ध चित्तवाला' कहते हैं। Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVESBY Aviñash/Sh

व्रतोत्सव-पर्व

# व्रतोत्सव-पर्व

१२ "

१३ "

सं० २०७९, शक १९४४, सन् २०२२, सूर्य दक्षिणायन, शरद्ऋतु, कार्तिक-कृष्णपक्ष तिथि वार नक्षत्र

दिनांक

सोम रिवती सायं ५।१० बजेतक प्रतिपदा रात्रिमें १।४७ बजेतक **मेषराशि** सायं ५।१० बजेसे, **पंचक समाप्त** सायं ५।१० बजे। १० अक्टूबर मूल सायं ५। ३१ बजेतक, चित्रामें सूर्य सायं ४। २९ बजे। ११ ,,

द्वितीया 🔐 १।४० बजेतक 🕂 मंगल अश्विनी 🔐 ५।३१ बजेतक बुध

भरणी रात्रिमें ६। २२ बजेतक तृतीया <table-cell-rows> २।४ बजेतक

चतुर्थी 🦙 २।५८ बजेतक | गुरु कृत्तिका 🕠 ७।४३ बजेतक

संख्या १० ]

शुक्र

पंचमी 🔑 ४।२० बजेतक रोहिणी 🛷 ९। ३२ बजेतक षष्ठी रात्रिशेष ६।६ बजेतक मृगशिरा 🕠 ११ । ४४ बजेतक शनि सप्तमी अहोरात्र रवि

आर्द्रा ,, २।११ बजेतक सप्तमी दिनमें ८।६ बजेतक सोम पुनर्वसु 🕠 ४।४९ बजेतक अष्टमी *"* १०।१३ बजेतक

पुष्य अहोरात्र मंगल

पुष्य प्रातः ७। २५ बजेतक बुध

नवमी *"* १२।१७ बजेतक दशमी 🕠 २।५ बजेतक आश्लेषा दिनमें ९।४८ बजेतक गुरु शुक्र मघा ,, ११।५२ बजेतक

एकादशी 🗤 ३।३२ बजेतक पु०फा० ,, १।२९ बजेतक शनि उ०फा० ,, २।३८ बजेतक रवि

द्वादशी सायं ४।३२ बजेतक त्रयोदशी 🕠 ५।४ बजेतक

🕠 ३ । १८ बजेतक

चतुर्दशी 🕖 ५।३ बजेतक | सोम | हस्त अमावस्या सायं ४।३४ बजेतक | मंगल | चित्रा | 🕠 ३। २८ बजेतक

सं० २०७९, शक १९४४, सन् २०२२, सूर्य दक्षिणायन, शरद्ऋतु, कार्तिक-शुक्लपक्ष

तिथि वार नक्षत्र बुध

प्रतिपदा दिनमें ३।२५ बजेतक स्वाती दिनमें ३।९ बजेतक विशाखा 😗 २।२६ बजेतक गुरु

द्वितीया 🥠 २।१२ बजेतक तृतीया " १२।२९ बजेतक । शुक्रा अनुराधा 🤊 १।२४ बजेतक

शनि ज्येष्ठा 🥠 १२।५ बजेतक

रवि मूल 🥠 १०।३४ बजेतक पू०षा० "८। ५६ बजेतक सोम

मंगल उ०षा० प्रात: ७।१४ बजेतक नवमी 🕠 १०।५३ बजेतक धनिष्ठा रात्रिमें ४।६ बजेतक बुध

चतुर्थी 🕠 १०।२८ बजेतक पंचमी दिनमें ८।१५ बजेतक

सप्तमी रात्रिमें ३।३० बजेतक अष्टमी 辨 १।८ बजेतक

गुरु

शुक्र

शनि

रवि

पूर्णिमा 🔐 ३।५३ बजेतक | मंगल | भरणी 🔐 १।५२ बजेतक

दशमी 🕠 ८।५० बजेतक

एकादशी <table-cell-rows> ७।२ बजेतक

द्वादशी सायं ५। ३५ बजेतक 🖡

त्रयोदशी 꺄 ४। ३३ बजेतक

चतुर्दशी 🕠 ३।५८ बजेतक

शतभिषा 🕖 २।४९ बजेतक

पू०भा० "१।४९ बजेतक

उ०भा० // १।१० बजेतक

रेवती 🕠 १२।५५ बजेतक

सोम अश्विनी "१।८ बजेतक

२४ " भौमवती अमावस्या, सूर्यग्रहण। २५ ,,

२३ "

२२ ,,

भद्रा सायं ५। ४ बजेसे रात्रिशेष ५। ४ बजेतक, धन्वन्तरि-जयंती, नरकचतुर्दशी, हनुमज्जयन्ती।

कन्याराशि रात्रिमें ७।४७ बजेसे, शनिप्रदोषव्रत, धनत्रयोदशी (धनतेरस)।

रात्रिमें १२।४२ बजेसे।

अन्नकूट, काशीसे अन्यत्र गोवर्धनपूजा।

श्रीसूर्यषष्टीव्रत, मूल दिनमें १०।३४ बजेतक।

**भद्रा** दिनमें २।१९ बजेतक, **गोपाष्टमी**।

शनिप्रदोषव्रत, तुलसीविवाह।

वैकुण्ठचतुर्दशीव्रत ।

सूर्य दिनमें ९।१७ बजे।

( भैयादुज ), यमद्वितीया।

दिनमें १। २४ बजेसे।

तुला संक्रान्ति दिनमें ९।४० बजे। **भद्रा** रात्रिमें १। ११ बजेसे, **मूल** प्रात: ७। २५ बजेसे। भद्रा दिनमें २।५ बजेतक, सिंहराशि दिनमें ९।४८ बजेसे। रम्भा एकादशीव्रत (सबका), गोवत्पद्वादशी, मूल दिनमें ११।५२ बजेतक।

**भद्रा** रात्रिमें ७। ६ बजेतक। कर्कराशि रात्रिमें १०।१० बजेसे, अहोईव्रत।

मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि

वृश्चिकराशि दिनमें ८। ३८ बजेसे, काशीमें गोवर्धन पूजा, भातृद्वितीया

भद्रा रात्रिमें ११। २९ बजेसे, श्रीवैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, मूल

कुम्भराशि सायं ४।५२ बजेसे, पंचकारम्भ सायं ४।५२ बजे, अक्षयनवमी।

**भद्रा** प्रातः ७। ५६ बजेसे रात्रिमें ७। २ बजेतक, **मीनराशि** 

**मेषराशि** रात्रिमें १२।५५ बजेसे, **पंचक** समाप्त रात्रिमें १२।५५ बजे,

भद्रा दिनमें ३।५८ बजेसे रात्रिमें ३।५५ बजेतक, व्रतपूर्णिमा, विशाखाका

कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयन्ती, कार्तिक-स्नान समाप्त, चन्द्रग्रहण।

भद्रा दिनमें १०।२८ बजेतक, धनुराशि दिनमें १२।५ बजेसे।

**भद्रा** रात्रिमें ३।३० बजेसे, **मकरराशि** दिनमें २।२९ बजेसे।

रात्रिमें ८।४ बजेसे, प्रबोधिनी एकादशीव्रत (सबका )।

मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि

भद्रा दिनमें १। ५२ बजेसे रात्रिमें २। ४ बजेतक, वृषराशि

संकष्टी ( करवाचौथ ) श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय रात्रिमें ७।५३ बजे।

तुलाराशि रात्रिमें ३।२२ बजेसे, दीपावली, स्वातीका सूर्य रात्रिमें २।९ बजे।

१४ " १५ ,,

भद्रा रात्रिशेष ६।६ बजेसे, मिथुनराशि दिनमें १०।३८ बजेसे। १६ " १७ ,,

१८ ,,

१९ "

२० ,,

२१ "

दिनांक

२६ अक्टूबर

२७ ,,

२८

२९

30

38

२

Ę ,,

४ ,,

ξ

9 ,,

१ नवम्बर

,,

कल्याण

## वतोत्सव-पर्व

१० "

११ ,,

१२ "

१३ "

१४ "

१५ ,,

१६ "

१७ ,,

१८ "

दिनांक

२५

२६

२७

२८

२९

30

२ ,,

3

४ ,,

4

ξ

9 ,,

6

१ दिसम्बर

सं० २०७९,	शक	१९४४, सन् २०२२,		क्षणायन,
तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	
प्रतिपदा सायं ४।२० बजेतक	बुध	कृत्तिका रात्रिमें ३।६ बजेतक	९ नवम्बर	वृषराशि दि

मृगशिरा अहोरात्र

द्वितीया 🥠 ५।१७ बजेतक | गुरु

तृतीया रात्रिमें ६।४२ बजेतक शुक्र

चतुर्थी 🦙 ८।२९ बजेतक 🛮 शनि

पंचमी 🦙 १०।३२ बजेतक | रवि

षष्ठी 🦙 १२।४१ बजेतक सोम

अष्टमी 🕠 ४।३६ बजेतक बुध

नवमी रात्रिशेष ६।४ बजेतक गुरु

मंगल

शुक्र

शनि

रवि

मंगल

वार

गुरु

शुक्र

शनि मूल

रवि

मंगल

बुध

गुरु

शुक्र

शनि

बुध

गुरु

अमावस्या रात्रिमें ४।४६ बजेतक बिध 🛘 विशाखा 🔑 १०।२० बजेतक 🗗 २३ 🔑

ज्येष्ठा

सप्तमी 🦙 २।४६ बजेतक

दशमी प्रातः ७।६ बजेतक

एकादशी 🕖 ७ । ३७ बजेतक

द्वादशी 🕠 ७।३७ बजेतक

त्रयोदशी 🕠 ७।६ बजेतक

तिथि

प्रतिपदा रात्रिमें ३।२ बजेतक

द्वितीया 🕠 १।३ बजेतक

तृतीया "१०।५० बजेतक

चतुर्थी 🥠 ८।३१ बजेतक

पंचमी 🕠 ६।८ बजेतक

षष्ठी दिनमें ३।४८ बजेतक

सप्तमी 🕠 १।३६ बजेतक

अष्टमी ११।३४ बजेतक

नवमी 🦙 ९।४९ बजेतक

दशमी 🕠 ८। २५ बजेतक

द्वादशी 🥠 ६। ५२ बजेतक

त्रयोदशी 🕠 ६।५० बजेतक

चतुर्दशी 🛷 ७। २१ बजेतक

पूर्णिमा दिनमें ८।२१ बजेतक

एकादशी प्रात:७।२४ बजेतक | रवि

दशमी अहोरात्र

रोहिणी ,, ४।५७ बजेतक

मृगशिरा प्रात: ६ । ५४ बजेतक

आर्द्रा दिनमें ९।१९ बजेतक

पुनर्वसु "११।५४ बजेतक

पुष्य 🥠 २।३० बजेतक

आश्लेषा सायं ४।५७ बजेतक

मघा रात्रिमें ७।६ बजेतक

पू०फा० 🔑 ८।४९ बजेतक

नक्षत्र

अनुराधा रात्रिमें ९ । २३ बजेतक | २४ नवम्बर

🕠 ८।७ बजेतक

🕠 ६।३८ बजेतक

पु०षा० सायं ५।१ बजेतक

सोम उ०षा० दिनमें ३।२० बजेतक

श्रवण 🛷 १। ४१ बजेतक

धनिष्ठा 🕠 १२। ९ बजेतक

शतभिषा 🦙 १०।४७ बजेतक

पु०भा० " ९।४३ बजेतक

उ०भा० 🗤 ८।५८ बजेतक

रिवती 🦙 ८। ३६ बजेतक

कृत्तिका "१०।२४ बजेतक

रोहिणी 🕠 ११।५८ बजेतक

सोम |अश्विनी 🕠 ८।४३ बजेतक

मंगल भरणी 🦙 ९।१८ बजेतक

शरद्-हेमन्तऋतु, मार्गशीर्ष-कृष्णपक्ष

मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि

वृषराशि दिनमें ८।१० बजेसे।

भद्रा रात्रिशेष ५।५९ बजेसे।

भद्रा रात्रिमें ६।४२ बजेतक, मिथुनराशि सायं ५।५१ बजेसे।

संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय रात्रिमें ८।६ बजे।

कर्कराशि रात्रिशेष ५।१५ बजेसे।

भद्रा रात्रिमें १२। ४१ बजेसे।

सिंहराशि सायं ४।५७ बजेसे, भैरवाष्टमी)।

रात्रिमें ७।६ बजेतक।

वृश्चिकराशि सायं ४। २९ बजेसे, अमावस्या।

मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि

भद्रा दिनमें ९। ४१ बजेसे रात्रिमें ८। ३१ बजेतक, मकरराशि

कुम्भराशि रात्रिमें १२।५५ बजेसे, पंचकारम्भ रात्रिमें १२।५५ बजे।

मूल दिनमें ८। ५८ बजेसे, भद्रा रात्रिमें ७। ५४ बजेसे, ज्येष्ठामें सूर्य

भद्रा प्रातः ७। २४ बजेतक, मेषराशि दिनमें ८। ३६ बजेसे, मोक्षदा

एकादशीव्रत ( सबका ), गीताजयन्ती, पंचक समाप्त दिनमें ८।३६ बजे।

भद्रा प्रात: ७।२१ बजेसे रात्रिमें ७।५१ बजेतक, व्रत-पूर्णिमा।

रात्रिमें १०।३६ बजेसे, वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत।

भद्रा दिनमें १। ३६ बजेसे रात्रिमें १२। ३५ बजेतक।

भद्रा प्रातः ७। ६ बजेतक।

भद्रा दिनमें १।४४ बजेतक, मुल दिनमें २।३० बजेसे। वृश्चिकसंक्रान्ति प्रातः ७। ११ बजे, हेमन्तऋतु प्रारम्भ, मूल भद्रा रात्रिमें ६। ३५ बजेसे, कन्याराशि रात्रिमें ३।८ बजेसे।

उत्पन्ना एकादशीवृत ( सबका ), अनुराधाका सूर्य दिनमें २।१२ बजे।

भद्रा प्रात: ७। ६ बजेसे रात्रिमें ६। ३७ बजेतक, सायन धनुका सूर्य सं० २०७९, शक १९४४, सन् २०२२, सूर्य दक्षिणायन, हेमन्तऋतु, मार्गशीर्ष-शुक्लपक्ष

उ०फा० ,, १०।७ बजेतक १९ " हस्त ,, १०।५३ बजेतक २० " तुलाराशि दिनमें ११।२ बजेसे, सोमप्रदोषव्रत। सोम चित्रा ,, ११।१० बजेतक २१ " स्वाती ,, १०।५७ बजेतक २२ ,,

रात्रिमें २।३ बजे।

मूल रात्रिमें ९। २३ बजेसे।

धनुराशि रात्रिमें ८।७ बजेसे।

मूल रात्रिमें ६। ३८ बजेतक।

मीनराशि रात्रिमें ३।५८ बजेसे।

मुल दिनमें ८।४३ बजेतक, सोमप्रदोषव्रत।

मिथुनराशि रात्रिमें १२।५९ बजेसे, पूर्णिमा।

वृषराशि दिनमें ३।३५ बजेसे।

श्रीरामविवाह।

महानन्दानवमी।

सायं ५। २४ बजे।

श्रीभगवन्नाम-जपकी शुभ सूचना संख्या १० ] श्रीभगवन्नाम-जपकी शुभ सूचना (इस जपकी अवधि कार्तिक पूर्णिमा, विक्रम-संवत् २०७८ से चैत्र पूर्णिमा, विक्रम-संवत् २०७९ तक रही है) ते सभाग्या मनुष्येषु कृतार्था नृप निश्चितम्। अवराइन, असोहा, अहमदाबाद, आंजना, आकोट, स्मरन्ति ये स्मारयन्ति हरेर्नाम कलौ युगे॥ आगरा, आडंद, आनन्दनगर, आनेट, आमळा, आला 'राजन्! मनुष्योंमें वे लोग भाग्यवान् हैं तथा निश्चय [नेपाल], आवसर, आष्टा, इंदिरानगर, इंदौली, इंदौर, ही कृतार्थ हो चुके हैं, जो इस कलियुगमें स्वयं श्रीहरिका इचलकरंजी, इजोत, इन्दरवास, इलाहाबाद, उज्जैन, नाम-स्मरण करते और दूसरोंसे नाम-स्मरण करवाते हैं।' उदयपुर, उधमपुर, उमरिया, उमरीयेवदा, उल्हासनगर, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। उस्मानाबाद, उसरी, ऋषिकेश, ओराडसकरी, ओबरा, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ औराइन, कघारा, कछुआ, कटक, कटघर, कठुआ, कथैया, कन्याना, करजगाँव, करनभाऊ, करनाल, -इस वर्ष भी इस षोडश नाम-महामन्त्रका जप पर्याप्त संख्यामें हुआ है। विवरण इस प्रकार है— करही (शुक्ल), करुलिया, करैया जागीर, कर्नाटक, (क) मन्त्र-संख्या ६३,८२,३१,३०० (तिरसठ कर्मचारीनगर, कलकत्ता, कल्याण, कसारीडीह, काँकरोली, करोड़, बयासी लाख, इकतीस हजार तीन सौ)। कॉॅंगड़ा, काकोली, काटोल, काठमांडो, कानपुर, कानड़ी, (ख) नाम-संख्या १०,२१,१७,००,८०० (दस कामठी, कामर, कालियागंज, कालुखाँड्, कासिमबाजार, अरब, इक्कीस करोड़, सत्रह लाख, आठ सौ)। किरारी, किसनगंज, कुकरा, कुक्षी, कुचामनसिटी, कुटासा, कुठेडा, कुनिहार, कुन्हील पनेरा, कुरमापाली, (ग) षोडश नाम-महामन्त्रके अतिरिक्त अन्य मन्त्रोंका भी जप हुआ है। कुर्मीचक, कुरुक्षेत्र, कुरुसेंडी, कुलना, कृष्णनगर, (घ) बालक, युवक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, गरीब-केंकरा, केशवनगर, कैथल, कैथापकड़ी, कैथूदा, कोईलारी, अमीर, अपढ एवं विद्वान्—सभी तरहके लोगोंने कोटद्वार, कोटला, कोटा, कोठी, कोडलहिया, कोथराखुर्द, उत्साहसे जपमें योग दिया है। भारतका शायद ही कोई कोलकाता, कोलिया, कोलीढेक, कोसीकला, कौडिया, ऐसा प्रदेश बचा हो, जहाँ जप न हुआ हो। भारतके कौहाकुड़ा, कौलेती (नेपाल), खंजरपुर, खगड़िया, अतिरिक्त बाहर अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रामिंघम, खज्रीरुण्डा, खज्री, खडगप्र, खडगवा, खरखो, मलेसिया, मेलबोर्न, मिडिलटाउन, यू०के०, यू०एस०ए०, खानिकत्ता, खामगाँव, खामला, खुँटपला, खेंरोट, यूनाइटेड किंगडम, सिंगापुर, नेपाल आदिसे भी जप खुरपावडा, खुर्दा, खेतराजपुर, खेलदेशपाण्डेय, खैराचातर, होनेकी सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं। खैराबाद, गंगातीकलाँ, गंगापुर सिटी, गंगाशहर, गडकोट, गड़ेरा, गवलीपुरा, गरौठा, गाँधीनगर, गाजियाबाद,

गाड्रवा, गिठीगाडा, गुंडरदेही, गुड्गाँव, गुड्गकला,

गुढ़ा, गुना, गुरुग्राम, गोकुल, गोकुलनगर, गोकुलेश्वर,

गोछेड़ा, गोपालकृष्णनगर, गोपालगंज, गोपालगढ़, गोपेश्वर, गोरखपुर, गोलागोकरननाथ, गोवा, गोवार, गौड़ीहाट,

गौड़ीहार, ग्वालियर, घघरा, घरैहली, घिंचलाय, घुघली,

स्थानोंके नाम— अंजनु, अंता, अंतुरा, अंदौली, अंधराराठी, अंधेरी,

अंबाला, अकबरपुर, अकोला, अचारपुरा, अजन्ता

सोसाइटी, अन्दौली, अजमेर, अमनाङकला, अमरवाड़ा,

अमरसर, अमरावती, अमरावतीघाट, अमृतसर, आनी, अरनियाजोशी, अलवर, अलीगढ, अलीपुर, अलीपुरकला,

भाग ९६ \* घुघा चिहाई, चंडीगढ, चंदौली, चंपावत, चक्कीरामपुर, बगदा, बघेरा, बच्छदा बटाला, बड्गरा शिवमंदिर, चपकीबघार, चम्बा, चाँदखेडा, चिखलाकला, चिचोली, बड़ालू, बड़ोदरा, बनवसा, बनैल, बमोरा, बरखेड़ा चित्तौड़गढ़, चित्रकूट, चिरंजीवपुर, चिराना, चिलौली, पठानी, बरमान, बरोदा सागर, बलरामपुर, बलांगीर, चिल्फी, चुरू, चुल्हार, चेबड़ी, चोरबड़, चौखा, बल्लभगढ़, बलिगाँव, बसान, बसाँव, बसई, बागपत, चौखुटिया, चौधरी बसन्तपुर, चौरास, चौली, च्यौडी, बाँगरोद, बारीडीह, बाँसवाडा, बाम्बे, बारीकेल, बलांगीर, छपट्टी, छापर, छेदियातरबगज, छोटालम्बा, जंघोरा, बाराकोट (नेपाल), बालाघाट, बासोपट्टी, बासौली, जगाधरी, जनापुर, जबलपुर, जयंती, जयपुर, जयप्रभानगर, बिगहिया, बिगहिया ब्यूर, बिटोरा (नेपाल), बिदराली, जयरामपुर, जुलगाँव, जलगाँव जामोदा, जलपाईगुडी, बिलखा, बीकानेर, बीदासर, बुरहानपुर, बुलन्दशहर, बूढ़ा-बूढ़ी थान्ह,, बूँदी, बेगूँ, बेरली खुर्द, बेलगाँव, जलोदाखाटयान जॉंगलू, जाखड़ी, जॉजगीर, जाटनी, बेलगाँवी, बेनियाकावास, बेलवरगंज, बैकुंठपुर, बैतूल, जामनगर, जामपाली, जुलगाँव, जैतगढ, जैपुर, जैसलमेर, जोगीन्द्रनगर, जोधपुर, जोस्युड़ा, जौलजीवी, ज्वालामुखी, बैरछामंडी, बोकारो, बोरी अरव, बोरीवली, ब्यावर, झाँसी, झुन्झुनू, झुलाघाट, टिकरीखिलडा, टीकमगढ़, भटिण्डा, भईन्दर, भटगाँव, भटेवरा, बाजार, भरतनगर, टोंकखुर्द, टोरडा, ठकुरापार, ठाणे, ठाणी, डड़िहथ, भरतपुर, भरसी, भलान, भवानीपुर, भांडुप (वेस्ट), डबरा, डबोक, डीग, डीडवाना, डूँगरगढ़, ढाँगू, ढोलवना, भागलपुर, भाडुतू, भावनगर, भिण्डुवा, भिलाई, भिवण्डी, तरीचर, तलेगाँव दशासर, तुगाँव, तेल्हारा, तोला, भीकमगाँव, भीखापुर, भीमदासपुर, भीलवाडा, भूवनेश्वर, थाणे, थाना, दडीबा, दितयापुर, दमोह, दयापुर, भून्तर, भूरेवाला, भेडवन, भैंसड़ा, भोकरदन, भोपाल, दलसिंहसराय, दलोदारेल, दाँतारामगढ़, दिल्ली, दुमका, भोपालपुरा, भ्रमरपुर, मंडी, मडुको, मथुरा, मदारपुर, दुर्ग, देवरी, देवली, देशनोक, देहरादुन, धनकौल, मनमहेश, मलकापुर, मलँगवा (नेपाल), मलाँड, धनसार, धरमगढ़, धरवार, धर्मशाला, धापरी, धामणगाँव, मलेनपुरवा, महलियावा, महादेवा, महासमुन्द, महेश्वर, धौलपुर, ध्रांगघा, ननौता, नगरगाँव, नन्हवाराकला, महेशानी, माजिरकांडा, माधोपुर, मावली, मिश्रपुर, नयानगर, नयापारा (खुर्द), नयाबाजार, नयीदिल्ली, मीतली, मीरारोड, मीलवाँ, मुंढवा, मुंगेर, मुंगेली, नरसिंहपुर, नरोही, नवादा, नांदन, नांदुरा, नाकोट, मुंबई, मुजफ्फरपुर, मुरलीपुरा, मुरादाबाद, मुलड, नामलोई, नागपुर, नानगाँव, नारायणगाँव, नारायणपुरा, मुस्तफाबाद, मुहेकर, मूड़िया, रामसर, मूडी, मेंंडुई, नासिक, नाहक, निवाई, नीमकाथाना, नेवारी, नोखा, मेडतारोड, मेरठ, मेहतापुर बासदेहरा, मोगा, मोरवण,

```
संख्या १० ]
                                                                              83
                              श्रीभगवन्नाम-जपकी महिमा
                                         बी., सावनेर, सिंगापुर, सिकन्दराबाद, सिकन्दराराऊ,
लमतड़ा, लरछुट, लश्कर, लारौन, लालपुर, लावन,
                                         सिकहुला, सिमरी, सिरजम, सिरपुर कागजनगर,
लिलुआ, लुधियाना, लुहासिंहा, लोसिंहा, लोहासिंहा,
                                         सिरहौल, सिरेसादगाँव, सिरोही, सीनखेड़ा, सीपरीबाजार,
लोहरा, वगरेंठी, बडोदरा, वरोदासागर, वल्लभगढ़,
                                         सुंदरवाला, सुखसाल, सुखलिया, सुगवा, सुजानगढ़,
वल्लभनगर, वसई, वागोसड़ा, वानासद्दी, वाराकला,
                                         सुठालिया, सुन्दरनगर, सुनगाँव, सुल्तानपुर, सूरत,
वाराणसी, वास, विदिशा, विराटनगर, विशाखापट्टनम,
                                         सेमरामेडौल, सेमराहाट, सेंठा, सेहलंग, सैदपुर, सोनाला,
विशाड़, विश्वेश्वरनगर, वीदासर, वुरहानपुर, वैकुंठपुर,
                                         सोनीपत, हरदा, हरसोरा, हराबाग, हरिद्वार, हल्लीखेड़ा,
वैशालीनगर, शामगढ़मंडी, शाहपुर, शाहपुर (मगरोन),
                                         हल्लीखेड़ (बी), हातोद, हाथरस, हाथीदेह, हाबड़ा,
शेगाँव, शोभासर, श्रीगंगानगर, श्रीड्रॅंगरगढ़, संकीर्तन
                                         हिंगोली, हिसार, हिगोलाकला, हुगली पानगोरे, हुबली,
मण्डली (झूलाघाट), संघर, सतना, समस्तीपुर, सरथुआ,
                                         हुगलीपान गोरे, हुमायूँपुर, हैदराबाद, होशंगाबाद,
सरदमपिंडारा, सरावाँ, सवाई माधोपुर, ससना, सांडवा
सांडवा, साउथसिटी, सागौनी, सापुआपल्ली, सालोन-
                                         होशियारपुर।
                      श्रीभगवन्नाम-जपकी महिमा
            दो० - ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।
                  रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि॥ २५॥
                 प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल
          नाम
          सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख
                             नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू॥
                   जानेउ
          नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू॥
          धुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ॥
                           पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू॥
          सुमिरि पवनसुत
          अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ॥
          कहों कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकिहं नाम गुन गाई॥
            दो०--नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
                   जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु॥ २६॥
          चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जिप जीव बिसोका॥
          बेद
                 पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू॥
          ध्यानु प्रथम जुग मखिबिधि दूजें। द्वापर परितोषत प्रभु पूजें॥
                केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना॥
                कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला॥
          राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता॥
          निहं किल करम न भगित बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू॥
```

श्रीभगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना भगवन्नाम-स्मरणसे नहीं टल सकता और ऐसी कौन-सी हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

िभाग ९६

वस्तु है, जो नहीं मिल सकती? इस कलिकालमें मंगलमय हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

आज सारे संसारमें जीवनकी जटिलताएँ बढ़ती जा रही भगवानुके आश्रयके लिये भगवन्नामका सहारा ही एकमात्र

हैं। अधिकतर लोग अपनी असीमित भौतिक आवश्यकताओंकी

अवलम्बन है। अतएव भारतवर्ष एवं समस्त विश्वके

कल्याणके लिये, लौकिक अभ्युदय और पारलौकिक सुख-

पूर्ति करनेमें संलग्न हैं। वे अपने क्षुद्र स्वार्थकी सिद्धिके

लिये दूसरोंका अहित करनेमें भी कोई संकोच नहीं करते।

शान्तिके लिये तथा साधकोंके परम लक्ष्य एवं मानव-

परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, कलह और हिंसाके वातावरणमें जीवनके परम ध्येय—भगवानुकी प्राप्तिके लिये सबको

अशान्त स्थिति है। देशके कुछ भागोंमें तो हिंसाका नग्न

भगवन्नामका स्मरण-जप-कीर्तन करना चाहिये।

अतः 'कल्याण' के भाग्यवान् ग्राहक-अनुग्राहक,

ताण्डव दिखायी दे रहा है। अधिकतर लोग मानसिक

पाठक-पाठिकाएँ स्वयं तथा अपने इष्ट-मित्रोंसे प्रतिवर्ष तनावके शिकार बनते जा रहे हैं। कलिका प्रकोप सर्वत्र

व्याप्त है। प्रश्न यह होता है कि इस स्थितिका समाधान क्या भगवन्नाम-जप करते-कराते आये हैं।

है ? ऋषि-महर्षि, मुनि और शास्त्रोंने इस स्थितिको अपनी गत वर्ष पंचानबे करोड नाम-जपकी प्रार्थना की गयी

अन्तर्दृष्टिसे देखकर बहुत पहलेसे यह घोषित कर दिया है थी। इस वर्ष विभिन्न स्थानोंसे जो सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं;

कि 'कलिकालमें मानव-कल्याण और विश्वशान्तिके लिये उनके अनुसार तिरसठ करोड़, बयासी लाख, इकतीस हजार,

श्रीहरि-नामके अतिरिक्त कोई दूसरा सुलभ साधन नहीं है।' तीन सौ मन्त्रके नाम-जप हुए हैं। भगवन्नाम-प्रेमी महानुभावोंसे

इसीलिये यह बात जोर देकर शास्त्रोंमें कही गयी है कि प्रार्थना है कि जपकी संख्यामें विशेष उत्साह दिखलायें,

'भगवान् श्रीहरिका नाम ही एकमात्र जीवन है। कलियुगमें जिससे भगवन्नाम-जपकी संख्यामें और वृद्धि हो सके।

इसके अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा—चारा नहीं है'— आशा है, अधिक उत्साहसे नाम-जप होता रहेगा।

हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्। जपकर्ताओंकी सूचना अभीतक लगातार आ रही है,

कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥ किंतु विलम्बसे सूचना आनेपर उसे प्रकाशित करना सम्भव

नहीं है। अत: जपकर्ताओंको जप पूरा होने (चैत्र शुक्ल (ना॰पूर्व॰ ४१।११५)

हमारे शास्त्रोंके अतिरिक्त अनुभवी संत-महात्माओंने पूर्णिमा)-के अनन्तर तत्काल सूचना प्रेषित करनी चाहिये,

भी भगवन्नाम-स्मरण-जपको कलियुगका मुख्य धर्म (ऐहिक-जिससे उनके जपकी संख्या प्रकाशित की जा सके।

पारलौकिक कल्याणकारी कर्तव्य) माना है। इतना ही नहीं, आप महानुभावोंसे पुन: इस वर्ष पंचानबे करोड़

जगतुके समस्त धर्म-सम्प्रदाय भी किसी-न-किसी रूपमें भगवन्नाम-मन्त्र-जपकी प्रार्थना की जा रही है। यह नाम-

भगवान्के नाम-स्मरण-जपके महत्त्वको प्रतिपादित करते जप अधिक उत्साहसे करना तथा करवाना चाहिये, जिससे

हैं। नामके जप-स्मरणमें देश-काल-पात्रका कोई भी नियम भगवन्नाम-जपकी संख्यामें उत्तरोत्तर वृद्धि हो।

नहीं है। श्रीचैतन्यमहाप्रभुने भी कहा है-निवेदन है कि पूर्ववत् कार्तिक शुक्ल पूर्णिमासे जप

आरम्भ किया जाय और चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (वि० सं० नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-

२०८०)-तक पूरा किया जाय। पूरे पाँच महीनेका समय है। स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।

'हे भगवन्! आपने लोगोंकी विभिन्न रुचि देखकर भगवान्के प्रभावशाली नामका जप स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण-

नित्य-सिद्ध अपने बहुत-से नाम कृपा करके प्रकट कर शुद्र सभी कर सकते हैं। इसलिये 'कल्याण' के भगविद्वश्वासी

दिये। प्रत्येक नाममें अपनी सारी शक्ति भर दी और नाम-पाठक-पाठिकाओंसे हाथ जोड़कर विनयपूर्वक प्रार्थना की जाती

है कि वे कृपापूर्वक सबके परम कल्याणकी भावनासे स्वयं स्मरणमें देश-काल-पात्रका कोई नियम भी नहीं रखा।'

विपत्तिसे त्राण पानेके लिये आज श्रीभगवन्नामका

अधिक-से-अधिक जप करें और प्रेमके साथ विशेष चेष्टा

स्मरण ही एकमात्र उपाय है। ऐसा कौन-सा विघ्न है, जो करके दूसरोंसे भी जप करवायें। नियमादि सदाकी भाँति ही हैं।

संख्या १० ] श्रीभगवन्नाम-जपके	लिये विनीत प्रार्थना ४५
*************************************	************************************
(१) जप प्रारम्भ करनेको तिथि कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा	भूल–चूकके लिये ८ मन्त्र बाद कर देनेपर गिनतीके लिये एक
(दिनांक ८। ११। २०२२ ई०) मंगलवार रखी गयी है। इसके	सौ मन्त्र रह जाते हैं। अतएव जिस दिन जो भाई-बहन मन्त्र-
बाद किसी भी तिथिसे जप आरम्भ कर सकते हैं, परंतु उसकी	जप आरम्भ करें, उस दिनसे चैत्र शुक्ल पूर्णिमातकके मन्त्रोंका
पूर्ति चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, वि० सं० २०८० दिन-गुरुवार	हिसाब इसी क्रमसे जोड़कर हमें अन्तमें सूचित करें। सूचना
(दिनांक ६।४।२०२३)-को कर देनी चाहिये। इसके आगे	भेजनेवाले सज्जनोंको जपकी संख्याके साथ अपना नाम-पता,
भी अधिक जप किया जाय तो और उत्तम है।	मोबाइल नम्बर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिये।
(२) सभी वर्णों, सभी जातियों और सभी आश्रमोंके	(८) प्रथम सूचना तो मन्त्र-जप प्रारम्भ करनेपर
नर-नारी, बालक-वृद्ध, युवा इस मन्त्रका जप कर सकते हैं।	भेजी जाय, जिसमें चैत्र पूर्णिमातक जितनी जप-संख्याका
(३) एक व्यक्तिको प्रतिदिन उपरिनिर्दिष्ट मन्त्रका कम-	संकल्प किया हो, उसका उल्लेख रहे और दूसरी बार जप
से-कम १०८ बार (एक माला) जप अवश्य ही करना चाहिये,	आरम्भ करनेकी तिथिसे लेकर चैत्र पूर्णिमातक हुए कुल
अधिक तो कितना भी किया जा सकता है।	जपकी संख्या उल्लिखित हो।
(४) संख्याकी गिनती किसी भी प्रकारकी मालासे	(९) प्रथम सूचना प्राप्त होनेपर जपकर्ताको सदस्यता
अथवा अंगुलियोंपर या किसी अन्य प्रकारसे भी रखी जा	दी जाती है। द्वितीय सूचना भेजते समय सदस्य-संख्या
सकती है। तुलसीजीकी माला उत्तम होगी।	अवश्य लिखनी चाहिये।
(५) यह आवश्यक नहीं है कि अमुक समय	(१०) जप करनेवाले सज्जनको सूचना भेजने-भिजवानेमें
आसनपर बैठकर ही जप किया जाय। प्रात:काल उठनेके	इस बातका संकोच नहीं करना चाहिये कि जपकी संख्या
समयसे लेकर चलते-फिरते, उठते-बैठते और काम करते	प्रकट करनेसे उसका प्रभाव नष्ट हो जायगा। स्मरण रहे,
हुए सब समय—सोनेके समयतक इस मन्त्रका जप किया	ऐसे सामूहिक अनुष्ठान परस्पर उत्साहवृद्धिमें सहायक
जा सकता है।	होकर प्रभावक बनते हैं।
(६) बीमारी या अन्य किसी कारणवश जप न हो	(११) जापक महानुभावोंको प्रतिवर्ष श्रीभगवन्नाम-
सके और क्रम टूटने लगे तो किसी दूसरे सज्जनसे जप करवा	जपकी सूचना अवश्य दे देनी चाहिये।
लेना चाहिये। पर यदि ऐसा न हो सके तो बादमें अधिक	(१२) सूचना संस्कृत, हिन्दी, मराठी, मारवाड़ी,
जप करके उस कमीको पूरा कर लेना चाहिये।	गुजराती, बँगला, अंग्रेजी, उर्दूमें भेजी जा सकती है।
(७) संख्या मन्त्रकी होनी चाहिये, नामकी नहीं;	सूचना भेजनेका पता—
उदाहरणके रूपमें—्	नामजप-कार्यालय, द्वारा—'कल्याण' सम्पादकीय विभाग,
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।	गीताप्रेस, पो०—गीताप्रेस—२७३००५ (गोरखपुर) —.¤
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥	प्रार्थी—
—सोलह नामके इस मन्त्रकी एक माला प्रतिदिन जपें	प्रेमप्रकाश लक्कड़
तो उसके प्रति मन्त्र–जपकी संख्या १०८ होती है, जिसमें	सम्पादक—'कल्याण'
<del></del>	
राम राम जपु जिय सदा सानुराग रे	। किल न बिराग, जोग, जाग, तप, त्याग रे॥
राम राम जपु जिय सदा सानुराग रे राम सुमिरत सब बिधि ही को राज रे	
	। मनि लिये फनि जियै, ब्याकुल बिहाल रे॥
राम-नाम कामतरु देत फल चारि रे	। कहत पुरान, बेद, पंडित, पुरारि रे॥
राम-नाम प्रेम-परमारथको सार रे	। राम-नाम तुलसीको जीवन-अधार रे॥
	[विनय-पत्रिका]
-	स्थायी सदस्य-संख्या एवं नाम-पता ( मोबाइल नम्बरसहित )
साफ-साफ अक्षरोमें प्रत्येक वर्षे लिखना चाहिये, जिससे	उनके ग्राम∕नगरका शुद्ध नाम दिया जा सके। —सम्पादक

कृपानुभूति ईश्वर सबसे बड़ा चिकित्सक

## मुझे उठाना नहीं।

अपने जीवनकी पाठशालामें, ईश्वरकी परम अहैतुकी कृपाका जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसको आप सबके इसके बाद मैंने कुछ समयतक रामरक्षास्तोत्रका पाठ

किया। पर दु:ख इतना तीव्र था कि बार-बार श्लोक भूलने साथ बाँटनेका प्रयास कर रहा हूँ। मुझे अपने जीवनके कई

अवसरोंपर ईश्वरकी कृपानुभूतिका सौभाग्य मिला, जिसके लगा। अचानक मुझे पूज्य भाईजीका उपदेश स्मरण हो आया

कारण मेरे विचारोंमें आमूल परिवर्तन हुआ; फलस्वरूप मेरी

मान्यताओं और मेरे सिद्धान्तोंमें भी परिवर्तन हुआ। इस

संदर्भमें मेरा एक अनुभव इस प्रकार है— मैं वर्ष १९७० में आयकर अधिकारी नागपुरके पदपर

कार्यरत था। तब मेरी आयु केवल २५ वर्षकी थी। मेरी प्रथम सन्तान एक कन्या-रत्न थी, जो उस समय मात्र छ: मासकी

थी। वह शिशुओंकी एक संघातिक व्याधिसे ग्रसित हो गयी। वहाँके सबसे बड़े डॉक्टरने विस्तृत परीक्षण करके बताया कि इस व्याधिका अभीतक कोई प्रभावशाली उपचार सम्भव

नहीं हो पाया है, लेकिन फिर भी हम पूरा प्रयास करेंगे। दिनभर अथक परिश्रमके बाद भी कोई विशेष सुधार नहीं

दिखा। रातको साढ़े आठ बजे डॉक्टरने मुझे कमरेसे बाहर ले जाकर कहा कि इस बच्चीके लिये कल सुबहका सूरज देखना बहुत कठिन प्रतीत होता है। आप अपने सम्बन्धियोंको

ट्रंक कॉल कर दीजिये। मुझे आप कहेंगे तो पूरी रात्रि मैं अस्पतालमें ही रहूँगा, पर इस बच्चीको केवल ईश्वरीय चमत्कार ही बचा सकता है। यह सुनकर मैं कुछ समयके

लिये मौन रहा। उसके बाद डॉक्टर साहबको यह कहकर विदा कर दिया कि मैं रातभर किसी चमत्कारके लिये प्रार्थना करूँगा और कल प्रात:काल आपसे फोनपर सम्पर्क

करूँगा। अपनी पत्नीको डॉक्टरके साथ हुए वार्तालाप और सगे-सम्बन्धियोंको सूचना देनेके विषयमें कुछ नहीं बता सका कि कहीं अपनी पहली सन्तानकी शोचनीय स्थितिके

बारेमें जानकर उसका धीरज न टूट जाय। मैंने बच्चीको गोदमें लिया और पत्नीसे कहा कि भगवान् चाहेगा तो कल

सुबहतक ठीक हो जायगी। तुम भी प्रार्थना करो और मैं भी मनसे कातर होकर बच्चीके स्वास्थ्य-लाभके लिये उनको

कि जब ऐसी परिस्थिति आ जाय कि व्यक्ति मृत्युतुल्य कष्टसे जुझ रहा हो तो फिर ईश्वरको किसी प्रकारसे सम्बोधित किया जा सकता है, किसी स्तोत्र या श्लोकके द्वारा नहीं।

क्योंकि मेरे पूज्य गुरुदेवके भी इष्टदेव राघवेन्द्र सरकार ही थे, मैं गुरु महाराजसे रो-रोकर विनती करने लगा। मैंने कातर होकर उच्च स्वरमें पुकारना शुरू किया 'हे गुरुदेव! मेरी

बच्चीको जीवनदान दीजिये।' कुछ देरके बाद मेरे कानोंमें प्रार्थनाके स्वर भी आने बन्द हो गये। कबतक यह आर्तनाद चला; मुझे कुछ पता नहीं, पर जब मैं बाह्य चेतनामें वापस

आया, तो मेरे कानोंमें मेरी पत्नीका स्वर सुनायी पड़ा कि आप आँखें खोलिये। आपके आँसुओंसे इस बच्चीका कपड़ा

पूरी तरह भींग गया है। आँखें खुलते ही मुझे अप्रतिम आनन्दकी प्राप्ति हुई। भक्तवत्सल, करुणावरुणालय प्रभु श्रीरामकी परम अहैतुकी कृपाके दर्शन हुए, और मेरे गुरुदेव

महाराजके प्रसादके रूपमें मेरी बच्चीको नया जीवन मिला। मेरी बच्चीकी गरदन सीधी हो चुकी थी और वह मृत्युके द्वारसे वापस आकर शान्तिसे मेरी गोदमें सो रही थी। पत्नीने बताया कि आप कह रहे थे कि 'गुरुजी अभी मेरे सामने खडे

सामने तीव्र प्रकाश आया और मेरे सामने गुरुदेव प्रकट हुए। उन्होंने कहा—'बेटे! रो मत! मैं इस बच्चीको अपनी ओरसे जीवनदान देता हूँ। यह सुनते ही मैं गद्गद हो गया। मैं तुरंत

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sha [लखक मेरे मित्र अवकाशप्राप्त अध्यक्ष केन्द्रिय प्रत्यक्ष करें बीर्ड, नई दिल्ली है—सम्पादक]

उठकर उनके चरणस्पर्श करनेके लिये बढा और मेरी आँखें खुल गयीं। यह था मेरे प्रभुकी कृपाका चमत्कार! डॉक्टर साहबने इसको स्वीकार किया और नास्तिकसे आस्तिक बन

थे। वे कहाँ चले गये!' मैंने उसको बताया कि मेरी आँखोंके

गये। मेरी बच्ची अब अपने पति और दो पुत्रियोंके साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रही है। इस अनुभवसे मेरी ईश्वरमें श्रद्धा पुकारूँगा। पर जबतक बहुत आवश्यकता न हो, तबतक और अटल हो गयी। —हरिओमकुमार श्रीवास्तव

पढो, समझो और करो संख्या १० ] पढ़ो, समझो और करो (१) बेंचपर, तो ये पंछी-चिड़िया पास आकर बैठ जाते हैं, तो दान धनसे नहीं मनसे होता है इनके लिये रोटी डाल देती हूँ, छोटे-छोटे टुकड़े करके। एक बुजुर्ग शिक्षिका भीषण गर्मियोंके दिनमें बसमें जब वे ख़ुशीसे चहचहाते हैं, तो उन भगवान्के जीवोंको सवार हुईं। पैरोंके दर्दसे वे बेहाल थीं, लेकिन बसमें सीट न देखकर मेरा पेट भर जाता है। पैसा न सही, सोचती हूँ दुआएँ तो मिल ही जाती हैं ना मुफ्तमें। फायदा ही है ना देखकर जैसे-तैसे खड़ी हो गयीं। और हमें लेकर क्या जाना है यहाँसे।' बसने कुछ ही दूरी तय की थी कि एक उम्रदराज औरतने बड़े सम्मानपूर्वक आवाज दी—'आ जाइये मैडम, शिक्षिका अवाक् रह गयी। एक अनपढ्-सी आप यहाँ बैठ जायँ कहते हुए उसने उन्हें अपनी सीटपर दिखनेवाली महिला इतना बडा पाठ जो पढा गयी थी बैठा दिया। खुद वह गरीब-सी औरत बसमें खड़ी हो उसे। अगर दुनियामें आधे लोग भी ऐसी सोचको अपना लें तो धरती स्वर्ग बन जायगी।[सोशल मीडियासे साभार] गयी। मैडमने दुआ दी—'बहुत-बहुत धन्यवाद, मेरी बुरी हालत थी सच में।' (२) कर्मफल उस गरीब महिलाके चेहरेपर एक सुकूनभरी मुसकान फैल गयी। एक शहरसे लगी हुई पहाड़ियोंपर एक पुजारीजी कुछ देर बाद शिक्षिकाके पासवाली सीट खाली हो रहते थे। एक दिन उन्हें विचार आया कि पहाड़ीसे गिरे गयी। लेकिन महिलाने एक और महिलाको, जो एक छोटे हुए पत्थरोंको धार्मिक स्थलका रूप दे दिया जाय। इसे बच्चेके साथ यात्रा कर रही थी और मुश्किलसे बच्चेको कार्यरूपमें परिणित करनेके लिये उन्होंने एक पत्थरको ले जानेमें सक्षम थी, को सीटपर बिठा दिया। अगले पडावपर तराशकर मूर्तिका रूप दे दिया और आस-पासके गाँवोंमें बच्चेके साथ महिला भी उतर गयी, थोडी देर बाद सीट मूर्तिके स्वयं प्रकट होनेका प्रचार-प्रसार करवा दिया। खाली हो गयी, लेकिन नेकदिल महिलाने बैठनेका लालच इससे ग्रामीण श्रद्धालुजन वहाँपर दर्शन करने आने लगे। इस प्रकार बातों-बातोंमें ही इसकी चर्चा शहरभरमें नहीं किया। बसमें चढ़े एक कमजोर बूढ़े आदमीको बैठा दिया, जो अभी-अभी बसमें चढ़ा था। थोड़ी देरमें सीट होने लगी कि एक धार्मिक स्थानका उद्गम हुआ है। इस फिरसे खाली हो गयी। बसमें अब गिनी-चुनी सवारियाँ प्रकार मन्दिरमें दर्शनके लिये लोगोंकी भारी भीड़ आने ही रह गयी थीं। अब उस अध्यापिकाने महिलाको अपने लगी। वे वहाँपर मन्नतें माँगने लगे। अब श्रद्धालुजनोंद्वारा पास बिठाया और पूछा—'सीट कितनी बार खाली हुई, चढ़ायी गयी धनराशिसे पुजारीजीकी तिजोरी भरने लगी लेकिन आप दूसरे लोगोंको ही बैठाती रहीं, खुद नहीं और उनका जीवन विलासिताओंसे परिपूर्ण हो गया। मन्दिरमें बैठीं, क्या बात है ?' लगनेवाली भीड़से आकर्षित होकर नेतागण भी वहाँ पहँचने महिलाने कहा—'मैडम! मैं एक मजदूर हूँ, मेरे पास लगे और क्षेत्रके विकासका सपना दिखाकर अपनी इतने पैसे नहीं हैं कि मैं कुछ दान कर सकूँ। तो मैं क्या लोकप्रियता बढानेका प्रयास करने लगे। करती हूँ कि कहीं रास्तेसे पत्थर उठाकर एक तरफ कर कुछ वर्षों बाद पुजारीजी अचानक बीमार पड़ देती हूँ। कभी किसी जरूरतमन्दको पानी पिला देती हूँ। गये। जाँचके उपरान्त पता चला कि वे कैंसर-जैसे कभी बसमें किसीके लिये सीट छोड़ देती हूँ। फिर जब घातक रोगकी अन्तिम अवस्थामें हैं। यह जानकर वे फूट-फूटकर रोने लगे और भगवान्को उलाहना देने लगे सामनेवाला मुझे दुआएँ देता है, तो मैं अपनी गरीबी भूल जाती हूँ। दिनभरकी थकान दूर हो जाती है। और-तो-कि हे प्रभु! मुझे इतना कठोर दण्ड क्यों दिया जा रहा और जब मैं दोपहरमें रोटी खानेके लिये बैठती हूँ ना बाहर है, मैंने तो जीवनभर आपकी सेवा की है?

[भाग ९६ उनका जीवन बडी पीडादायक स्थितिमें बीत रहा पानी भरा होनेसे टार्चकी रोशनीमें उसे निकालनेमें काफी दिक्कत हो रही थी। जैसे-तैसे सीढ़ी लगाकर घण्टेभरकी था। एक रात अचानक ही उन्होंने स्वप्न देखा कि प्रभ् उनसे कह रहे हैं कि तुम किस बातकी उलाहना दे रहे मशक्कतके बाद उसे बाहर निकाला गया। वह सँभल पाता तभी अन्य कुत्तोंके भौंकनेसे डरकर पुन: गड्ढेमें गिर हो ? याद करो, एक बालक भूखा-प्यासा मन्दिरकी शरणमें आया था, अपने उदरपूर्तिके लिये विनम्रतापूर्वक दो रोटी गया। थोडी देरके आरामसे दादाजी भी तरोताजा महसूस माँग रहा था। परंतु तुमने उसकी एक ना सुनी और उसे करने लगे। बच्चे अभीतक नहीं लौटे थे. सो वे भी उठकर वहीं जा पहुँचे। दो-तीन टॉर्चकी लाइटोंकी मददसे, कुछ दुत्कारकर भगा दिया। एक दिन एक वृद्ध बरसते हुए पानीमें मन्दिरमें आश्रय पानेके लिये आया था। उसे मन्दिर पुचकारकर एवं ब्रेड आदि दिखाकर उसे पुन: बाहर बन्द होनेका कारण बताते हुए तुमने बाहर कर दिया था। निकाला एवं थोड़ी दूर ले जाकर छोड़ दिया। तीनोंकी आवाज सुन मैं भी उसका हालचाल पूछने गाँवके कुछ विद्यार्थीगण अपनी शालाके निर्माणके लिये दानहेतु निवेदन करने आये थे। उन्हें शासकीय योजनाओंका पहुँची तो ये बोले—'अरे! कुत्तेको तो निकाल दिया, तू लाभ लेनेका सुझाव देकर तुमने विदा कर दिया था। मेरे बिस्तरपर देख।' मन्दिरमें प्रतिदिन जो दान आता है, उसे जनहितमें खर्चा न में वहाँ पहुँची तो सन्न रह गयी, सीलिंग फैन ट्रकर दोनों तिकयोंके बीच पड़ा था। आज जीवदयाका करके, यह जानते हुए भी कि यह जनताका धन है, तुम अपनी तिजोरीमें रख लेते हो। तुमने एक विधवा महिलाके प्रमाण साक्षात् मिल चुका था, अगर वहाँ सोये होते, तो अकेलेपनका फायदा उठाकर उसे अपनी इच्छापूर्तिका हमारा क्या हाल होता? साधन बनाकर उसका शोषण किया और बदनामीका भय ईश्वरका लाख-लाख शुक्र है कि कुत्तेको माध्यम दिखाकर उसे चुप रहनेपर मजबूर किया। बनाकर उन्होंने हमें बचा लिया था।--राधा पालीवाल तुम्हारे इतने दुष्कर्मींके बाद तुम्हें मुझे उलाहना (8) देनेका क्या अधिकार है। तुम्हारे कर्म कभी भी हरिनाम-जपकी महत्ता मानवताके अनुकूल नहीं रहे। जीवनमें हर व्यक्तिको कहौं कहाँ लिंग नाम बड़ाई। राम न सकहिं नाम गुन गाई॥ उसका कर्मफल भोगना ही पड़ता है। इन्हीं गलतियोंके गोस्वामी तुलसीदासजीका यह कथन पूर्णरूपसे सत्य कारण तुम्हें इसका दण्ड भोगना ही पड़ेगा। पुजारीजीकी है। ऐसा मैंने अपने जीवनमें पाया। मैं प्रयागराज, उत्तरप्रदेशमें आँखें अचानक ही खुल गयीं और स्वप्नमें देखे गये रहती हूँ। मेरी आयु पचहत्तर वर्ष है। लगभग सोलह दृश्य मानो यथार्थमें उनकी आँखोंके सामने घूमने लगे वर्षोंसे मुझे गठिया रोगने जकड़ रखा है। मेरे हाथोंमें और हाथोंकी उँगलियोंमें बहुत सूजन थी। पैरके घुटनोंमें भी और पश्चात्तापके कारण उनके नेत्रोंसे अविरल अश्रुधारा बहुत दर्द रहता था। जयपुरका कृत्रिम पैर बनानेवाले बहने लगी। - राजेश माहेश्वरी प्रसिद्ध डॉक्टरको दिखलाया था। वे हमारी सम्बन्धी भी (3) परोपकारका प्रत्यक्ष फल थीं। सब देखकर उन्होंने कहा था कि दवा खाइये और बात दो वर्ष पुरानी है। नीवोंकी खुदाई होनेसे उनमें व्यायाम करिये। विशेष बात जो उन्होंने बतायी थी, वह पानी भरा था। रात ९ या १० बजेके करीब मेरे पोतेने कुत्तेके यह थी कि किसी भी कार्यके लिये यह मत सोचिये कि मैं नहीं कर सकती हूँ। लगातार प्रयत्न करते रहिये। एक-दो रोनेकी आवाज सुनी तो दौड़कर मेरे पास आया और अपने दादासे बोला—'दादा-दादा! शायद कुत्तेका बच्चा गड्ढेमें बार नहीं कर पा रही हैं, तो दसवीं बार प्रयत्न करनेपर गिर गया है और वहींसे यह आवाज आ रही है।' अवश्य कर पायेंगी। दादाजी थके थे, सो कह दिया 'तू एवं तेरे पापा हाथोंमें सूजन होनेके कारण मैं कोई काम नहीं कर जाकर निकाल दो।' अँधेरी रात एवं गड्ढोंमें ३-३ फीट पा रही थी। कुछ लिखना भी हो तो नहीं लिख पा रही

संख्या १०] पढ़ो, समझं	ो और करो ४९
**************************************	********************************
थी। इस कारण जीवनसे बहुत हताश एवं दुखी थी। एक	बैठती या लेटती हूँ तो उँगलियाँ अनायास ही जप करना
व्यक्ति 'राम-नाम' की पुस्तिका दे गया, लिखनेके लिये।	प्रारम्भ कर देती हैं।—शीला अग्रवाल
मैं लिख नहीं पा रही थी। फिर हरिनामकी महिमाका	(५)
ध्यानकर और उन डॉक्टर साहबकी बात स्मरणकर धीरे-	अशुभ घटनाका संकेत
धीरे टेढ़े-मेढ़े अक्षरोंमें लिखना आरम्भ किया। पहले	बात १३ फरवरी सन् १९४८ ई०की है। स्वतन्त्रता
सप्ताह प्रतिदिन आधा पृष्ठ ही लिख पाती थी। फिर दूसरे	संग्राम सेनानी और महाकवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान
सप्ताहसे पूरा पृष्ठ लिखने लगी। लिखावटमें भी सुधार	अपने बड़े बेटेके साथ अपनी नयी कारसे शिक्षा
आया। मनमें जप भी करती जाती थी। इसके बाद मनमें	विभागकी एक मीटिंगमें शामिल होनेके लिये नागपुर
आया कि एक बड़े रजिस्टरमें हरिके विभिन्न नामोंको	जानेकी तैयारी कर रही थीं। उस दिन शामसे ही घरके
लिखूँ। प्रयत्न करती रही। वर्षमें चार बड़े त्योहार होते हैं,	आस-पास कुत्तों और सियारोंने रोना शुरू कर दिया।
जब भाइयोंको टीका-राखी भेजनी होती है। टीकाके साथ	उनके पति श्रीलक्ष्मणसिंहजी, जो स्वयं भी स्वतन्त्रता
मैं अपने चारों भाइयोंको पत्र भी अवश्य भेजती थी, चाहे	संग्राम सेनानी थे, कभी इन सब बातोंपर विश्वास नहीं
टेढ़े-मेढ़े अक्षरोंमें लिखा ही क्यों न हो।	करते थे, फिर भी न जाने क्यों वे सुभद्राजीसे बार-बार
'कल्याण'के एक अंकमें मन्त्र–जपके लिये	कहने लगे कि तुम अपना नागपुर जानेका कार्यक्रम रद्द
निम्नलिखित सोलह अक्षरोंका मन्त्र बताया गया था—	कर दो। कारण पूछनेपर उन्होंने बस, यही बताया कि
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।	जानवरोंका रोना बड़ा मनहूस लग रहा है और इससे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥	उनकी तबीयत घबरा रही है। यह बात सुनकर सुभद्राजी
अन्त:करणसे प्रेरणा हुई कि काम तो कुछ कर	पहले तो खूब हँसीं, फिर बोलीं कि आप कबसे ऐसे
नहीं पा रही हूँ, मन्त्र-जपका ही संकल्प ले लूँ। समय	अन्धविश्वासोंमें विश्वास करने लगे ? ऐसा कहकर दूसरे
भी बीतेगा। सो पाँच माला प्रतिदिन जपनेका संकल्प	ही दिन वसन्तपंचमीको लौटनेका वायदा करके १४
लिया। 'कल्याण'में लिखा था कि लेटकर, बैठकर,	फरवरीको वे चली गयीं। दिनभर नागपुरमें काम किया
मालाके द्वारा या उँगलियोंके पोरोंसे ही यह मन्त्र जपा	और दूसरे दिन १५ फरवरीको अपने घर जबलपुरके
जा सकता है। एक-दो माला तुलसीकी मालासे जप	लिये रवाना हो गयीं। नागपुरसे अस्सी किलोमीटर दूर
लेती थी। पाँच मालाकी संख्याके बराबर जप करना ही	जाकर उनकी कार एक वृक्षसे टकरा गयी। कारमें
था। बाकी उँगलियोंके पोरोंसे ही जपती थी।	किसीको खरोंचतक नहीं आयी। सुभद्रा कुमारी चौहानको
कार्तिक पूर्णिमासे चैत्रमासकी पूर्णिमाके आते-	भी कहीं चोट नहीं लगी, पर उनकी मृत्यु हृदयगति
आते हाथोंमें और हाथोंकी उँगलियोंमें आश्चर्यजनक	रुकनेसे हो गयी।
लाभ हुआ। सूजन कम होती गयी। फिर धीरे-धीरे	इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि अन्धविश्वास
घरका काम भी करने लगी। कई पुस्तकें भी लिखीं। मैंने	कहकर किसी तथ्यको हँसीमें उड़ा देना एक बात है और
उन्हीं हाथोंसे कई स्वेटर भी बुने। कहाँ एक-दो सलाई	उसमें सन्निहित सत्यको जानना तथा उसका उपयोग
बुनना भी दूभर था।	करना दूसरी बात। पशु-पक्षियोंको भविष्यमें घटनेवाली
स्वटेर बुनते समय भी मैं भगवान्के नामका जप	घटनाओंका सूक्ष्म ज्ञान होता है, शकुन-शास्त्र इसी प्रकारकी
मन-ही-मन करती रहती थी। यह सब ईश्वरके नामका	बातोंपर आधारित है, अत: इन्हें एकदमसे खारिज कर
प्रताप है और उन्हींकी अपार कृपा है, ऐसा मैं अन्तर्मनसे	देना उचित नहीं है; क्योंकि इनके पीछे दीर्घकालीन
मानती हूँ। जप जीवनपर्यन्त करना चाहती हूँ। अभी भी	अनुभवरूपी सूक्ष्म विज्ञान है।—उमेश प्रसाद सिंह
<del></del>	

युधिष्ठिरके पास जाकर कहा, 'भाईजी! मैंने आपके

एकान्तगृहमें जाकर प्रतिज्ञा तोड़ी है। इसलिये मुझे बारह

वर्षतक वनवास करनेकी आज्ञा दीजिये; क्योंकि हमलोगोंमें

ऐसा नियम बन चुका है।' एकाएक अर्जुनके मुँहसे ऐसी

बात सुनकर युधिष्ठिर शोकमें पड़ गये। उन्होंने व्याकुल

होकर अर्जुनसे कहा, 'भैया! यदि तुम मेरी बात मानते

# मनन करने योग्य

### धर्मपालनमें बहानेबाजी नहीं करनी चाहिये एक समयकी बात है, लुटेरोंने किसी ब्राह्मणकी गौएँ बड़ी प्रशंसा की, कुरुवंशियोंने अभिनन्दन किया। अर्जुनने

बलपूर्वक लिये जा रहे हैं। तुम दौड़कर इन्हें बचाओ। जो राजा प्रजासे कर लेकर भी उसकी रक्षाका प्रबन्ध नहीं करता, वह निस्सन्देह पापी है। मैं ब्राह्मण हूँ। गौओंका छिन जाना मेरे धर्मका नाश है। तुम्हें उचित है कि इस समय तुम पूरी शक्तिसे मेरी गौओंकी रक्षा करो।' अर्जुनने ब्राह्मणका करुण-क्रन्दन सुनकर उन्हें ढाढ़स बँधाया, परंतु उनके सामने अडचन यह थी कि जिस घरमें राजा युधिष्ठिर द्रौपदीके साथ बैठे हुए थे, उसी घरमें उनके अस्त्र-शस्त्र थे। नियमानुसार अर्जुन उस

घरमें नहीं जा सकते थे। एक ओर कौटुम्बिक नियम, दूसरी ओर ब्राह्मणकी करुण पुकार। अर्जुन बड़े असमंजसमें पड़ गये। उन्होंने सोचा कि 'ब्राह्मणका गोधन लौटाकर आँसू पोंछना मेरा निश्चित कर्तव्य है। यदि मैं इसकी उपेक्षा कर दूँगा तो राजाको अधर्म होगा, हमलोगोंकी

निन्दा होगी और पाप भी लगेगा। दूसरी ओर प्रतिज्ञा-

भंग करनेसे भी पाप लगेगा, वनमें जाना पडेगा। अच्छी

लूट लीं और उन्हें लेकर भागने लगे। ब्राह्मणको बड़ा

क्रोध आया और वह इन्द्रप्रस्थमें आकर पाण्डवोंके सामने

करण-क्रन्दन करने लगा। ब्राह्मणने कहा कि 'पाण्डवो!

तुम्हारे राज्यमें दुष्टात्मा और क्षुद्र लुटेरे मेरी गौएँ छीनकर

तो रहे। नियम-भंगके कारण कितना भी कठिन प्रायश्चित क्यों न करना पड़े, चाहे प्राण ही क्यों न चले जायँ, इस दीन ब्राह्मणके गोधनकी रक्षा करना मेरा धर्म है और वह मेरे जीवनकी रक्षासे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।'

गये। राजासे अनुमित लेकर धनुष उठाया और आकर ब्राह्मणसे बोले, 'ब्राह्मणदेवता! जल्दी चलो। अभी वे दुष्ट अधिक दूर नहीं गये हैं। उनसे गोधनका उद्धार कर

बात है। मैं ब्राह्मणकी रक्षा करूँगा। कोई रुकावट हो

अर्जुन राजा युधिष्ठिरके घरमें निस्संकोच चले

भाईका जाना अपराध नहीं है। छोटा भाई स्त्रीके साथ

बैठा हो, तो वहाँ बड़े भाईको नहीं जाना चाहिये। तुम

हो तो मैं जो कहता हूँ, सुनो। यदि तुमने नियमभंग किया

भी है तो उसे मैं क्षमा करता हूँ। मेरे अन्त:करणमें उससे

तनिक भी दु:ख नहीं हुआ, तुमने तो बहुत अच्छा काम

किया। बड़ा भाई स्त्रीके साथ बैठा हो, तो वहाँ छोटे

वनवासका विचार छोड़ दो। न तो तुम्हारे धर्मका लोप

हुआ है और न मेरा अपमान।' अर्जुनने कहा, 'आप ही

कहते हैं कि धर्म-पालनमें बहानेबाजी नहीं करनी चाहिये। में शस्त्र छुकर सच-सच कहता हूँ कि अपनी सत्य

प्रतिज्ञाको कभी नहीं तोड़ँगा।' अर्जुनने वनवासकी दीक्षा ली और बारह वर्षतक वनवास करनेके लिये चल पड़े।

लायें।' थोड़ी ही देरमें अर्जुनने बाणोंकी बौछारसे लुटेरोंको मामान्त्रवर्गोर्ड्रॅं नामान्त्रकारें के रहें के तरें है। नामान्त्रकारें वेडरे र्जुं कुरी harma | MADE WITH LOVE BY Avin स्वामा स्वाप

### नवीन प्रकाशन—अब उपलब्ध

'चित्रमय श्रीदुर्गासप्तशती' (कोड 2304) [ग्रंथाकार, हिन्दी अनुवाद-सहित, चार रंगोंमें आर्ट पेपरपर] जिज्ञासु पाठकोंको विशेष माँगपर चित्रमय श्रीमद्भगवद्गीता (कोड 2267) एवं चित्रमय श्रीरामचिरतमानस (कोड 2295) की तरह अब 100 से अधिक आकर्षक रंगीन चित्रोंके साथ प्रकाशित की गयी है। मूल्य ₹ 450



देवताओंद्वारा देवीका स्तवन

तुम सृष्टि, पालन और संहारकी शक्तिभूता, सनातनी देवी, गुणोंका आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणि! तुम्हें नमस्कार है॥११॥

### शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥१२॥

शरणमें आये हुए दीनों एवं पीड़ितोंकी रक्षामें संलग्न रहनेवाली तथा सबकी पीड़ा दूर करनेवाली नारायणी देवि! तुम्हें नमस्कार है॥ १२॥

## हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि। कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ १३॥

नारायणि! तुम ब्रह्माणीका रूप धारण करके हंसोंसे जुते हुए विमानपर बैठती तथा कुशमिश्रित जल छिड़कती रहती हो। तुम्हें नमस्कार है॥ १३॥

त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि। माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते॥ १४॥



15

8

5

5

200

120

50

555

547

1927

1862

महाशक्ति भगवती

600

350

250

45

25

170

1897 |श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-

1133 सं० देवीभागवत

2003 शिक्तिपीठदर्शन

791 सुर्याङ्क

शक्ति-अङ्क

211 आदित्यहृदयस्तोत्र

सटीक, दो खण्डोंमें सेट

श्रीदेवीस्तोत्ररत्नाकर

भगवान् सूर्य

### पंजीकृत संख्या—NP/GR-13/2020-2022 LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT LICENCE No. WPP/GR-03/2020-2022 गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित—देवोपासनाके महत्त्वपूर्ण प्रकाशन मू०₹ कोड कोड पुस्तक-नाम कोड पुस्तक-नाम मू०₹ पुस्तक-नाम मू०₹ भगवान् श्रीगणपति श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् 1801 भगवान् श्रीराम 657 श्रीगणेश-अङ्क (शांकरभाष्य) 2295 चित्रमय श्रीरामचरितमानस-200 श्रीगणेशस्तोत्ररत्नाकर 45 (हिन्दी-अनुवादसहित) सटीक ग्रन्थाकार 2024 1600 12 योगवासिष्ठ 574 220 भगवान् शिव गजेन्द्रमोक्ष 5 225 103 मानस-रहस्य-सजिल्द 70 2223 श्रीशिवमहापुराण-श्रीनारायणकवच 5 229 सचित्र रामरक्षास्तोत्रम् 2151 2224 सटीक, दो खण्डोंमें सेट 740 1367 श्रीसत्यनारायण-व्रतकथा 20 बेड़िया, पुस्तकाकार 15 1468 सं० शिवपुराण भगवान् श्रीकृष्ण श्रीहनुमान्जी (विशिष्ट सं०) 350 1951) भागवतमहापुराण-सटीक 789 सं० शिवपुराण 300 42 हिनुमान-अङ्क-1952 बेडिआ, दो खण्डोंमें सेट 1985 लिंगमहापुराण-सटीक 1200 परिशिष्टसहित 300 230 श्रीकृष्णलीला-चिन्तन 2020 शिवमहापुराणमूलमात्रम् 571 200 350 185 भक्तराज हनुमान् 10 गर्ग-संहिता सचित्र हनुमानचालीसा 1417 शिवस्तोत्ररत्नाकर 517 180 50 2121 श्रीराधा-माधव-चिन्तन 1627 रुद्राष्ट्राध्यायी (सानुवाद) बेड़िया, पुस्तकाकार 45 150 15

पद-रत्नाकर

श्रीकृष्णबालमाधुरी

श्रीकृष्णमाध्री

विरह-पदावली

अनुराग-पदावली

जीवन-संजीवनी

(हिन्दी-अनुवाद)

1748 संतानगोपालस्तोत्र

श्रीगोपालसहस्त्रनामस्तोत्र

नवीन प्रकाशन—अब उपलब्ध

150

40

40

40

40

60

20

10

1898

1774

अयोध्या-माहात्म्य

1954 शिव-स्मरण

563 शिवमहिम्न:स्तोत्र

230 अमोघ शिवकवच

1364 श्रीविष्णुपुराण

228 शिवचालीसा (लघु आकारमें भी)

48 श्रीविष्णुपुराण (सटीक)

(केवल हिन्दी)

819 श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्

(शांकरभाष्य)

भगवान् विष्णु

अयोध्या-माहात्म्य (कोड 2302)—मुक्तिदायिनी पुरियोंमें श्रीअयोध्याका विशेष स्थान है। 'रुद्रयामलतन्त्र' एवं 'श्रीस्कन्दपुराण'में अयोध्याजीकी बड़ी महिमा बतायी गयी है। इन्हीं दोनों ग्रन्थोंसे सामग्री लेकर इसे सानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें श्रीअयोध्याका दिव्यस्वरूप, सरयूजीकी उत्पत्ति, अयोध्यास्तोत्र, द्वादश पुण्यवन, चौदह गुप्त-स्थल, अरण्य, मन्दिरों, तीर्थों, कुण्डों, पर्वतों, घाटोंका माहात्म्य तथा अयोध्याकी होनेवाली परिक्रमाओं एवं विभिन्न उत्सवोंका बहुत ही सरल, सरस एवं मनोरम चित्रण किया गया है। आशा है जिज्ञासु एवं प्रेमीस्वजन विशेष लाभान्वित होंगे। मुल्य ₹100

booksales@gitapress.org थोक पुस्तकोंसे सम्बन्धित सन्देश भेजें। gitapress.org सूची-पत्र एवं पुस्तकोंका विवरण पढ़ें। करियर/डाकसे मँगवानेके लिये गीताप्रेस, गोरखप्र—273005 book.gitapress.org/gitapressbookshop.in

If not delivered; please return to Gita Press, Gorakhpur—273005 (U.P.)